क्रांतिकारी तकनीशियन

स्टीव जॉब्स

संसार को आनंद-सागर में डुबोने,
रोचक- मनोरंजनक दुनिया की सैर कराने
और संचार-तंत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने
वाले महान तकनीशियन 'स्टीव जॉब्स'
का प्रेरक जीवन वृत्त!

स्मृति शेष

पतझड□ में भी फूल खिला गया

अनायास एक दुर्घटना हुई,
वह इस दुनिया में आ गया।
उसे होना तो था कुछ और,
मगर जॉब्स का तमगा पा गया।
उसने पलकें झपकाईं, होंठ हिलाए,
बचपन से जवानी में आ गया।
कुछ पाठ पढ□ा, कुछ प्रयोग किए,
कुछ नया-नया-सा जेहन में आ गया।
वह खूब खेला और खूब खिला;
पतझड□ में भी फल खिला गया।
उसने आंखें घुमाईं, उंगलियां चलाईं,
दुनिया को इशारों-इशारों में नचा गया।
वह आया तो किसी को पता न चला,
पर जाते-जाते दुनिया को रुला गया।

–एम.ए. समीर

दो शब्द

तकनीक की दुनिया के महारथी स्टीव जॉब्स वास्तव में आज लोगों के आइडल ही नहीं, बल्कि आइकॉन भी बन गए हैं। दुनिया को अपने आईप्रोडक्ट का दीवाना बना देने वाले स्टीव जॉब्स ने विपरीत हालात का सामना करते हुए वह कर दिखाया, जिसका अधिकांश लोग केवल स्वप्न ही देखते रह जाते हैं। केवल 20 वर्ष की अवस्था में जॉब्स ने जब अपने पिता के गैराज से एप्पल की शुरुआत की थी तो शायद किसी ने भी यह नहीं सोचा होगा कि यह कंपनी एक दिन दुनिया की शीर्ष कंपनियों में शुमार होगी।

स्टीव जॉब्स को बचपन से ही इलेक्ट्रॉनिक्स की चीजों एवं उनकी डिजाइनिंग में गहरी रुचि थी। इसी रुचि के चलते उन्होंने दुनिया को आईपैड, आईपॉड और आईफोन जैसे कई नवीनतम आकर्षक उपहार (उत्पाद) दिए। आज दुनिया-भर में इन उत्पादों की मांग सर्वाधिक है, जिसका श्रेय स्टीव जॉब्स को ही जाता है।

स्टीव जॉब्स का मानना था कि व्यक्ति को समय की मांग के अनुसार बदलना चाहिए, अन्यथा वह कभी भी जीवन में आगे नहीं बढ□ सकता। उन्होंने इसी सिद्धांत का अनुसरण अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक किया। आज भले ही स्टीव जॉब्स हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन दुनिया को दी हुई उनकी नवीनतम् तकनीक, उनके विचार और आकर्षक उत्पाद हमेशा उनकी यादों को जिंदा बनाए रखेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक महान कर्मयोगी स्टीव जॉब्स के जीवन की विभिन्न जानकारियों एवं रोचक पहलुओं से अवगत कराएगी। इस पुस्तक को सुंदर, सरस और संतुलित आकार देने में मुझे प्रमुख दैनिक समाचार-पत्रों जैसे दैनिक जागरण, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, नई दुनिया और दैनिक भास्कर आदि से बहुत सहयोग व सहायता मिली। इन सभी समाचार-पत्रों, इनके पत्रकारों, स्तंभ लेखकों और अन्य संचार तंत्र जिनसे मिली सामग्री का मैंने इस पुस्तक में न्यूनाधिक उपयोग किया है, मैं उनका बहुत आभारी हूं।

मुझे आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक को पढ□कर पाठक स्टीव जॉब्स की कर्मशीलता से प्रेरणा लेंगे और सफलता की शीर्षतम् ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकेंगे।

– एम. आई. राजस्वी

अनुक्रमणिका

स्टीव जॉब्स: महानतम आविष्कारक

1

जन्म के साथ संघर्ष की शुरुआत

''स्टीवन पी. जॉब्स ने करोड□ों जिंदगियों को प्रेरित किया, बदला और एक नया कल्चर बनाया। वे खास किस्म की शख्सियत थे–पूरी तरह से कल्पनाशील रचनाकार। इतना कुछ करने के बाद भी लगता था कि स्टीव का चमत्कार अभी शुरू ही हो रहा है...।''

– रॉबर्ट ईगर, सीईओ, वाल्ट डिज्नी

जब स्टीव जॉब्स ने मात्र अंश रूप में अपनी माता के गर्भ में पदार्पण किया तो उसी समय उनके जीवन-संघर्ष की शुरुआत हो गई थी। माता की गर्भावस्था में ही उनके जन्म लेने की संभावनाओं पर प्रश्नचिह्न लगने लगे थे। प्रकृति उन पर मेहरबान हुई और उनका गर्भकालीन संकट किसी प्रकार टल गया। प्रकृति ने उनके जीवन की असंभावनाओं को संभव बनाया और जॉब्स ने इस जहां में जन्म लेकर यहां की असंभावनाओं में संभावनाओं के सरस, सुकोमल और सुगंधित पुष्प खिलाए।

प्रबल प्रतिभा के धनी स्टीव जॉब्स को जन्म देने वाली माता का नाम युआन शीबल था। वे जर्मन मूल के ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले एक परिवार से संबंधित थीं। युआन के पिता का नाम आर्थर शीबल था। वे ग्रीक के बाहरी इलाकों में अपनी पत्नी के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके पास पर्याप्त कृषि योग्य भूमि और अचल संपत्ति थी। सुखी एवं समृद्ध आर्थर शीबल स्वभाव से कुछ कठोर थे। कैथोलिक संप्रदाय में उनका दृढ□ विश्वास था और अपनी पुत्री युआन से भी वे यही अपेक्षा करते थे कि वह भी कैथोलिक पूजा-विधान एवं मान्यताओं में आस्था रखे।

युआन की प्रकृति अपने पिता आर्थर से एकदम भिन्न थी। कैथोलिक पद्धति में तो उनकी पूरी आस्था थी, लेकिन अन्य धर्म-संप्रदाय के प्रति भी उनके मन में किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं था। पिता आर्थर के द्वारा कठोरतापूर्वक कैथोलिक पद्धति पर जोर डालने के कारण युआन के मन में इस पद्धति के प्रति विरोधाभास उत्पन्न हो गया था। आगे चलकर यही विरोधाभास उस समय तीव्र रूप में सामने आया, जब युआन स्कूली शिक्षा पूरी करके कॉलेज में पढ□ने के लिए पहुंचीं। जब युआन विस्कोंसिन विश्वविद्यालय की छात्रा थीं, उसी समय उनका एक सीरियाई युवक अब्दुल फतेह जांडाली से संपर्क हुआ।

युआन शीबल और अब्दुल फतेह जांडाली का यह औपचारिक संपर्क धीरे-धीरे अनौपचारिक रूप में बदलने लगा। दोनों एक-दूसरे के विचार और व्यवहार में समानता के कारण अच्छे मित्र

बन गए। यही प्रगाढ□ मित्रता आगे चलकर दोनों के बीच प्रेम संबंध के रूप में प्रस्फुटित हुई।

अब्दुल फतेह जांडाली एक मुस्लिम परिवार में जन्मे थे, किंतु युआन शीबल की तरह ही अन्य धर्मों के प्रति भी उनके मन में कोई कटुता की भावना न थी। सर्वधर्म-समभाव में उनका पूरा विश्वास था। यही कारण था कि उनके समय के साथ और प्रगाढ□ होते चले गए।

संपन्नता की दृष्टि से जांडाली परिवार, धनी और समृद्ध था। अब्दुल फतेह जांडाली के पिता ऑयल रिफायनरी के अलावा भी कई अन्य व्यवसायों से खूब धन अर्जित करते थे। उनका व्यवसाय होम्स और दमिश्क जैसे शहरों तक फल-फूल रहा था। गेहूं की खेती करने में भी जांडाली परिवार ने खूब धन और नाम कमाया था। इस परिवार में गेहूं इतनी अधिक मात्रा में होता था कि वे गेहूं मूल्य निर्धारण को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। इसी समृद्ध परिवार के नौ बच्चों में से अब्दुल फतेह जांडाली सबसे छोटे और प्रिय पुत्र थे।

उनकी माता परंपरागत मुस्लिम परिपाटी में अपनी पूरी श्रद्धा रखती थीं। वे नेक, सच्चरित्र और अपने परिवार एवं बच्चों से भरपूर स्नेह रखने वाली घरेलू महिला थीं। हालांकि जांडाली परिवार अपने धर्म के प्रति समर्पित था और अपनी सुख-समृद्धि का कारण अल्लाह के प्रति गहरी आस्था का होना और इसके फलस्वरूप अल्लाह की ओर से उनके परिवार पर बरकतों का नाजि□ल होना मानता था, किंतु फिर भी आधुनिक शिक्षा के प्रति इस परिवार का गहरा लगाव था। ये लोग अल्लाह की कृपा को आकस्मिक दुर्घटनाओं से मुक्ति का जरिया और आधुनिक शिक्षा को सफलता की सीढ□ी मानते थे। इस प्रकार इस परिवार के लोगों में परंपरागत और आधुनिक विचारों का अनोखा सम्मिश्रण था।

शिक्षा के प्रति जांडाली परिवार के रुझान के कारण ही अब्दुल फतेह को जेसुइट बोर्डिंग स्कूल में दाखिला दिला दिया गया। पढ□ाई में अब्दुल फतेह की अच्छी रुचि थी। वे अपनी क्लास के होनहार और प्रतिभाशाली छात्रों में गिने जाते थे। उन्होंने बेरुत की अमेरिकन यूनिवर्सिटी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद अब्दुल फतेह ने राजनीति शास्त्र से पी-एच.डी. करने के लिए विस्कोंसिन विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यहीं पर उनकी यूआन शीबल से भेंट हुई।

1954 का ग्रीष्म अवकाश अब्दुल फतेह और युआन शीबल ने कहीं अन्यत्र एक साथ व्यतीत करने का निश्चय किया। वे दोनों विस्कोंसिन से होम्स पहुंचे। होम्स में जांडाली परिवार का अच्छा व्यवसाय था। अत: यहां पर उन्हें रहने और खाने-पीने की कोई समस्या न तो आनी थी और न ही आई। दोनों युवाओं ने ग्रीष्म अवकाश के 2 महीने का समय खूब मौज-मस्ती और आनंद के साथ व्यतीत किया। शहर के पर्यटन स्थलों के बीच घूमते हुए उनका प्रेम भी खूब परवान चढ□ा। दुनिया-भर के रस्म-ओ-रिवाज भूलकर वे एक-दूसरे में खो गए।

युआन शीबल और अब्दुल फतेह पर प्यार का खुमार दिन-प्रतिदिन इतना गहरा होता गया कि एक दिन वे सारी हदें पार कर गए। इतना होने पर भी इस प्रेमी युगल को ऐसा कुछ होने का जरा भी अफसोस न हुआ। इन दोनों की एक ही स्पष्ट सोच थी कि जो हो गया, उससे कोई फर्क नहीं पड□ता। आखिरकार दोनों को वैवाहिक बंधन में तो बंधना ही है। इसी सोच के कारण दोनों

आनंदपूर्वक अपना अवकाश पूरा करके विस्कोंसिन लौट आए।

विस्कोंसिन लौटेने के कुछ समय बाद ही युआन शीबल को अपनी शारीरिक अवस्था में एकाएक कई परिवर्तन एक साथ दिखाई पड़ने लगे। इन परिवर्तनों को देखकर पहले तो युआन चौंकी, फिर उनके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए। शीघ्र ही वे एक लेडी डॉक्टर से मिलीं और उनकी आशंका सच साबित हुई। वास्तव में वे गर्भवती थीं। शीघ्र ही यह बात उन्होंने अब्दुल फतेह जांडाली को बताई। अब्दुल फतेह ने युआन को सांत्वना देते हुए इसको लेकर चिंता न करने को कहा और शीघ्र ही उनके साथ विवाह करके इस समस्या का समाधान निकालने का आश्वासन दिया। अब्दुल फतेह के इस आश्वासन से युआन के मन पर पड़ी चिंता का एक बहुत बड़ा बोझ दूर हो गया था।

अब्दुल फतेह और युआन ने भली-भांति सोच-विचारकर अपने-अपने परिजनों के सामने अपने विवाह की घोषणा कर दी। अब्दुल फतेह के परिजन तो इस अंतर्जातीय विवाह के विरुद्ध न थे, किंतु युआन के पिता आर्थर शीबल अवश्य असहमत थे। आर्थर शीबल ने कैथोलिक समुदाय से बाहर के किसी भी युवक से युआन के विवाह करने की योजना का जमकर विरोध किया। उन्होंने युआन को यहां तक चेतावनी दे डाली कि यदि उसने गैर-कैथोलिक युवक से विवाह किया तो वे उसे अपनी तमाम जायदाद से वंचित कर देंगे।

पिता के भारी दबाव और मानसिक क्लेश ने युआन को अब्दुल फतेह से विवाह करने का निर्णय बदलने के लिए विवश कर दिया। इसके साथ ही युआन के सामने समस्या समाप्त होने के बजाय और प्रचंड हो गई। उनके गर्भ का स्वरूप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। कैथोलिक समुदाय में गर्भपात कराना भी सरल कार्य नहीं था। इन हालात में फंसकर युआन बुरी तरह से छटपटा उठी थीं।

गहन विचार-मंथन के बाद अंतत: युआन ने गर्भपात न कराने का निश्चय किया। उन्होंने गर्भस्थ शिशु को जन्म देने का निश्चय कर लिया था। जनवरी, 1955 में वे विस्कोंसिन से सैन फ्रांसिस्को आ गईं। वहां वे एक सहृदयी और उदारवादी विचारों वाले डॉक्टर से मिलीं। डॉक्टर कुंआरी माताओं के बच्चों को जन्म दिलाने और चुपचाप उन्हें गोद देने में सहायता करने के लिए जाने जाते थे। डॉक्टर ने युआन को समय आने पर भरपूर सहायता करने का आश्वासन दिया। सैन फ्रांसिस्को के डॉक्टर से मिलकर युआन की एक बहुत बड़ी समस्या हल हो गई थी। अब उन्होंने राहत की सांस ली और एक-एक दिन गिनते हुए गर्भकाल पूरा होने की प्रतीक्षा करने लगीं।

विस्कोंसिन में पॉल जॉब्स नामका एक सुंदर और आकर्षक युवक रहता था। उनका डेयरी फार्म का पारिवारिक व्यवसाय था। इस व्यवसाय से उन्हें अच्छी आमदनी हो जाती थी और पारिवारिक खर्च चलाने में कोई परेशानी न होती थी, किंतु फिर भी परिवार में शांति का वातावरण नहीं था। दरअसल पॉल जॉब्स के पिता बहुत अधिक मात्रा में शराब पीते थे और नशे की हालत में परिजनों को खूब बुरा-भला कहते थे। अपने पिता के ठीक विपरीत पॉल जॉब्स शांत स्वभाव के सौम्य युवक थे। हालांकि अपने पिता के दुर्व्यवहार के खिलाफ उन्होंने कभी एक शब्द

भी न बोला, लेकिन दुर्व्यवहार को सहने की भी एक सीमा होती है और पॉल जॉब्स के पिता वह सीमा कभी की पार कर चुके थे। जब अपने पिता का व्यवहार सहन करना पॉल जॉब्स के नियंत्रण से बाहर हो गया तो उन्होंने घर छोड़ने का फैसला कर लिया।

पॉल जॉब्स की आयु उस समय लगभग 12 वर्ष थी और वे हाईस्कूल की परीक्षा पास कर चुके थे। उन्होंने अपने लिए एक यथोचित नौकरी की तलाश शुरू कर दी। कुछ प्रयास के बाद शीघ्र ही उन्हें तटरक्षक बल में मशीनिस्ट की नौकरी मिल गई। उन्हें यू.एस.एस. जनरल एम.सी. मेग्स में नियुक्त किया गया। उनका कार्य इटली के सैनिकों के आवागमन वाले जहाज में मशीनिस्ट और फायरमैन का था।

जब द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया तो पॉल जॉब्स के जहाज को युद्ध सेना से अलग कर दिया गया और उन्हें उनके साथी कर्मचारियों के साथ सैन फ्रांसिस्को भेज दिया गया।

पॉल जॉब्स का सैन फ्रांसिस्को में अपने साथियों के साथ अच्छा समय व्यतीत हो रहा था। एक दिन यूं ही मौज-मस्ती के दौरान पॉल जॉब्स अपने साथियों से शर्त लगा बैठे कि वे दो सप्ताह में अपने लिए एक सुंदर-सी पत्नी खोज लेंगे। पॉल बातों-बातों में लगी इस शर्त पर गंभीरता से विचार करने लगे। यद्यपि उनकी कद-काठी और रूप-रंग इतने आकर्षक थे कि कोई भी युवती सहज भाव से उनकी ओर आकर्षित हो सकती थी, तथापि वे अब शर्त पूरी करने के लिए अपनी ओर से प्रयासरत हो गए थे।

संयोगवश इसी समय पॉल जॉब्स की भेंट क्लारा हैगोपियन नामक एक सुंदर युवती से हो गई। क्लारा पहली भेंट में ही पॉल के आकर्षण में बंध गईं। शीघ्र ही उन्होंने पॉल के साथ डेट पर जाने का प्रोग्राम बनाया। पहली डेट में ही क्लारा पॉल को और पॉल क्लारा को दिल दे बैठे। दोनों की डेट का यह प्रोग्राम विवाह की मंजिल तक जा पहुंचा। इस तरह 2 सप्ताह से पहले ही अपने लिए एक सुंदर पत्नी खोजकर पॉल ने दोस्तों के बीच न केवल अपना क्रेज बनाया, बल्कि शर्त भी जीत ली। इसके कुछ दिन बाद मार्च, 1946 में पॉल जॉब्स ने क्लारा हैगोपियन के साथ एक सादे समारोह में विवाह कर लिया।

सैन फ्रांसिस्को में पॉल जॉब्स और क्लारा हैगोपियन का दांपत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा था। अन्य लोगों की तरह ही क्लारा और पॉल भी विश्वयुद्ध की चीख-पुकार और मारा-मारी से तंग आ चुके थे। कुछ सोच-विचार के बाद दोनों ने सैन फ्रांसिस्को छोड़ने का मन बना लिया। अब उन्होंने पॉल के गृहनगर विस्कोंसिन में निवास करने का निश्चय किया।

पॉल दंपत्ति सैन फ्रांसिस्को से विस्कोंसिन चले गए, लेकिन कुछ वर्ष बाद उन्हें वहां से भी ऊब होने लगी तो वे इंडियाना चले गए। इंडियाना में पॉल जॉब्स को इंटरनेशनल हरवेस्टर नामक संस्थान में नौकरी मिल गई। इस संस्थान में वे मशीनिस्ट के पद पर कार्यरत थे।

पॉल जॉब्स के मन में कुछ नया कर दिखाने का जुनून सवार रहने लगा था। उनकी इच्छा थी कि वे कुछ ऐसा करें, जिसमें नयापन भी हो और कुछ आमदनी बढ़ाने का जरिया भी। नौकरी करने के साथ-साथ उन्होंने पुरानी कारों को खरीदने और उनकी मरम्मत करके उन्हें नया रूप

देकर बेचने का काम शुरू कर दिया। इस कार्य में उन्हें अतिरिक्त आमदनी होने लगी और खूब मजा आने लगा। पुरानी कारों को खरीदने और उनकी मरम्मत करके बेचने का यह काम पॉल जॉब्स को इतना रास आया कि कुछ समय के बाद उन्होंने अपनी नौकरी छोड□ दी। अब वे पूरे तौर पर पुरानी कारों के क्रय-विक्रय के कार्य में लग गए।

इंडियाना में रहते हुए पॉल जॉब्स अपने कार्य-व्यवसाय से सुखी और प्रसन्न जीवन बिता रहे थे, लेकिन क्लारा का वहां मन नहीं लग रहा था। दरअसल क्लारा को सैन फ्रांसिस्को से गहरा लगाव था। बार-बार सैन फ्रांसिस्को की अपने बचपन और जवानी से जुड□ी यादें क्लारा हैगोपियन की आंखों के सामने चलचित्र की तरह तैरने लगती थीं। क्लारा एक भावुक और उदार हृदय की महिलां थीं। उनकी इच्छा थी कि वे फिर से सैन फ्रांसिस्को में ही जाकर रहें। यदा-कदा क्लारा अपने मन की बातें इशारों-इशारों में पति पॉल के सामने प्रकट भी कर देती थीं।

पॉल जॉब्स अपनी पत्नी की भावनाओं का हमेशा सम्मान करते थे। जब उन्हें यह लगने लगा कि क्लारा का इंडियाना में मन नहीं लग रहा है और उनकी इच्छा सैन फ्रांसिस्को में लौट चलने की है तो एक दिन पॉल ने इंडियाना से पैकअप करके सैन फ्रांसिस्को में ही जाकर रहने का निर्णय किया।

1952 में पॉल जॉब्स अपनी पत्नी क्लारा के साथ सैन फ्रांसिस्कों में आकर रहने लगे। यहां पर उन्होंने सनसेट जनपद में एक अपार्टमेंट ले लिया। यह अर्पाटमेंट समुद्र के किनारे बड□ ही मनोरम स्थल पर था। सनसेट में ही पॉल जॉब्स को एक वित्त कंपनी में रैपोमैन की नौकरी मिल गई। यह कंपनी लोन देती थी, लेकिन जो लोग कंपनी के लोन की किस्त जमा नहीं कराते थे, उनकी कारों के लॉक तोड□कर कंपनी में लाया जाता था। पॉल जॉब्स यही कार्य करते थे। कंपनी लॉक तोड□कर लाई गई इन कारों की मरम्मत करके पुन: अच्छे दामों में बेच देती थी।

क्लारा ने भी समय बिताने के लिए एक बुकशॉप में नौकरी कर ली। पति-पत्नी का समय सुखपूर्वक बीत रहा था। ऊपरी तौर पर दिखाई देता था कि सब कुछ ठीक है और उनके चारों ओर खुशियां-ही-खुशियां बिखरी पड□ी हैं, लेकिन ऐसा नहीं था। पॉल और क्लारा के जीवन में एक रिक्तता थी, जिसे भर पाना सरल न था। उनके विवाह को लगभग 9 वर्ष बीत चुके थे, लेकिन उनके घर-आंगन में अभी तक किसी नवजात शिशु की किलकारी नहीं गूंजी थी। बच्चा न होने का दुख उनके दांपत्य जीवन की सबसे बड□ी पीड□ा थी। वे दिखने में खुश लगते थे, लेकिन उनका तन-मन पीड□ा से भरा था। इस दुख, इस पीड□ा को दूर करने का कोई उपाय न सूझ रहा था। उन्होंने आपस में इस मामले पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया और निर्णय लिया कि वे एक बच्चा गोद लेंगे। इसके लिए उन्होंने पंजीकरण की प्रक्रिया को भी पूरा कर लिया।

दूसरी ओर 24 फरवरी, 1955 को युआन शीबल ने एक स्वस्थ और सुंदर बच्चे को जन्म दिया। युआन की अभी तक शादी नहीं हुई थी, इसीलिए पहले ही उन्होंने बच्चे को गोद देने का मन बना लिया था। इसके लिए उन्होंने एक शर्त यह रखी थी कि उनके बच्चे को जिस भी दंपती को गोद दिया जाए, वह स्नातक अवश्य हो। जब बच्चे को गोद देने की बात आई तो सबसे पहले

एक वकील दंपती सामने आई। वकील स्नातक था। अंत समय में उनका विचार बदल गया और उन्होंने बताया कि वे लड□के को नहीं, बल्कि लड□की को गोद लेना चाहते हैं।

वकील दंपती द्वारा शीबल के बच्चे को गोद लेने से मना किए जाने के बाद पॉल दंपती से संपर्क किया गया। वे तो पहले से ही बच्चे को गोद लेना चाहते थे, लेकिन कुछ कारणों के चलते ऐसा न हो सका था। अब जब ईश्वर की ओर से उपहारस्वरूप कोई बच्चा उन्हें मिल रहा था तो वे भला कैसे मना कर सकते थे। उन्होंने इसके लिए अपनी ओर से स्वीकृति दे दी। जब शीबल को यह पता चला कि उनके बच्चे को गोद लेने वाली दंपती स्नातक नहीं है तो वे बिफर उठीं और उन्होंने गोदनामे वाले कागजात पर हस्ताक्षर करने से साफ-साफ मना कर दिया। बाद में शीबल इस शर्त पर गोदनामे वाले कागजात पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी हो गईं कि पॉल दंपती को यह आश्वासन देना होगा कि वे गोद लेने वाले बच्चे की स्नातक की शिक्षा के लिए एक बचत खाता भी खोलेंगे, जिससे बच्चे को अपनी शिक्षा पूरी करने में कोई परेशानी न हो। पॉल दम्पती ने शीबल की इस शर्त को स्वीकार ही नहीं किया, बल्कि उन्हें लिखित में आश्वासन भी दिया।

अगस्त, 1955 में शीबल के पिता ऑर्थर शीबल की मृत्यु हो गई। जब तक पिता जीवित थे तो शीबल उन्हीं की मर्जी के मुताबिक चलती थीं, लेकिन पिता की मृत्यु के बाद उन्हें अब कोई कहने-सुनने वाला नहीं रह गया था। अब वे हर कदम अपनी मर्जी के मुताबिक बढ□ाने के लिए आजाद थीं। अब्दुल फतेह के प्रेमपाश में बंधी शीबल ने ग्रीन बे के कैथोलिक चर्च में अब्दुल फतेह से शादी कर ली।

1956 में अब्दुल फतेह को इंटरनेशनल पॉलिटिक्स में पी-एच.डी. की डिग्री मिल गई। डिग्री मिलते ही उन्होंने अध्यापक के रूप में नौकरी कर ली। अब्दुल फतेह और शीबल का वैवाहिक जीवन बड□ सुख से व्यतीत हो रहा था। अभी अब्दुल फतेह को नौकरी करते हुए कोई अधिक समय नहीं हुआ था कि उन्हें पिता बनने की खुशखबरी मिली। शीबल ने एक पुत्री को जन्म दिया, जिसका नाम मोना रखा गया।

अब्दुल फतेह और शीबल के जीवन को न जाने किसकी नजर लगी कि उनके बीच आए दिन कहा-सुनी होने लगी। 1962 के आते-आते दोनों के बीच संबंध इतने खराब हो गए कि उन्होंने एक-दूसरे से तलाक ले लिया। तलाक के बाद शीबल ने एकांत जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया।

दूसरी ओर पॉल और क्लारा अपने गोद लिये बच्चे के लालन-पालन में व्यस्त रहने लगे थे। उन्होंने बच्चे का नाम स्टीवन पॉल जॉब्स रखा था। संक्षेप में उन्हें स्टीव जॉब्स कहा जाने लगा। एक समय ऐसा था जब पॉल दंपती का घर-आंगन सूना-सूना था, लेकिन अब इस सूनेपन को स्टीव जॉब्स की किलकारियों ने दूर कर दिया था। वे स्टीव जॉब्स को बहुत लाड□-प्यार करते थे और उसके साथ अधिक-से-अधिक समय बिताने में व्यस्त रहते थे। स्टीव जॉब्स के अलावा पॉल दंपति ने एक लड□की को भी गोद लिया था, जिसका नाम उन्होंने पैरी रखा था। पॉल दंपती के जीवन में सब कुछ सही चल रहा था। उन्हें किसी प्रकार की कोई भी कमी महसूस नहीं

होती थी। कुछ वर्षों के बाद पॉल परिवार ने अपना निवास स्थान बदल दिया और वह दक्षिण क्षेत्र के एक उपनगर में जाकर रहने लगे।

2

बाल्यकाल एवं प्रारंभिक शिक्षा

''कभी-कभी ही ऐसा होता है कि इस दुनिया में कोई ऐसा आता है, जो न सिर्फ हर चीज का स्तर उठा देता है, बल्कि चीजों को परखने का पैमाना भी बदल देता है।''

– डिक कोस्टोलो
सीईओ, ट्विटर

स्टीव जॉब्स के पोषक माता-पिता उनकी हर छोटी-बड़ी जरूरत का ख्याल रखते थे। वे स्टीव जॉब्स को किसी भी प्रकार की कमी का अहसास नहीं होने देते थे। स्टीव जॉब्स के पास तरह-तरह के खिलौनों का अंबार लगा रहता था। जैसा कि पॉल दंपती ने स्टीव जॉब्स की जैविक माता शीबल से वादा किया था कि वे बच्चे की शिक्षा-दीक्षा का पूरा ध्यान रखेंगे, उन्होंने बिल्कुल ठीक वैसा ही किया।

स्टीव जॉब्स के माता-पिता ने उनका दाखिला पास के ही एक प्राथमिक विद्यालय में करा दिया। शुरुआती स्कूली पढ़ाई में तो स्टीव जॉब्स ठीक-ठाक रहे, लेकिन बाद में उनका मन पढ़ाई से हटने लगा। उनकी रुचि पढ़ाई से ज्यादा खेल-कूद में बढ़ने लगी थी। जब कभी-कभार उन्हें अधिक खेलने-कूदने से मना कर दिया जाता तो उन्हें अच्छा नहीं लगता था और वे नाराज होकर अपने कमरे में चले जाते थे। उन्हें अपने ऊपर किसी भी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं था। उन्हें तो बस अपनी मर्जी के मुताबिक स्वतंत्र रहना अच्छा लगता था।

स्कूल में स्टीव जॉब्स की दोस्ती फैरिंटनो नामक लड़के से हो गई थी। दोनों को शैतानी करना और अपनी कक्षा के बच्चों को तंग करना खूब भाता था। उनकी हरकतों से केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि शिक्षक भी परेशान रहते थे। एक दिन दोनों ने मिलकर एक पोस्टर बनाया और पोस्टर पर लिख दिया कि सभी बच्चे जब स्कूल में आएं तो अपने साथ अपने पालतू जानवर भी लेकर आएं। उन्होंने यह पोस्टर स्कूल की ही एक दीवार पर लगा दिया। अगले दिन सभी ने देखा कि बच्चे अपने पालतू जानवरों के साथ स्कूल में आए हैं। जब शिक्षकों को पता चला कि यह हरकत स्टीव जॉब्स और उनके दोस्त फैरिंटनो की है तो उन्हें खूब डांट-फटकार लगाई। एक बार तो उन्होंने अपनी ही शिक्षिका श्रीमती थुरमन की कुर्सी के नीचे विस्फोटक पदार्थ रख दिया था। इससे वे बहुत घबरा गई थीं, लेकिन फिर जल्दी ही स्थिति को संभाल लिया गया। हालांकि स्टीव जॉब्स को उनकी तीखी शरारतों के लिए सजा भी मिलती थी, लेकिन इससे उनकी शरारतें बिल्कुल भी कम न होतीं।

स्टीव जॉब्स ने तीसरी कक्षा पास कर ली और अब वे चौथी कक्षा में आ गए थे। इस दौरान

स्कूल प्रशासन की ओर से यह फैसला किया गया कि इस बार स्टीव जॉब्स और फैरिंटनो को अलग-अलग कक्षा में रखा जाएगा, क्योंकि स्कूल प्रशासन पहले ही दोनों की मिलीभगत के कारण अनेक परेशानियां झेल चुका था।

जब स्टीव जॉब्स चौथी कक्षा में आए तो पहले ही दिन उनकी मुलाकात शिक्षिका श्रीमती इमोजेन हिल से हुई। उन्होंने पहली ही नजर में स्टीव जॉब्स के शरारती हाव-भाव को ताड□ लिया था। वे एक सुलझी हुई शिक्षिका थीं और अपने नम्र व्यवहार के कारण पूरे स्कूल में लोकप्रिय थीं। श्रीमती इमोजेन ने स्टीव जॉब्स को सुधारने और उनमें पढ□ाई के प्रति लगन एवं गंभीरता पैदा करने की ठानी।

एक दिन जब स्कूल की छुट्टी हो गई तो उनकी शिक्षिका श्रीमती इमोजेन ने उन्हें अपने पास बुलाया और उन्हें एक कार्य पुस्तिका देते हुए कहा कि इसमें गणित के कुछ सवाल हैं। अगर तुम इन सवालों को घर से हल करके लाओगे तो तुम्हें इनाम के रूप में पांच डॉलर दिए जाएंगे। अगले दिन जब स्टीव जॉब्स स्कूल आए और उनकी शिक्षिका ने उनकी कार्य पुस्तिका देखी तो उन्होंने पाया कि स्टीव जॉब्स द्वारा हल किए गए अधिकांश सवाल सही थे। बस यहीं से स्टीव जॉब्स की रुचि बदल गई और उन्होंने शरारतें करना कम कर दिया था। वे पढ□ाई में रुचि लेने लगे थे। स्टीव जॉब्स में आए इन परिवर्तनों को देखकर सभी हैरान थे। उनके माता-पिता को यह देखकर बहुत खुशी हुई।

स्टीव जॉब्स की शिक्षिका श्रीमती इमोजेन को हमेशा ही लगता था कि उनमें कुछ विशेष है। वे उनकी जल्दी सीखने की आदत से बहुत प्रभावित थीं। उन्होंने बड□ ध्यान से देखा था कि यदि स्टीव जॉब्स को कोई चैलेंज दिया जाए तो वे उस काम को और भी बेहतर तरीके से कर सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने स्टीव जॉब्स के माता-पिता के सामने जॉब्स को दो कक्षाओं के प्रोमोशन (प्रोन्नति) के आधार पर 7वीं में भेजने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उनके माता-पिता ने केवल एक कक्षा के प्रोमोशन को ही स्वीकार किया। इस तरह स्टीव जॉब्स को पांचवीं कक्षा के बजाए सीधे छठी कक्षा में दाखिला मिल गया।

जॉब्स ने देखा कि छठवीं कक्षा में सभी बच्चे उनकी अपेक्षा बड□ थे। इससे उन्हें निराशा हुई और कक्षा में स्वयं को अकेला-अकेला महसूस करने लगे। अब वे एक नए विद्यालय में आ गए थे, जो एक बहुत ही बदनाम बस्ती के निकट स्थित था। यहां आए दिन लड□ाई-झगड□ होते रहते थे। यहां का वातावरण इतना खराब था कि पढ□ाई की आयु में ही बच्चे चाकू वगैरह अपने साथ रखते थे। स्टीव को यह देखकर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। छठी कक्षा पास करते ही उन्होंने अपने माता-पिता से स्पष्ट कह दिया कि वे उस स्कूल में पढ□ने के इच्छुक नहीं हैं। उन्होंने स्कूल की स्थिति उनके सामने स्पष्ट कर दी। उन्होंने यहां तक कह दिया कि अगर उनका दाखिला किसी और स्कूल में नहीं कराया गया तो वे अपनी पढ□ाई छोड□ देंगे।

पॉल दंपती धनाढ्य नहीं थे कि वे अपने लाड□ले स्टीव जॉब्स का दाखिला किसी अच्छे व महंगे स्कूल में कराते, लेकिन फिर भी उन्होंने तमाम परेशानियों को दरकिनार करते हुए स्टीव जॉब्स की मांग को पूरा करने का निश्चय किया। उन्होंने दक्षिण की ओर एक अच्छा-सा मकान

ले लिया, जिसमें लगभग सभी सुविधाएं थीं। इस मकान के नजदीक ही एक स्कूल भी था, जिसका वातावरण शांत एवं सौम्य था। इसी स्कूल में स्टीव जॉब्स का दाखिला करा दिया गया।

इस नए मकान में एक गैराज भी था, जहां स्टीव जॉब्स के पिता पॉल जॉब्स क्रॉफ्टमैनशिप का कार्य करते थे। पॉल जॉब्स को डिजाइनिंग और मैकेनिकल का भी अच्छा ज्ञान था। जब भी स्टीव को खाली समय मिलता तो वे अपने पिता के पास गैराज में आ जाते थे। यहां वे अपने पिता से कारों की डिजाइनिंग, वेंट्स और क्रोम आदि को बड़ी बारीकी से समझते थे।

स्टीव की रुचि मैकेनिकल के बजाय इलेक्ट्रॉनिक्स की चीजों में अधिक थी। इसका पता इस बात से चलता है कि वे हफ्ते में एक बार अपने पिता के साथ इलेक्ट्रॉनिक्स का पुराना सामान बेचने वाली दुकानों पर जाते और वहां अपनी पसंद के कुछ पार्ट्स तलाशकर खरीदते थे। इस कार्य में वे इतने कुशल हो गए थे कि उन्हें पता चल जाता कि कौन-सा पार्ट्स कितना उपयोगी है और इसका उपयोग कहां और किस प्रकार किया जा सकता है।

स्टीव जॉब्स ने सातवीं और आठवीं कक्षा पास कर ली थी। इसके बाद उनका दाखिला एक दुमंजिले होमस्टीड हाईस्कूल नामक विद्यालय में करा दिया गया था। इस विद्यालय का वातावरण उन्हें बहुत अच्छा लगा। यहां उनके कुछ दोस्त भी बन गए थे, जिनकी उन्हीं की तरह इलेक्ट्रॉनिक्स में रुचि थी। इलेक्ट्रॉनिक्स को लेकर उनमें इतना जुनून था कि वे कुछ-न-कुछ नया प्रयोग करते रहते थे। एक बार उन्होंने स्पीकर के तारों का अपने घर में जाल बिछाया। वे स्पीकर के माध्यम से अपने माता-पिता की बातें सुनना चाहते थे। जब उनके पिता ने उन्हें ऐसा करते हुए पाया तो वे नाराज हो गए और उन्होंने उनके उस पूरे सिस्टम को ही खत्म कर दिया। इसके बाद उनका संपर्क स्टीव लैरीलांग नामक इंजीनियर से हुआ, जिन्होंने उन्हें कार्बन माइक्रोफोन दिया। वे लैरी के साथ हिवलेट पैकर्ड एक्सप्लोरर्स क्लब भी गए। इस क्लब में 15 छात्रों का एक ऐसा समूह था, जिसकी आईटी के क्षेत्र में गहरी रुचि थी। यहीं उन्हें ऐसा पहला मौका मिला था, जब उन्होंने डेस्कटॉप कंप्यूटर देखा था।

जब स्टीव जॉब्स 15 वर्ष के हुए तो उनके पिता ने उन्हें उपहारस्वरूप एक कार दी। इस कार की स्थिति ठीक नहीं थी और उनके पिता ने इसमें एम.जी. इंजन लगाकर इसे कामचलाऊ बनाया था। यद्यपि वे इसे लेने से इंकार नहीं कर पाए, क्योंकि वे अपने पास कार होने के गौरव को कम नहीं करना चाहते थे। हालांकि बाद में उन्होंने अपनी बचत के पैसों से एक लाल रंग की फिएट कार खरीद ली थी।

स्टीव जॉब्स को अपने स्कूली दिनों में मैरीजुआना की लत भी पड़ गई थी। एक दिन उनके पिता ने मैरीजुआना की कुछ खुराक देखी तो उन्होंने स्टीव जॉब्स से पूछा कि यह क्या है, क्योंकि उनके पिता मैरीजुआना से अनजान थे। जब स्टीव जॉब्स ने उन्हें बताया कि यह मैरीजुआना है तो वे बहुत नाराज हुए। उन्होंने स्टीव जॉब्स से कहा कि वे उनसे वादा करें कि वे भविष्य में कभी भी नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे। स्टीव जॉब्स ने अपने पिता से इसके लिए वादा किया, जिसे उन्होंने आजीवन निभाया।

3

मित्रता के मायने

''स्टीव मेरे मित्र ही नहीं, बल्कि मेरे हीरो थे। उन्होंने मुझे निजी तौर पर न केवल सलाह दी, बल्कि मेरा हौसला भी बढ□ाया। उन्होंने हम सबको दिखा दिया कि कैसे कुछ नया करके जिंदगियों को बदला जा सकता है।''

– जेरी यांग, संस्थापक, याहू

स्टीव जॉब्स की खेलकूद में बचपन से ही रुचि रही थी। स्कूली शिक्षा के दौरान भी वे तरह-तरह के खेलों में भाग लेते रहते थे। जब वे स्कूल की तैराकी टीम का हिस्सा थे तो उनकी मुलाकात स्टीवन वोजनियाक से हुई। इस मुलाकात का माध्यम वोजनियाक के छोटे भाई बने, जो जॉब्स की तैराकी टीम के एक सदस्य थे। स्टीव जॉब्स को यह जानकर बहुत खुशी हुई कि वोजनियाक की भी इलेक्ट्रॉनिक्स में रुचि थी। हालांकि वोजनियाक उनसे उम्र में 5 वर्ष बड□ थे, लेकिन इसका उनकी मित्रता पर कोई अधिक प्रभाव नहीं पड□ा।

स्टीव जॉब्स के लिए अपने पिता की कार्यशाला यानी गैराज अधिक महत्त्वपूर्ण बन गया था। वे अपना अधिकांश समय गैराज में तरह-तरह के प्रयोग करते हुए बिताने लगे थे। उनके पिता उन्हें इलेक्ट्रॉनिक्स की चीजों में मशगूल देखकर बहुत खुश होते। उन्हें पता था कि उनके लाड□ले पुत्र में कुछ विशेष अवश्य है। उन्हें लगने लगा था कि एक दिन अवश्य ही उनका पुत्र इस दुनिया में सितारा बनकर चमकेगा।

दूसरी ओर वोजनियाक एक दिन अपने पिता की कार्यशाला में गए। वहां उन्होंने देखा कि उनके पिता वीडियो स्क्रीन पर कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे, जो उनके लिए कौतूहल का विषय बन गया था। उनके पिता ने उन्हें बताया कि इंजीनियरिंग के माध्यम से बहुत कुछ बदला जा सकता है। पिता की यही बात वोजनियाक के दिल में बैठ गई।

वोजनियाक को भी स्टीव जॉब्स की भांति बचपन से ही कुछ नया करने की आदत थी। वोजनियाक की प्रतिभा का पता इस तथ्य से चलता है कि जब वे आठवीं कक्षा में थे तो उन्होंने एक कैलकुलेटर बनाया। इसके लिए उन्हें स्थानीय एयरफोर्स द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार भी मिला।

वोजनियाक हमेशा कुछ नया प्रयोग करने के बारे में सोचते रहते थे और अपनी इसी सोच के कारण वे इतने व्यस्त रहने लगे थे कि उन्हें अपने खाने-पीने तक का कोई ख्याल नहीं रहता। इसी वजह से वे अलग-थलग पड□ गए। कोई भी उनसे बात करना या मिलना-जुलना पसंद नहीं करता था, लेकिन उन्हें इसकी कोई चिंता नहीं थी।

अपनी शिक्षा के दौरान ही वोजनियाक को सिल्वेनिया कंपनी में पार्ट टाइम नौकरी मिल गई। यहां उनके लिए सबसे बड□ी खुशी की बात यह रही कि कंपनी में उन्हें कंप्यूटर पर काम करने का अवसर मिला। उनकी सर्किट की डिजाइनिंग में अधिक रुचि थी और अपने इसी प्रोजेक्ट पर वे रात-भर काम करते रहते। सिल्वेनिया कंपनी में काम करना उनके लिए एक प्लस पाइंट रहा क्योंकि यहां उन्हें कंप्यूटर पर काम करते-करते कंप्यूटर के बारे में अच्छी-खासी जानकारी हो गई थी।

शिक्षा पूरी करने के बाद वोजनियाक ने नौकरी करने के बारे में सोचा। अत: उन्होंने कैलिफोर्निया मोटर वेहिकिल के लिए कंप्यूटर बनाने वाली कंपनी में नौकरी कर ली। यहां उन्हें उनकी पसंद का काम मिल गया था। एक दिन उनके एक सहयोगी ने उनके सामने कंप्यूटर बनाने का प्रस्ताव रखा। वोजनियाक ने यह प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया। उन्होंने इस प्रस्ताव को एक चुनौती के रूप में लिया। उन्होंने इस काम के लिए अपने दोस्त बिल फर्नांडीज का गैराज चुना। उन्होंने जमकर मेहनत की और अंतत: नियत समय पर अपना काम पूरा कर लिया। इस तरह कंप्यूटर बनाना ही वोजनियाक और स्टीव जॉब्स की गहरी मित्रता का कारण बना। जब वोजनियाक कंप्यूटर बनाने में व्यस्त थे तो उसी दौरान फर्नांडीज ने उन्हें बताया था कि स्टीव जॉब्स नामक युवक की रुचि भी बिल्कुल तुम्हारी ही तरह है। मुझे लगता है कि तुम दोनों को एक-दूसरे से मित्रता कर लेनी चाहिए। हालांकि वोजनियाक की स्टीव जॉब्स से पहले भी अपने भाई के माध्यम से मुलाकात हो चुकी थी, लेकिन यह केवल एक हल्की-फुल्की मुलाकात थी। उनके बीच गहरी मित्रता तो इसी वाकिये के बाद हुई।

इसी बीच स्टीव जॉब्स ने 1972 में होम स्टीड में अपनी अंतिम कक्षा पूरी कर ली। एक दिन उनकी मुलाकात विद्यालय के बाहर क्रिस एन. ब्रेनन से हुई, जो लगभग उन्हीं की आयु की थीं। दोनों ही एक-दूसरे के प्रति आकर्षित थे, उन्होंने एक-दूसरे से मिलना-जुलना शुरू कर दिया था। जब 1972 की गर्मियों की छुट्टियां हुईं तो स्टीव जॉब्स अपने माता-पिता को सूचित कर ब्रेनन के साथ पहाडि□यों में समय बिताने के लिए चले गए। हालांकि उनके पिता ने उनके ब्रेनन के साथ जाने का विरोध भी किया, लेकिन वे नहीं माने। इस तरह स्टीव जॉब्स और ब्रेनन एक-दूसरे के बहुत निकट आ गए।

गर्मियों की छुट्टियां खत्म हुईं, तो स्टीव जॉब्स वापस घर लौट आए। वे घर लौटने के बाद वोजनियाक से मिले। उन्होंने साथ मिलकर कुछ नया करने के बारे में विचार किया। एक दिन वोजनियाक ने एक साइंस पत्रिका में 'सीक्रेट ऑफ द लिटिल ब्ल्यू बॉक्स' नामक एक लेख पढ□ा, जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार टेलीफोन की सहायता से दूर तक बात की जा सकती है। उन्होंने इस लेख के बारे में स्टीव जॉब्स को बताया। दोनों ने इसे अपने लिए एक चुनौती के रूप में लिया। इस चुनौती को पूरा करने के लिए वे पुस्तकालय गए और वहां जर्नल ढूंढ□ने में सफल रहे। इसके बाद उन्होंने कुछ आवश्यक पार्ट्स खरीदे और कड□ी मेहनत के बाद ब्ल्यू बॉक्स बनाने में सफल रहे। इस बॉक्स को बनाने में कुल 40 डॉलर का खर्चा आया था। उन्होंने इसे कुछ लोगों को दिखाया जिसे बहुत पसंद किया गया जिसे उन्होंने 150 डॉलर में

बेचकर 110 डालर का मुनाफा कमाया।

ब्ल्यू बॉक्स की सफलता ने स्टीव जॉब्स और वोजनियाक के हौसले को बढ□ा दिया। अब वे कुछ और नया करने के बारे में सोचने लगे। वोजनियाक की विशेषता यह थी कि वे एक कुशल इंजीनियर थे, जो नए-नए आविष्कार करने में माहिर थे और स्टीव जॉब्स को तैयार उत्पादों को आकर्षक एवं सुंदर बनाने में निपुणता प्राप्त थी। बस, उनका यही बेहतरीन सामंजस्य भविष्य में उन्हें उस स्थिति में ले गया, जहां से उन्होंने एप्पल कंपनी की स्थापना की।

4

उच्च शिक्षा की ओर

''जो लोग शैतान होते हैं, वे बागी किस्म के होते हैं और कुछ-न-कुछ परेशानी खड□ी करते रहते हैं। आप उनसे असहमत हो सकते हैं लेकिन उन्हें नजरंदाज नहीं कर सकते। ये लोग ही बदलाव लाते हैं। ये लोग मानव जाति को आगे बढ□ाते हैं। कुछ लोग उन्हें 'क्रेजी' कह सकते हैं, मगर हम उन्हें जीनियस कहते हैं।''

– स्टीव जॉब्स, सहसंस्थापक, एप्पल
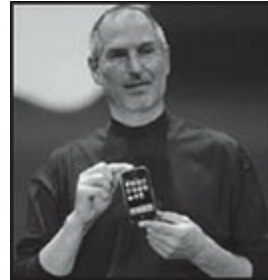
स्टीव जॉब्स ने अपनी शिक्षा पूरी कर ली थी और अब उनके पिता चाहते थे कि वे उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज में प्रवेश लें। उन्हें उच्च शिक्षा दिलाने का उनके माता-पिता का एक कारण यह भी था कि उन्होंने स्टीव जॉब्स को गोद लेते समय उनकी जैविक माता युआन शीबल से इसके लिए वादा भी किया था। अत: वे इसी वादे को निभाने के लिए चाहते थे कि स्टीव जॉब्स कॉलेज जाएं, लेकिन वे कॉलेज न जाकर कुछ और ही करना चाहते थे। जब उनके माता-पिता ने इसके लिए उन पर दबाव बनाया तो उन्होंने भी अपने तेवर बदलते हुए कहा कि वे किसी सस्ते कॉलेज में दाखिला नहीं लेंगे। उन्होंने स्टैनफोर्ड और बर्कले जैसे कॉलेजों में दाखिला लेने से साफ मना कर दिया था। इससे उनके माता-पिता चिंतित हुए।

एक दिन स्टीव जॉब्स के माता-पिता ने उनसे उनके मनपसंद कॉलेज में दाखिला लेने की बात पूछी तो उन्होंने पोर्टलैंड के मशहूर कॉलेज रीड का नाम बताया। उन्होंने बताया कि अगर वे पढ□ेंगे तो केवल रीड कॉलेज में, अन्यथा नहीं। अंतत: उनके माता-पिता को उनकी यह जिद माननी पड□ी। यद्यपि वे इतने धनवान नहीं थे कि वे बेफिक्र होकर स्टीव जॉब्स को रीड कॉलेज में पढ□ा सकते, लेकिन फिर भी वे तैयार हो गए। रीड कॉलेज में उनका दाखिला करा दिया गया। जब उनके माता-पिता उन्हें कॉलेज में छोड□ने के लिए आए तो जॉब्स ने उन्हें अंदर नहीं आने दिया। वे नहीं चाहते थे कि कोई भी उनके माता-पिता को जाने। बाद में स्टीव जॉब्स को अपने इस व्यवहार पर पछतावा हुआ।

स्टीव जॉब्स की रुचि इलेक्ट्रॉनिक्स की चीजों में अधिक थी, लेकिन रीड कॉलेज में पढ□ाई करते हुए उनका रुझान अध्यात्म की ओर बढ□ गया था। इसी दौरान उन्होंने अध्यात्म से संबंधित अनेक पुस्तकें पढ□ीं। 'बी हीयर नाऊ' (Be Here Now) वह पुस्तक थी, जिसने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। यह पुस्तक बाबा रामदास द्वारा लिखी गई थी। कॉलेज में उनकी मित्रता डेनियल कोटक नामक युवक से हुई। जल्द ही दोनों में खूब छनने लगी। अधिकतर समय वे कॉलेज में कोटक के साथ ही बिताते थे।

स्टीव जॉब्स अध्यात्म के संपर्क में आना था कि वे शाकाहारी बन गए। उन्होंने शाकाहार के विषय में अनगिनत पुस्तकें पढ□ीं। उनकी संगत का उनके मित्र कोटक पर भी गहरा प्रभाव पड□ा और वे भी उनकी ही भांति शाकाहारी हो गए। अध्यात्म में बढ□ती रुचि के कारण उन्होंने हरे कृष्णा मंदिर में भी जाना शुरू कर दिया था।

यह स्टीव जॉब्स के जीवन का परिवर्तनकारी दौर था। इसी दौरान उनकी मुलाकात रॉबर्ट फिडलैंड नामक युवक से हुई। उसे नशे की लत लग चुकी थी और नशा करने के अपराध में वह जेल भी जा चुका था। उसे इस बात पर कोई अफसोस नहीं होता था, बल्कि इसके लिए वह स्वयं पर गर्व महसूस करता था। जब उसने बाबा रामदास और नीम करोरी बाबा के बारे में सुना व पढ□ा तो वह उनसे बहुत प्रभावित हुआ। अत: 1973 में वह उनकी खोज में भारत गया। कुछ समय बाद जब वह वापस लौटा तो वह पूरी तरह बदल चुका था। उसने संन्यासी जीवन जीना शुरू कर दिया था। कुछ समय बाद उसने एक विशाल जगह पर आश्रम की स्थापना की, जहां कुछ समय के लिए स्टीव जॉब्स और कोटक भी रहे।

अनेक परेशानियों को दरकिनार करते हुए स्टीव जॉब्स के माता-पिता ने उनका दाखिला उनके मनपसंद के रीड कॉलेज में करा दिया था, लेकिन स्टीव जॉब्स कॉलेज की पढ□ाई में कोई रुचि नहीं ले रहे थे। उन्होंने क्लास में नियमित रूप से आना भी कम कर दिया था। कॉलेज प्रशासन ने उन्हें समझाया भी कि उन्हें नियमित रूप से क्लास में आना चाहिए, लेकिन जिद्दी स्वभाव के स्टीव जॉब्स ने उनकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अंतत: कॉलेज में मन न लगने के कारण स्टीव जॉब्स ने कॉलेज बीच में ही छोड□ दिया। कॉलेज का एक सेमेस्टर भी वे बड□ी मुश्किल से पूरा कर पाए थे। कॉलेज छोड□ते ही उन्होंने कैलीग्राफी की कक्षाओं में जाना शुरू कर दिया। उन्होंने कैलीग्राफी को जल्दी ही सीख लिया था, जो आगे चलकर उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण साबित हुई। बाद में उन्होंने बताया कि यदि वे कैलीग्राफी नहीं सीखते तो फिर शायद ही उनका कंप्यूटर अस्तित्व में आ पाता।

स्टीव जॉब्स के कॉलेज की पढ□ाई छोड□ने से उनके माता-पिता बहुत दुखी थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करें और इसके लिए उन्होंने उनकी लगभग हर शर्त पूरी की, लेकिन फिर भी स्टीव जॉब्स कॉलेज की पढ□ाई पूरी करने में नाकाम रहे।

5

भारत-भ्रमण

''स्टीव जॉब्स सही मायने में एक आविष्कारक थे। उन्होंने हमें संपर्क में रहने की नई राह दिखाई और संचार क्रांति में उल्लेखनीय योगदान दिया।''

– डॉ. मनमोहन सिंह
पूर्व प्रधानमंत्री, भारत

स्टीव जॉब्स ने कॉलेज की पढ□ाई बीच में ही छोड□ दी और वापस घर लौट गए। उनके माता-पिता इस तरह से बीच में ही पढ□ाई छोड□ने से बहुत नाराज थे। इस बात की स्टीव जॉब्स ने जरा-सी भी परवाह नहीं की थी कि उनके माता-पिता ने अनेक दिक्कतें सहते हुए उनका दाखिला उनके मनपसंद कॉलेज में कराया था। उन्होंने स्वीकार भी किया था कि यह उनकी ओर से की गई बहुत बड□ी गलती थी। उन्होंने बाद में स्वीकार किया कि उनके माता-पिता अधिक धनवान नहीं थे, फिर भी उन्होंने बड□ी मुश्किलों का सामना करते हुए जैसे-तैसे करके उनका दाखिला रीड कॉलेज में कराया था। इसके बावजूद जॉब्स आशाओं के अनुरूप स्वयं को साबित न कर सके।

रीड कॉलेज छोड□ते ही स्टीव जॉब्स ने अपने लिए नौकरी की तलाश शुरू कर दी थी। एक दिन उन्होंने एक स्थानीय अखबार में एक विज्ञापन पढ□ा, जिसमें लिखा था–आनंद करो और धन कमाओ। उन्होंने इन्हीं विज्ञापनों में से एक विज्ञापन के अनुसार वीडियो गेम बनाने वाली अटारी कंपनी में जाने का फैसला किया। इस कंपनी ने 'पोंग' नामक वीडियो गेम बनाया था।

जब स्टीव जॉब्स अटारी कंपनी में नौकरी के लिए पहुंचे तो उस समय वे मैले-कुचैले कपड□ पहने हुए थे, उनके बाल भी काफी बड□ व बिखरे हुए थे और उनके पैरों में जूतों के बजाय चप्पल थीं। उन्हें देखकर कंपनी के लोग हैरान थे। कुछ देर बाद उन्हें साक्षात्कार के लिए कंपनी मालिक ने अपने केबिन में बुलाया। साक्षात्कार के समय मालिक उनकी हाजिर जवाबी से बहुत प्रभावित हुआ। वह पहली दृष्टि में ही उनकी बुद्धिमत्ता और उत्साह का कायल हो गया था। उन्हें कंपनी में 5 डॉलर प्रति घंटे की दर से नौकरी मिल गई। इस तरह वे डॉन लैंग नामक इंजीनियर के नेतृत्व में काम करने लगे। शुरुआत में ही लैंग ने उनके साथ यह कहते हुए काम करने से इंकार कर दिया कि उनके शरीर से अजीब तरह की गंध आती है, इसलिए वे चाहते थे कि उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाए, लेकिन कंपनी मालिक की दृष्टि में वे एक काम के व्यक्ति थे और वे ऐसा व्यक्ति खोना नहीं चाहते थे। अत: कंपनी मालिक ने उन्हें रात की पाली में काम करने के लिए सहमत कर लिया।

स्टीव जॉब्स की यह विशेषता थी कि वे जिस भी काम की जिम्मेदारी अपने हाथों में लेते थे, उसे बड़ी मेहनत और लगनशीलता से अंजाम देते थे। एक दिन उन्होंने कंपनी मालिक के सामने आकर्षक और सरल वीडियो गेम बनाने का प्रस्ताव रखा और इसके लिए उन्होंने मालिक को सलाह भी दी कि इस काम को किस तरह अंजाम दिया जा सकता है। मालिक ने उनके प्रस्ताव पर अपनी सहमति तो जताई, लेकिन समयाभाव के चलते उनकी सलाह को अमल में नहीं लाया जा सका।

एक बार एक कर्मचारी ने स्टीव जॉब्स को अपनी स्लाट कंपनी स्थापित करने के बारे में बताया। वह कर्मचारी कंपनी के बंद हो जाने से निराश व हताश था, लेकिन स्टीव जॉब्स ने उसे बंद कंपनी को चलाने के लिए उत्साहित किया। स्टीव ने उसे लाख समझाया कि वह फिर से अपनी कंपनी को चला सकता है, लेकिन उसने अपने कुछ विशेष कारण बताते हुए ऐसा करने में अपनी असमर्थता जताई। बस यही वह अवसर था, जब स्टीव जॉब्स को अपनी कंपनी की स्थापना करने में मदद मिली। उनके मन-मस्तिष्क में यह बात बैठ गई थी कि जब एक साधारण इंजीनियर अपनी कंपनी स्थापित कर सकता है तो फिर वे क्यों नहीं ऐसा कर सकते। अत: अपनी कंपनी की स्थापना की बात को मस्तिष्क में रखते हुए वे आगे की योजना बनाने लगे।

स्टीव जॉब्स अटारी कंपनी में काम तो कर रहे थे, पर उनका मन-मस्तिष्क न जाने क्यों अध्यात्म की ओर खिंचा चला जा रहा था। उन्हें रह-रहकर अपने मित्र रॉबर्ट फ्रिडलैंड की बातें याद आ रही थीं। फ्रिडलैंड ने उन्हें सलाह दी थी कि यदि वे अपनी आध्यात्मिक भूख को शांत करना चाहते हैं तो उन्हें इसके लिए भारत का दौरा करना होगा। आध्यात्मिकता से जुड़ी हर समस्या का समाधान केवल भारत में ही मिल सकता है। फ्रिडलैंड की बातों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वे भारत जाने की तैयार करने लगे।

भारत दौरे के लिए स्टीव जॉब्स बहुत उत्साहित थे। वे जल्दी-से-जल्दी भारत आना चाहते थे, लेकिन उनके सामने एक बड़ी समस्या यह थी कि इतना धन किस प्रकार एकत्र किया जाए। भारत जाने की बात उन्होंने अपने मित्र कोटक को भी बताई। कोटक ने उन्हें भारत दौरे के लिए प्रेरित किया। इसके बाद उन्होंने अटारी कंपनी के वरिष्ठ इंजीनियर अल्कॉर्न के सामने अपनी इच्छा रखी। कंपनी का लगभग प्रत्येक कर्मचारी उनकी प्रतिभा से प्रभावित था। इसी कारण कंपनी के मालिक और वरिष्ठ इंजीनियर भी उन्हें कंपनी से बाहर नहीं जाने देना चाहते थे और वह भी लंबे समय के लिए। उन्हें लगता था कि जाब्स की गैरमौजूदगी से कंपनी को नुकसान उठाना पड़ सकता था।

वरिष्ठ इंजीनियर ने स्टीव जॉब्स को समझाया कि अभी भारत दौरे के लिए उनके पास पर्याप्त धन नहीं है और साथ ही कंपनी को उसकी आवश्यकता है। यदि तुम म्यूनिख जाकर कंपनी के उत्पादों में आई शिकायत के काम को ठीक कर दो तो इससे कंपनी का काम भी काम हो जाएगा और भारत दौरे के लिए उनके पास पर्याप्त धन भी हो जाएगा। स्टीव जॉब्स को यह प्रस्ताव ठीक लगा। वे म्यूनिख पहुंचे और वहां जाकर देखा कि कि कंपनी के उत्पादों में मूलभूत कमियां है। उन्होंने कंपनी के उत्पादों में आई कमी को जल्द ही दूर कर दिया। इससे कंपनी मालिक को बहुत

खुशी हुई।

इसके बाद स्टीव जॉब्स को म्यूनिख से ही सीधे कंपनी के थोक विक्रेता के शहर तूरीन जाना पड□ा। जब वे थोक विक्रेता के निवास पर पहुंचे तो उसने स्टीव जॉब्स का बड□ा हार्दिक स्वागत किया और खूब आवभगत की। वे जो भी फरमाइश करते थे, उसे तुरंत पूरा किया जाता था। यह देखकर वे बहुत खुश हुए। इसके अलावा उन्होंने स्विट्जरलैंड और लुगाना आदि स्थानों का भी दौरा किया। कुल मिलाकर कंपनी की ओर से बाहर विदेशी दौरों पर जाना उनके लिए बड□ा लाभकारी रहा।

जब स्टीव जॉब्स के पास पर्याप्त धन इकट्ठा हो गया तो उन्होंने भारत दौरे पर जाने का फैसला किया। अप्रैल में वे नई दिल्ली पहुंचे। जिस होटल में वे ठहरने वाले थे, वह पहले से ही बुक था। अत: बाद में वे एक ऐसे होटल में ठहरे, जो मामूली था और वहां की सुविधाएं साधारण ही थीं। पीने के लिए स्वच्छ पानी की भी कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। यहां रहते हुए वे बुखार से पीडि□त हो गए। यही नहीं, उनका वजन भी 160 पौंड से घटकर केवल 120 पौंड रह गया।

दिल्ली जैसा भीड□भाड□ वाला अति व्यस्त शहर स्टीव जॉब्स को रास नहीं आया। अत: जैसे ही उनके स्वास्थ्य में सुधार आया तो वे दिल्ली छोड□कर हरिद्वार चले गए। पवित्र धार्मिक नगरी हरिद्वार ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। उन दिनों हरिद्वार में कुंभ का मेला लगा हुआ था। चारों ओर जहां भी दृष्टि उठाकर देखो तो बस लोग-ही-लोग दिखाई देते थे। जगह-जगह धार्मिक प्रवचन हो रहे थे। वहां वे ज्यादा समय तक नहीं रुके और थोड□े समय बाद नैनीताल चले गए। नैनीताल में वे हिमालय की तलहटी में बसे एक गांव में पहुंचे, जिसके बारे में लोगों का यह मानना था कि यहां कभी नीम करोरी बाबा रहा करते थे। जब वे यहां पहुंचे तो उस समय नीम करोरी बाबा जिंदा नहीं थे। यहां उन्होंने एक कमरा किराए पर लिया। उन्होंने जब वहां शाकाहारी भोजन की मांग की तो यह सुनकर मकान मालिक हैरान रह गया। उसने उनके लिए शाकाहारी भोजन की व्यवस्था कर दी। उन्होंने यहां काफी समय बिताया। मकान मालिक ने उन्हें 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी' नामक पुस्तक दी, जिसे उन्होंने कई बार पढ□ा।

स्टीव जॉब्स मन की शांति और अपनी आध्यात्मिक भूख शांत करने के लिए भारत आए थे, इसीलिए वे गांव-गांव घूमते रहते थे। एक दिन उनकी मुलाकात एक धार्मिक समूह से हुई, जो एक समारोह में भाग लेने के लिए जा रहा था। कुछ ही दूर समारोह का कार्यक्रम चल रहा था, जहां एक साधु अपने शिष्यों के साथ विराजमान थे। स्टीव जॉब्स ने बताया कि समारोह में विभिन्न प्रकार के शाकाहारी व्यंजन तैयार किए गए थे, जिनसे लजीज सुगंध आ रही थी। उनका मन शाकाहारी व्यंजनों को खाने के लिए लालायित हो रहा था। अत: वे साधु बाबा को प्रणाम कर खाना खाने के लिए बैठ गए।

थोड□ी देर बाद साधु बाबा ने स्टीव जॉब्स की ओर देखा और फिर अकस्मात् वे उनका हाथ पकड□कर पहाड□ की ओर चल दिए। यह देखकर स्टीव जॉब्स को थोड□ा अजीब लगा। इसका कारण स्पष्ट था कि हजारों की संख्या में तो लोग उन साधु बाबा के दर्शनों के लिए आ रहे हैं और साधु बाबा हैं कि उनका हाथ पकड□कर पहाड□ की ओर चले जा रहे हैं। स्टीव जॉब्स

ने बताया कि वे साधु बाबा का कोई विरोध न कर सके। लगभग 2 घंटे लगातार चलने के बाद स्टीव जॉब्स साधु बाबा के साथ उस जगह पर पहुंचे, जहां एक छोटा-सा तालाब और कुआं था। साधु बाबा ने स्टीव जॉब्स का सिर तालाब में डुबाया और फिर उनका मुंडन कर दिया। स्टीव जॉब्स की समझ में कुछ भी नहीं आया कि ऐसा करके साधु बाबा क्या संदेश देना चाहते थे। यह हमेशा उनके लिए बड□ कौतूहल की बात रही।

पाश्चात्य संस्कृति से निराश स्टीव जॉब्स आत्मिक शांति की खोज के लिए अत्यंत व्यग्र हो रहे थे। इसी व्यग्रता ने उन्हें भारत भ्रमण पर आने को प्रेरित किया था। जीवन के इसी मोड□ का विश्लेषण करते हुए जॉब्स के भारत भ्रमण की चाह पर 'नई दुनिया' ने प्रकाश डाला-

''भारत की आध्यात्मिक छटा निराली है। यहां की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत ने विश्व की कई विभूतियों को अभिभूत किया है। एप्पल के दिवगंत सहसंस्थापक स्टीव जॉब्स को भी भारत ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति का परिचय कराया और उपहारस्वरूप उन्हें महात्मा बुद्ध के दर्शन ने ओत प्रोत कर दिया। बुद्ध की आध्यात्मिक शक्ति से प्रभावित होकर बाद में जॉब्स ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। 'सीएनएन' की रिपोर्ट के अनुसार जॉब्स ने भारत से अध्यात्म (बौद्ध दर्शन) का अनुपम उपहार प्राप्त किया। आधुनिक प्रौद्योगिकी जगत के सुपरस्टारों में गिने जाने वाले स्टीव जॉब्स अपनी युवा अवस्था में निर्वाण की तलाश में भारत की यात्रा पर आए थे। संतोष न मिलने पर वे वापस अमेरिका चले गए। उन्होंने उस वक्त भारत को अपनी कल्पना से अधिक गरीब पाया और विडंबना देखिए कि बाद में 2000 के दशक के मध्य में जब वे भारत में कंप्यूटर के लिए संयंत्र स्थापित करने के बारे में सोच रहे थे तो उन्हें लगा कि इस देश में कारोबार करना सस्ता नहीं रह गया है। 70 के दशक की शुरुआत में भारत के दौरे से असंतुष्ट वापस लौटने के कारण ही वे प्रौद्योगिकी जगत पर अपना ध्यान केंद्रित कर सके और आखिरकार एप्पल की स्थापना कर डाली।

जॉब्स की जीवनी 'द लिटल किंगडम द प्राइवेट स्टोरी ऑफ एप्पल कंप्यूटर' में लेखक माइकल मोरिज ने जॉब्स को यह कहते हुए पेश किया है कि यह पहला मौका था जब उन्हें लगने लगा था कि विश्व को बेहतर बनाने के किए कार्ल मार्क्स और नीम करोरी बाबा ने मिलकर जितना किया है, शायद थॉमस एडिसन ने अकेले उससे ज्यादा किया है।

मोरिज ने जीवनी में कहा कि मुश्किल दिनों ने जॉब्स को उन सारे भ्रमों पर सवाल करने के लिए बाध्य किया, जो उन्होंने भारत के बारे में पाल रखा था। उन्हें भारत अपनी कल्पना से भी अधिक गरीब नजर आया और वे देश की स्थिति और पवित्रता के प्रचार के बीच की असंगति से दंग थे।

किताब में जॉब्स को यह कहते हुए पेश किया गया है कि हमें ऐसी जगह नहीं मिल सकती थी, जहां महीने-भर में निर्वाण प्राप्त किया जा सके। जब तक वे भारत से कैलीफोर्निया वापस लौटे, अतिसार के चलते पहले से ज्यादा दुबले और कमजोर हो गए थे। जब वे कैलीफोर्निया पहुंचे तो उनके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और वे भारतीय परिधान पहने हुए थे। बरसों बाद 2006 में बात चली थी कि एप्पल अपने मैक और अन्य उत्पादों के विनिर्माण में मदद करने के

लिए बेंगलुरु में 3,000 कर्मचारियों वाला एक केंद्र स्थापित करने के बारे में विचार कर रहे हैं। कंपनी ने इसके लिए 30 लोगों को नियुक्त भी किया है, लेकिन बाद में इसे अमली जामा नहीं पहनाया जा सका। कंपनी को भारत में कदम रखना इतना सस्ता नहीं लगा जितना उसने सोचा था।

जॉब्स ने निर्वाण प्राप्ति, शांति और साथ ही अपने कारोबार की उन्नति की चाह में भारत के अनेक स्थानों का भ्रमण किया, लेकिन उन्हें आशातीत सफलता नहीं मिली। इसके बावजूद वे भारत दौरे से निराश नहीं थे।

स्टीव जॉब्स के भारत भ्रमण के संबंध में भारत के सुप्रसिद्ध हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' की दृष्टि में जॉब्स को भारत भ्रमण से इच्छानुकूल वस्तु तो प्राप्त न हो सकी, किंतु उनका मन तकनीकी दुनिया की ओर जरूर प्रेरित हुआ। शायद इसी प्रेरणा ने उनकी सफलता की राह प्रशस्त की–

"तीन एप्पल ने दुनिया को बदल दिया। एक ने हवा को बहकाया, दूसरे ने न्यूटन को जगाया और तीसरा जॉब्स के हाथ में था।' यह वह संदेश है, जिसका एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स के असामयिक निधन के बाद ट्विटर और फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों पर सबसे ज्यादा आदान-प्रदान हुआ।

जॉब्स एक दूरदर्शी उद्यमी थे। विश्वविख्यात अमेरिकी टेक्नोलॉजी कंपनी, एप्पल के पीछे उनका दिमाग था। उन्होंने दुनिया को मैक कंपयूटर, आईपॉड म्यूजिक प्लेयर, आईफोन मोबाइल और आईपैड टेबलेट पीसी जैसे नायाब उत्पाद दिए। यह वाकई दिलचस्प है कि टेक्नोलॉजी जगत की अग्रणी हस्ती बनने से काफी पहले 70 के दशक में वे निर्वाण की तलाश में भारत आए थे और संतुष्ट हुए बगैर वापस लौट गए थे। उन्होंने उस समय भारत की जितनी कल्पना की थी, उससे कहीं अधिक गरीब पाया था। मगर वर्षों बाद वर्ष 2000 के मध्य में; जब वे एप्पल के मैक कंपयूटरों के लिए सहूलियत कायम करना चाहते थे, उन्होंने व्यवसाय के लिहाज से भारत को काफी कम लागत वाला पाया था।

जॉब्स की जीवनी का शीर्षक है 'द लिटिल किंगडम : द प्राइवेट स्टोरी ऑफ एप्पल कंप्यूटर्स'। इसमें जॉब्स के हवाले से लिखा गया- 'यह पहली बार था जब मैंने महसूस किया कि थॉमस एडिसन ने दुनिया को सुधारने के लिए कार्ल मार्क्स और नीम करोरी बाबा के सम्मिलित योगदान से कहीं अधिक काम किया।' नीम करोरी बाबा आध्यात्मिक गुरु थे, जिनसे मिलने के लिए जॉब्स ने कॉलेज के मित्र डॉन कोटक के साथ भारत की यात्रा की थी। जॉब्स की जीवनी के लेखक माइकल मोरिज के मुताबिक, तपती गर्मी ने जॉब्स के भीतर कई सवाल पैदा किए। उन्होंने भारत को जितना सुना था उससे कहीं ज्यादा गरीब पाया।

> ''स्टीव जॉब्स ने व्यवसाय के लिहाज से भारत को काफी कम लागत वाला पाया। वास्तव में उनकी 1970 के दशक की भारत की असंतोषजनक यात्रा उन मुख्य कारणों में से एक साबित हुई, जिन्होंने उन्हें टेक्नोलॉजी की दुनिया की तरफ ध्यान देने के लिए प्रेरित किया और जिनकी वजह से आगे चलकर उन्होंने एप्पल कंपनी की स्थापना की।''

भारत की सुरम्य वादियों ने जहां स्टीव जॉब्स का मन मोह लिया, वहीं यहां की परंपराएं, प्रथाएं उन्हें परिलोक की रहस्य कथाओं जैसी लगीं।

कुछ समय बाद स्टीव जॉब्स के मित्र कोटक भी भारत आ गए। उन्हें भी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से लगाव था। जैसे ही कोटक दिल्ली आए तो स्टीव जॉब्स भी उनके पास आ गए। देश-भर में घूमने के बावजूद स्टीव जॉब्स की आध्यात्मिक भूख शांत नहीं हुई, बल्कि यह भूख समय के साथ-साथ बढ□ती चली गई।

दिल्ली में स्टीव जॉब्स और कोटक ने कुछ समय साथ बिताया और फिर वे वहां से मनाली गए। मनाली में कोटक का बैग चोरी हो जाने के कारण उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड□ा। उन्होंने वापस अपने देश लौटना था, लेकिन उनके पास पर्याप्त धनराशि नहीं थी।

जब स्टीव जॉब्स को लेने के लिए उनके माता-पिता ऑकलैंड एयरपोर्ट पर आए तो वे उन्हें पहचान नहीं सके। उस समय स्टीव जॉब्स ने मुंडन कराया हुआ था और वे संन्यासियों का भेष धारण किए हुए थे। काफी देर टकटकी लगाकर देखने के बाद उनकी माता क्लारा ने उन्हें पहचान लिया। इसके बाद वे अपने परिवार के साथ घर पहुंचे।

भारत दौरे से लौटने के बाद स्टीव जॉब्स ने फिर से अटारी कंपनी में नौकरी करना शुरू कर दिया। इस बार भी वे रात की पाली में काम कर रहे थे। पास ही में उनके मित्र वोजनियाक एच.पी. कंपनी में काम करते थे। जब भी वोजनियाक को समय मिलता तो वे रात के समय स्टीव जॉब्स के पास आ जाते थे और इस तरह दोनों मित्र विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए एक साथ समय बिताने का मौका तलाश लेते थे।

1975 में एक दिन अटारी कंपनी के मालिक ने महसूस किया कि उनकी कंपनी द्वारा बनाया गया 'पोंग' वीडियो गेम काफी पुराना हो गया है, इसीलिए उन्होंने इसमें बदलाव लाने के बारे में विचार किया। उसने एक ऐसा गेम बनाने के बारे में सोचा, जिसमें केवल एक ही व्यक्ति खेल सके और उसमें पैडल का भी प्रयोग न करना पड□े। इसके लिए उसने स्टीव जॉब्स से बात की और उन्हें उस तरह के गेम का प्रारूप दिखाते हुए कहा कि वे उसकी डिजाइनिंग करें। कंपनी मालिक ने यह भी कहा कि अगर इस गेम में 50 से भी कम चिप्स का उपयोग होगा तो उन्हें कम की गई हर चिप्स के लिए वेतन के साथ-साथ बोनस भी दिया जाएगा। अंतत: दिन-रात की कड□ी मेहनत के बाद स्टीव जॉब्स ने अपने मित्र वोजनियाक के साथ मिलकर यह गेम तैयार कर दिया। उन्होंने इस गेम में केवल 45 चिप्स का ही उपयोग किया था। अत: जब इस गेम को तैयार करने के बाद जो वेतन स्टीव जॉब्स को मिला, उन्होंने उसमें से आधी रकम वोजनियाक को दे दी।

6

एप्पल की स्थापना

''स्टीव ऐसे सितारे की तरह थे जिसके पीछे पूरी आकाशगंगा घूमती हो। इन सितारों और आकाशगंगाओं की अंतरिक्ष में अपनी व्यवस्था है। इसी तरह स्टीव के उत्पादों की भी अपने आकाश में खुद की व्यवस्था है।''

– शिव नादर
संस्थापक एवं चेयरमैन, एचसीएल ग्रुप
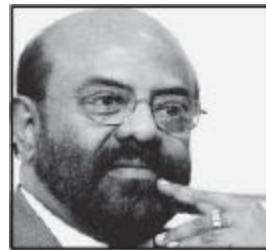
तकनीकी विषय स्टीव जॉब्स के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था और इस विषय में उन्हें महारत भी हासिल थी। विज्ञान जगत में होने वाले परिवर्तनों से वे बहुत प्रभावित थे और उनकी भी यही कोशिश थी कि वे भी विज्ञान के क्षेत्र में कोई ऐसा परिवर्तन लाए, जिसे दुनिया हमेशा याद रखे।

स्टीव जॉब्स बड़े मेहनती व्यक्ति थे। वे दोपहर के समय स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में भौतिकी की कक्षा में जाते थे और रात के समय अटारी कंपनी में काम करते थे। यही उनकी रोज की दिनचर्या थी। वे चाहते थे कि अपना व्यवसाय शुरू किया जाए और इसी कोशिश में वे लगे हुए थे।

यह वह दौर था, जब हिप्पी कल्चर चरमोत्कर्ष पर थी। हिप्पी कल्चर और तकनीकी विचारधारा वाले लोगों के बीच कुछ बातों को लेकर विरोधाभास थे। हिप्पी विचारधारा के लोगों को लगता था कि कंप्यूटर अध्यात्म की राह में रोड़ा है। इन लोगों को लगता था कि मशीनें मानव जीवन के लिए हानिकारक हैं और इनके कारण मानव जीवन के लिए परेशानियां खड़ी हो सकती हैं। अत: इस संबंध में यह प्रचार-प्रसार किया गया कि मशीनें मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी हैं और ये सामाजिक प्रगति के लिए सहायक भी हैं।

उस समय कुछ लोग कंप्यूटर तकनीक पर कार्य कर रहे थे। उनके लिए यह बड़ी उत्सुकता का विषय था, क्योंकि वे चाहते थे कि जल्द-से-जल्द कंप्यूटर को ईजाद किया जाए, जिससे प्रबंधकीय व तकनीकी कार्य को कम समय में करने में मदद मिल सके। कंप्यूटर तकनीक पर कार्य कर रहे लोगों का 'होमब्रिड कंप्यूटर क्लब' नाम से एक क्लब था, जहां पर नवीन आविष्कारों के संबंध में संगोष्ठी होती थी। आविष्कारों और तकनीकों के विषय में खूब विचार-विमर्श होता था।

मार्च, 1975 में एक बुलेटिन प्रकाशित हुआ, जिसमें लिखा था कि जो लोग अपना कंप्यूटर टर्मिनल, टी.वी. और टाइपराइटर आदि बनाने के इच्छुक हैं, वे सभी एकत्र होकर मिलें। नियत

समय के अनुसार, स्टीव जॉब्स और वोजनियाक मीटिंग में गए। एक तरह से यह मीटिंग दोनों के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण साबित हुई। वोजनियाक तो इस मीटिंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसी रात में कंप्यूटर तकनीक पर कार्य करना शुरू कर दिया। वे इतने व्यस्त रहने लगे थे कि उन्हें अपने खाने-पीने की भी सुध-बुध नहीं रही। वे रात में कंप्यूटर तकनीक पर काम करते थे और दिन में एच.पी. तकनीक पर। अंतत: वे अपने उद्देश्य में सफल रहे, जब उनका बनाया हुआ कंप्यूटर टेस्टिंग के लिए तैयार था। यह 19 जून, 1975 का रविवार का दिन था। यह एक ऐतिहासिक घटना थी, जो तकनीकी क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुई।

स्टीव जॉब्स इस नई खोज से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कंप्यूटर के विषय में वोजनियाक से कुछ सवाल पूछे, जिनके जवाब पाकर वे संतुष्ट हो गए। इसके बाद उन्होंने इस नई तकनीक के संबंध में वोजनियाक को सहयोग देना आरंभ कर दिया।

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक दोनों ही अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। स्टीव जॉब्स की एक विशेषता यह थी कि उनमें अपने ग्राहक या विक्रेता को संतुष्ट एवं प्रभावित करने के गुण विद्यमान थे। होमब्रिड कंप्यूटर क्लब उनके लिए बहुत मायने रखता था, इसीलिए उन्होंने वहां लगातार जाना आरंभ कर दिया। इस क्लब की लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी और साथ ही बढ़ रही थी इसके सदस्यों की संख्या। इस क्लब के सदस्यों की संख्या लगभग 100 के पार पहुंच चुकी थी, जिससे यह पता चलता है कि लोगों की मशीनी तकनीक में रुचि बढ़ने लगी थी।

स्टीव जॉब्स की तुलना में वोजनियाक के स्वभाव में कुछ ज्यादा ही शर्मीलापन था। वोजनियाक अपनी ही बनाई हुई चीजों के बारे में लोगों को बताने में झिझक महसूस करते थे। इसके बावजूद उनके द्वारा निर्मित चीजों के आस-पास लोगों की भीड़ लगी रहती थी। वे लोगों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए लोगों को चीजों के बारे में नि:शुल्क जानकारी उपलब्ध कराते थे। स्टीव जॉब्स को यह सब ठीक नहीं लगता था। स्टीव जॉब्स ने वोजनियाक के सामने यह प्रस्ताव रखा कि प्रिंटेड सर्किट बोर्ड तैयार कर उसे बेचा जाए। इस संबंध में स्टीव जॉब्स का मानना था कि अभी देखा जाए तो न तो कोई इस तरह का काम करने के लिए तैयार है और न ही किसी के पास इतना समय है कि कोई भी इस पर कार्य करे।

वोजनियाक को स्टीव जॉब्स का प्रस्ताव अच्छा लगा। वे स्टीव जॉब्स की इस बात से पूरी तरह सहमत थे कि इससे धन तो कमाया ही जा सकेगा, साथ ही उनके द्वारा निर्मित सामान के कारण लोगों की नजरों में उनकी अहमियत भी बढ़ेगी। बाद में दोनों ने एक कंपनी बनाने का फैसला किया। कंपनी बनाने के लिए उन्हें धन की आवश्यकता थी और इसके लिए उन्होंने अपने पास की सभी फालतू वस्तुओं को बेचकर 1,300 डॉलर की राशि एकत्र की। उनके लिए अपनी कंपनी शुरू करने के लिए यह राशि काफी थी।

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक के पास अब अपनी कंपनी शुरू करने के लिए अनेक अच्छे विचार और पर्याप्त धनराशि थी, लेकिन वे कंपनी के नाम को लेकर असमंजस में थे। काफी उधेड़-बुन के बाद स्टीव जॉब्स ने वोजनियाक से कंपनी का नाम सुझाते हुए कहा कि यदि

दोपहर से पहले तक हमें कंपनी का कोई ठीक-ठाक नाम नहीं मिला तो हम अपनी कंपनी का नाम 'एप्पल कंप्यूटर' रख लेंगे। अंतत: वही हुआ, जैसा स्टीव जॉब्स ने कहा था। उन्होंने अपनी नवनिर्मित कंपनी का नाम 'एप्पल कंप्यूटर' रख लिया। 'एप्पल' नाम सरल तो था ही, साथ ही सुपरिचित भी था।

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक नई कंपनी शुरू करने पर बहुत खुश थे। स्टीव जॉब्स चाहते थे कि वोजनियाक इस कंपनी में पूर्णकालिक काम करें, लेकिन वोजनियाक इस बात के लिए राजी नहीं थे। उनका कहना था कि वे दिन के समय अपनी एच.पी. तकनीक पर चल रहे कार्य को जारी रखना चाहते हैं, इसीलिए एप्पल कंपनी के लिए उनकी ओर से पूर्ण समय देना संभव नहीं है।

वोजनियाक के बाद स्टीव जॉब्स ने अपने सहयोगी इंजीनियर रॉन वायने के सामने कंपनी में शामिल होने का प्रस्ताव रखा। स्टीव जॉब्स इस बात से परिचित थे कि रॉन वायने पहले ही अपनी कंपनी की स्थापना कर चुके हैं और उन्हें काफी अच्छा-खासा अनुभव भी है। रॉन वायने एप्पल कंपनी में 10 प्रतिशत की हिस्सेदारी पर शामिल हो गए। बाद में वोजनियाक भी कंपनी में शामिल हो गए थे, लेकिन एक सीमित समय के लिए। स्टीव जॉब्स का वोजनियाक के संबंध में कहना था कि वोजनियाक एक बहुत अच्छे इंजीनियर हैं और इसी तरह वोजनियाक की दृष्टि में स्टीव जॉब्स एक बहुत अच्छे व्यापारी थे।

वोजनियाक के सामने जब यह बात आई कि जो भी कंप्यूटर का नया प्रारूप आएगा, उस पर सबसे पहला हक एप्पल कंपनी का होगा तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि चूंकि वे एच.पी. के कर्मचारी हैं और इसीलिए कंप्यूटर के नए प्रारूप पर पहला हक एच.पी. का ही होगा। इस तरह उन्होंने कंप्यूटर के नए प्रारूप को जब एच.पी. के कर्मचारियों के सामने प्रस्तुत किया, लेकिन उसे स्वीकार करने से मना कर दिया गया। अत: उन्होंने कंप्यूटर के इस नए प्रारूप को खुशी के साथ एप्पल कंप्यूटर कंपनी को दे दिया।

1 अप्रैल, 1976 को एप्पल कंपनी में हिस्सेदारी को लेकर डील बनाई गई, जिसके अंतर्गत कंपनी में स्टीव जॉब्स की हिस्सेदारी 45 प्रतिशत, वोजनियाक की हिस्सेदारी 45 प्रतिशत और रॉन वायने की हिस्सेदारी 10 प्रतिशत तय हुई। इसके साथ ही यह भी तय किया गया कि यदि किसी भी मद पर 100 डॉलर से अधिक खर्च होता है तो उसमें दो हिस्सेदारों की सहमति का होना आवश्यक होगा। इस डील में कंपनी के विभागों का भी विभाजन तय किया गया, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग और मार्केटिंग की जिम्मेदारी स्टीव जॉब्स को, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की जिम्मेदारी वोजनियाक को तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग एवं दस्तावेजों के रख-रखाव की जिम्मेदारी रॉन वायने को सौंपी गई।

एप्पल कंपनी की स्थापना के बाद भी वोजनियाक होमब्रिड कंप्यूटर क्लब से जुड□ रहे और उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी भी वहां होती रही। वोजनियाक ने क्लब के लोगों को कंप्यूटर की खूबियों से भी परिचित कराया, जबकि स्टीव जॉब्स ने अपनी वस्तु की कीमत जानने के लिए लोगों से बातचीत की, लेकिन लोगों ने उनकी बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

इन्हीं लोगों में पॉल टेरेल नामक व्यापारी भी वहीं मौजूद थे। वे एक कंप्यूटर स्टोर के मालिक थे। जब उन्होंने एप्पल कंपनी के कंप्यूटर को देखा तो उन्हें इसमें कुछ विशेष दिखाई दिया। उन्होंने कंप्यूटर को बड□ी बारीकी से जांचा-परखा। इसके बाद संतुष्ट होकर उन्होंने स्टीव जॉब्स को अपना विजिटिंग कार्ड देकर संपर्क में रहने की बात कही।

स्टीव जॉब्स ने अगले दिन टेरेल से संपर्क किया। बातचीत के बाद टेरेल ने स्टीव जॉब्स को 50 कंप्यूटर का ऑर्डर दे दिया। इसमें प्रत्येक कंप्यूटर की कीमत 500 डॉलर रखी गई। स्टीव जॉब्स की खुशी का कोई पारावार नहीं था। उन्होंने यह खुशखबरी तुरंत अपने सहयोगी वोजनियाक को दी। 50 कंप्यूटर के ऑर्डर की बात सुनकर वोजनियाक की भी खुशी की कोई सीमा नहीं रही।

अब स्टीव जॉब्स और वोजनियाक के सामने सबसे बड□ी समस्या यह थी कि 50 कंप्यूटरों को बनाने के लिए काफी मात्रा में पाट्र्स की आवश्यकता थी, जिनकी खरीद-फरोख्त में 15,000 डॉलर का खर्चा था। उनके लिए यह एक बहुत बड□ी राशि थी। इतनी बड□ी राशि का इंतजाम करना उनके लिए बहुत मुश्किल था। इसके लिए उन्होंने अपने दोस्त से संपर्क किया, लेकिन वहां से उन्हें केवल 5,000 डॉलर कर्ज के रूप में मिले। बाकी की राशि के लिए उन्होंने स्थानीय बैंक मैनेजर से संपर्क किया, लेकिन बैंक मैनेजर ने उनकी किसी भी प्रकार की सहायता करने से इंकार कर दिया, फिर भी स्टीव जॉब्स ने हार नहीं मानी और अपनी कोशिशों में लगे रहे। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक पाट्र्स सप्लाई करने वाली हॉलटेक सप्लाई कंपनी से संपर्क किया और उनसे उधार के तौर पर पाट्र्स देने की बात कही, लेकिन उनकी बात को अस्वीकार कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने क्रेमर इलेक्ट्रॉनिक्स के मैनेजर से संपर्क किया और उन्हें अपने प्रस्ताव पर राजी कर लिया। क्रेमर इलेक्ट्रॉनिक्स के मैनेजर उन्हें 30 दिन के लिए उधार के रूप में पाट्र्स देने के लिए राजी हो गया।

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक पाट्र्स की उपलब्धि पर बहुत उत्साहित थे। उन्हें लगने लगा था कि जल्दी ही उनका बीते कल में देखा हुआ सपना आने वाले कल में अवश्य ही पूरा होगा। उनके लिए 50 कंप्यूटर का ऑर्डर किसी बड□े ऑर्डर से कम नहीं था। कंप्यूटर निर्मित करने के लिए स्टीव जॉब्स के पुश्तैनी मकान के गैराज को चुना गया। उनके पास भले ही समय का अभाव था, लेकिन प्रतिभा की कोई कमी नहीं थी।

50 कंप्यूटर की डील को पूरा करने के लिए स्टीव जॉब्स और वोजनियाक ने अन्य लोगों डेनियल कोटक, पेट्टी और एलिजाबेथ को भी काम पर लगा लिया। इस तरह वे सभी अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत करने लगे। जब कोई बोर्ड तैयार हो जाता तो उसकी टेस्टिंग वोजनियाक करते। फिर जो बोर्ड टेस्टिंग में पास हो जाता तो उसे अलग रख दिया जाता। इस कार्य में स्टीव जॉब्स के पिता पॉल जॉब्स ने भी मदद की। अंतत: स्टीव जॉब्स को अपनी दिन-रात की मेहनत का फल मिला। उन्होंने 30 दिनों के नियत समय में पॉल टेरेल के साथ की गई 50 कंप्यूटर की डील को पूरा कर दिया। पॉल टेरेल ने भी अपने वादे के अनुसार, स्टीव जॉब्स को पूरा भुगतान कर दिया। इस तरह एप्पल-I अपने शुरुआती दौर में सफल सिद्ध

हुआ।

एप्पल-I को पहले ही दौर में मिली सफलता ने स्टीव जॉब्स के साथ-साथ उनके सभी सहयोगियों को भी उत्साहित कर दिया था। इस सफलता के कारण उनके कदमों की चाल में तेजी आ गई थी। जब पहली बार स्टीव जॉब्स पॉल टेरेल से मिले थे तो पॉल टेरेल ने स्टीव जॉब्स से कहा था कि (एवरिथिंग शुड बी इनक्लुडेड ओनर्ली इन ए मशीन) सब कुछ एक ही मशीन में होना चाहिए। पॉल टेरेल की यही बात स्टीव जॉब्स के मन-मस्तिष्क में बैठ गई थी। अत: उन्होंने वोजनियाक के साथ मिलकर सब कुछ एक ही मशीन में स्थापित करने का निश्चय किया, ताकि लोगों को यह आकर्षित करने के साथ-साथ प्रभावित भी करे।

स्टीव जॉब्स और वोजनियाक फिर से अपने कार्य में लग गए। उन्होंने 'सब कुछ एक ही मशीन में हो' की बात को ध्यान में रखकर कार्य करना शुरू कर दिया। इस बार भी उनके सामने जो सबसे बड□ी समस्या थी–वह थी धन की। स्टीव जॉब्स ने काफी भागदौड□ की और अपने जानने-पहचानने वालों से अनुरोध भी किया, लेकिन कोई भी इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अंतत: उनकी मुलाकात माइक मारकूला नामक व्यक्ति से हुई, जो उनके कार्य में अपनी ओर से एक-तिहाई पूंजी लगाने के लिए तैयार हो गए।

सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक ही स्टीव जॉब्स और वोजनियाक के बीच कंपनी में हिस्सेदारी को लेकर कुछ मतभेद पैदा हो गए। यहां स्टीव जॉब्स ने बड□ी समझदारी से काम लिया और आपसी विवाद को हल कर लिया। इस तरह फिर से सभी मिल-जुलकर काम करने लगे। इसी बीच मौका देखते हुए स्टीव जॉब्स ने वोजनियाक से अनुरोध किया कि वे एच.पी. की नौकरी छोड□कर पूरी तरह से एप्पल के लिए काम करें, लेकिन वोजनियाक एच.पी. की नौकरी छोड□ने के लिए तैयार नहीं थे। अंतत: जब उन पर स्टीव जॉब्स की दोस्ती और पारिवारिक सदस्यों का दबाव बना तो उन्होंने एच.पी. की नौकरी छोड□ दी और एप्पल कंपनी के लिए पूर्ण रूप से कार्य करने के लिए तैयार हो गए।

अप्रैल, 1977 में सैन फ्रांसिस्को में वेस्ट कोयेस्ट कंप्यूटर फेयर (मेला) का आयोजन किया गया। इस फेयर में स्टीव जॉब्स ने एप्पल-II के नाम से अपना कंप्यूटर प्रस्तुत किया। फेयर में कंप्यूटर के लांचिंग के मौके पर स्टीव जॉब्स, वोजनियाक और माइक मारकूला उपस्थित थे। देखने वालों ने एप्पल-II कंप्यूटर को बहुत पसंद किया। स्टीव जॉब्स और उनके सहयोगियों को यह जानकर बहुत खुशी हुई कि उन्हें एप्पल-II के लिए 300 ऑर्डर मिले। इस तरह एप्पल कंपनी ने प्रगति के पथ पर अपने कदम बड□ी तेजी से बढ□ाने शुरू कर दिए। वोजनियाक ने एप्पल कंपनी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस बात को स्टीव जॉब्स ने हमेशा स्वीकार किया।

स्टीव जॉब्स ने जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत संघर्ष के साथ गहरा नाता बनाए रखा। अपने संघर्षमय जीवन के बारे में जॉब्स ने कई बार खुलासा किया है। 12 जून, 2005 को स्टैनफोर्ड में उन्होंने अपने बारे में बताया कि व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा की आवाज सुननी चाहिए, वही सफलता की वास्तविक मार्गदर्शक है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में उन्होंने अपने जीवन का जो दर्शन

प्रस्तुत किया, उसके कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं–

"मैं दुनिया की बेहतरीन यूनिवर्सिटियों में से एक आपकी यूनिवर्सिटी में आकर आज खुद को सम्मानित महसूस कर रहा हूं। आज मैं आपको अपनी जिंदगी की तीन कहानियां सुनाना चाहता हूं। बस इतना ही। कोई बड़ी बात नहीं। सिर्फ तीन कहानियां।

पहली कहानी कुछ बिंदुओं के मिलन के बारे में है। रीड कॉलेज की पढ़ाई मैंने छह महीने के बाद ही छोड़ दी थी, लेकिन उसके 18 महीनों तक, जब तक कि मैंने वास्तव में पढ़ाई छोड़ न दी, मैं वहां ड्रॉप-इन छात्र के रूप में बना रहा। मैंने पढ़ाई क्यों छोड़ी?

मेरे पैदा होने से पहले ही इसकी शुरुआत हो गई थी। मुझे जन्म देने वाली मां एक अविवाहित कॉलेज ग्रेजुएट थीं और उन्होंने मुझे गोद देने का फैसला किया। उनकी ठोस राय थी कि वे मुझे किसी कॉलेज ग्रेजुएट को ही गोद देंगी, सो मेरे जन्म से पहले ही सब कुछ तय हो गया था कि मुझे एक वकील और उनकी पत्नी गोद लेंगे। जब मैं पैदा हुआ तो अंतिम समय में मुझे गोद लेने वालों ने फैसला बदल दिया कि वे वास्तव में एक लड़की चाहते थे। इसलिए मेरे वर्तमान अभिभावकों को, जो उस वक्त मेरी प्रतीक्षा सूची में थे, आधी रात में फोन आया और उनसे पूछा गया, 'हमारे पास एक बालक है, क्या आप उसे लेना चाहेंगे?' उनका त्वरित जवाब था, 'बेशक।' मुझे जन्म देने वाली मां को जब बाद में पता चला कि मेरी नई मां ने कभी कॉलेज से कोई डिग्री नहीं ली है और मेरे पिता के पास तो हाईस्कूल की भी कोई डिग्री नहीं है तो उन्होंने गोद लेने के आखिरी कागजात पर दस्तखत करने से इंकार कर दिया। कुछ महीनों के बाद वे तब जाकर नरम पड़ीं, जब मुझे गोद लेने वालों ने उनसे वायदा किया कि वे मुझे उच्च शिक्षा जरूर दिलवाएंगे।

17 वर्ष की उम्र में मैंने कॉलेज में दाखिला लिया, लेकिन इसे मेरी बेवकूफी कहिए कि मैंने एक ऐसे कॉलेज का चयन किया, जो स्टैनफोर्ड की तरह ही महंगा था। मेरे कामकाजी माता-पिता की पूरी जमा-पूंजी मेरी ट्यूशन फीस में ही खर्च हो जाती थी। छह महीने के बाद मुझे लगा कि इससे कुछ सार्थक नहीं होने वाला। मुझे उस वक्त कुछ भी नहीं मालूम हो पा रहा था कि आखिर मैं अपनी जिंदगी में क्या चाहता हूं और न ही मैं ये समझ पा रहा था कि आखिर कॉलेज कैसे मुझे अपने जीवन को एक दिशा देने में मदद कर सकता है, जबकि मैं अपने माता-पिता की पूरी जमा-पूंजी अपनी पढ़ाई पर खर्च कर रहा हूं, जो उन्होंने अपने भविष्य के लिए बचाकर रखी है। इसलिए मैंने कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने का निश्चय किया। उस वक्त मेरा वह फैसला यकीनन कुछ भयभीत करने वाला था, लेकिन सच मानिए, आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे यही लगता है कि मैंने अपने जीवन में जो बेहतर फैसले किए हैं, वह उनमें से एक था।

कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने के लगभग 10 साल बाद, जब हम पहले 'मैकिनतोश' कंप्यूटर की डिजाइन तैयार कर रहे थे तो पढ़ाई छोड़ने के बाद जो कुछ भी मैंने सीखा था, मसलन कैलिग्राफी, सेरिफ व सैन सौरिफ टाइपफेस आदि के बारे में जो जानकारियां हासिल की थीं, वे सब मेरे दिमाग में थीं। यदि मैंने एक विषय में ग्रेजुएशन की पढ़ाई नहीं छोड़ी होती तो उम्दा टाइपोग्राफी वाला मैकिनतोश अस्तित्व में न आ पाता। निस्संदेह जब मैं कॉलेज में था,

तब भविष्य के बिंदुओं को जोड□ना नामुमकिन था, लेकिन दस वर्षों के बाद पीछे मुड□कर देखने पर उन बिंदुओं का जुड□ाव साफ-साफ दिख रहा था।

मेरी दूसरी कहानी प्रेम और नाकामयाबी के बारे में है। मैं खुशकिस्मत था कि अपनी जिंदगी के शुरुआती वर्षों में जो कुछ मैं करना चाहता था, मैंने किया। 20 साल की उम्र में वोजनियाक के साथ मैंने अपने पिता के गैराज में एप्पल की शुरुआत की। हमने कड□ी मेहनत की और दस वर्ष के भीतर ही यह दो बिलियन डॉलर की कंपनी हो गई। हमने अपनी सर्वश्रेष्ठ कल्पनाशीलता की उपज 'मैकिनतोश' को एक साल पहले ही लॉन्च किया था और उस वक्त मेरी उम्र 30 साल ही थी, फिर मुझे निशाना बनाया गया। आखिर जिस कंपनी की शुरुआत आपने की हो, वह आप पर कैसे हमलावर हो सकती है? दरअसल, एप्पल की तरक्की के साथ हमने एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को चुना, जिनके बारे में मेरी राय थी कि वे मेरे साथ अच्छी तरह से कंपनी चला सकते हैं। शुरुआत में सब कुछ ठीक रहा, लेकिन फिर भविष्य को लेकर हमारे दृष्टिकोणों में अंतर आने लगा और धीरे-धीरे हम संबंध टूटने के कगार पर पहुंच गए। निदेशक मंडल ने उनका साथ दिया और मैं कंपनी से बाहर कर दिया गया। उस समय मेरी उम्र 30 वर्ष थी। यह मेरे लिए बेहद असहनीय था।

कुछ महीनों तक मैं समझ ही नहीं पाया कि आखिर क्या करूं? बहरहाल, अगले पांच वर्ष के दौरान मैंने एक नई कंपनी की शुरुआत की। उसका नाम रखा, 'नेक्स्ट। एक अन्य कंपनी का नाम 'पिक्सर' रखा। उसी समय मुझे एक बेमिसाल औरत से प्यार हुआ और वह मेरी बीवी बनी। पिक्सर ने दुनिया का पहला कंप्यूटर एनीमेटेड फीचर फिल्म 'ट्वॉय स्टोरी' प्रस्तुत किया। आज इसके पास दुनिया का अत्यंत कामयाब एनमिशन स्टूडियो है। फिर उल्लेखनीय घटनाक्रम के तहत एप्पल ने नेक्स्ट को खरीद लिया और फिर एप्पल से जुड□ गया। नेक्स्ट में जो टेक्नोलॉजी हमने विकसित की थी, वह एप्पल की ताजा कामयाबी के मूल में है। लॉरेंस के साथ मेरा परिवार खुशहाल है। मुझे पक्की राय है कि यदि एप्पल से मुझे निकाला नहीं गया होता तो ये तमाम उपलब्धियां मैं हासिल नहीं कर पाता।

मेरी आखिरी कहानी मौत के बारे में है। लगभग एक वर्ष पहले मुझे पता चला कि मैं कैंसर का शिकार बन गया हूं। एक सुबह 7:30 बजे मेरा स्कैन हुआ और उसमें मेरे पैंक्रियाज में ट्यूमर साफ दिख रहा था। डॉक्टरों ने मुझे बताया कि यह एक तरह का कैंसर है, जिसका इलाज मुमकिन नहीं, फिर अचानक एक दिन जांच के दौरान डॉक्टरों ने कहा कि आपका रोग अलग तरह का है और ऑपरेशन के जरिए इसका इलाज हो सकता है। मुझे कुछ दशक और मिल गए।

'दोस्तों, कोई भी मरना नहीं चाहता लेकिन समय तो सबका तय है। इसलिए इसे दूसरों की जिंदगी जीने में जाया मत करो। दूसरों की नुक्ताचीनी पर बहुत ध्यान मत दो। सिर्फ अपनी अंतरात्मा की सुनो और उसी के मुताबिक अनुसरण करो।'

7

एप्पल में अंदरूनी कलह

''स्टीव और मैं 30 वर्ष पहले मिले थे। इसके बाद हमने एक साथ काम किया, एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी बने और मित्र भी रहे। दुनिया ने ऐसे कम ही लोगों को देखा है, जिन्होंने स्टीव जितना असर डाला हो। मैं भाग्यशाली हूं कि मैंने उनके साथ काम किया।''

बिल गेट्स,
संस्थापक माइक्रोसॉफ्ट

स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी के लिए पूरी तरह समर्पित थे। वे इस कंपनी को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान, एक नई दिशा देना चाहते थे। वे अपने उद्देश्य की पूर्ति में इतने व्यस्त हो गए थे कि उन्होंने अपनी मित्र ब्रेनन को भी भुला दिया था। स्टीव जॉब्स रॉबर्ट फ्रिडलैंड के फार्म हाउस पर रह रहे थे कि तभी उनकी मित्र ब्रेनन भी वहीं आकर रहने लगीं। कुछ समय पहले जब स्टीव जॉब्स भारत दौरे पर आए थे तो उस समय उनके और ब्रेनन के संबंध खत्म हो गए थे, लेकिन अब फिर से उनके संबंध सुधरने लगे थे।

1975 की शुरुआत में ब्रेनन की मित्रता ग्रेग कोलहान नामक व्यक्ति से हो गई। वे अधिकतर समय ग्रेग के साथ ही रहती थीं, लेकिन चूंकि स्टीव जॉब्स भी पास में ही रहते थे इसलिए वे उनसे मिलने भी आ जाती थीं। 1976 में ग्रेग ने भारत आने का निश्चय किया और इस दौरे पर वे ब्रेनन को भी अपने साथ ले जाना चाहते थे। जब यह बात स्टीव जॉब्स को पता चली तो उन्होंने ग्रेग को समझाया कि वे ब्रेनन को अपने साथ न ले जाएं, लेकिन ग्रेग नहीं माने और वे ब्रेनन को साथ लेकर मार्च, 1976 में भारत आ गए।

ग्रेग और ब्रेनन को भारत में आए ज्यादा समय नहीं हुआ था कि उनके पास धन की कमी हो गई। अत: ग्रेग ब्रेनन को भारत में ही छोड□कर ईरान आ गए और यहां तेहरान शहर में एक अंग्रेजी विषय के शिक्षक के तौर पर नौकरी करने लगे। बाद में ग्रेग और ब्रेनन की मुलाकात अफगानिस्तान में हुई, लेकिन उस समय तक दोनों के संबंधों में मतभेद पैदा हो गए थे। इसी कारण दोनों एक-दूसरे से अलग हो गए।

1977 में ब्रेनन वापस लॉस अल्टो आ गईं। इसी दौरान स्टीव जॉब्स भी अपना पैतृक निवास छोड□कर अपने मित्र कोटक के साथ एक किराए के मकान में रहने लगे थे। कुछ समय बाद ब्रेनन भी इसी मकान में आकर रहने लगी थीं। धीरे-धीरे स्टीव जॉब्स और ब्रेनन के संबंधों में मधुरता की मिठास घुलने लगी थी।

स्टीव जॉब्स और ब्रेनन की मित्रता में फिर से प्रगाढ□ता आ गई थी। दोनों एक-दूसरे को काफी समय देने लगे थे। एक दिन स्टीव जॉब्स को पता चला कि ब्रेनन गर्भवती हैं। इस बात का पता चलना था कि उनके बीच फिर से दरार पैदा हो गई। स्टीव जॉब्स यह मानने के लिए तैयार ही नहीं थे कि ब्रेनन के गर्भ में जो बच्चा है, वह उनका है। इस बात को लेकर दोनों के बीच बहुत कहा-सुनी हुई। आए दिन उनके बीच कलह होने लगी। अंतत: जब पितृत्व जांच हुई यानी डी.एन.ए. जांच हुई तो उसमें पता चला कि ब्रेनन के गर्भ में पलने वाला बच्चा स्टीव जॉब्स का ही है।

स्टीव जॉब्स को अभी भी यह संदेह था कि ब्रेनन के गर्भ में पलने वाला बच्चा उनका नहीं, बल्कि किसी और का है। हालांकि डी.एन.ए. की जांच में यह स्पष्ट हो गया था कि यह बच्चा उन्हीं का ही है, लेकिन फिर भी वे यह मानने के लिए तैयार ही नहीं थे। अंतत: जब स्टीव जॉब्स ने ब्रेनन से गर्भपात कराने की बात कही तो उनके मित्र रॉबर्ट फ्रिडलैंड ने उनकी बात का कड□ा विरोध किया। उन्होंने सलाह दी कि इस बच्चे को भी हम सबकी तरह इस दुनिया में आंखें खोलने का अधिकार है। इस तरह 17 मई, 1978 को ब्रेनन ने एक सुंदर और स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया। बच्ची का नामकरण लिजा निकोल ब्रेनन किया गया। इसके बाद स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी में आ गए और उन्होंने यह फैसला कर लिया था कि वे अब ब्रेनन से किसी भी प्रकार का कोई संबंध नहीं रखेंगे। स्थानीय अदालत ने भी ब्रेनन के पक्ष में अपना फैसला सुनाते हुए कहा था कि लिजा के भरण-पोषण की जिम्मेदारी स्टीव जॉब्स ही उठाएंगे। अत: अदालती फैसले के बाद स्टीव जॉब्स ब्रेनन को लिजा के पालन-पोषण के लिए खर्चा देने लगे।

एप्पल-II की सफलता ने एप्पल कंपनी को कंप्यूटर उद्योग का कॉर्पोरेट हाउस बना दिया था। एक के बाद एक ऑर्डर एप्पल कंपनी को मिलने शुरू हो गए। 1977 में एप्पल की बिक्री जहां केवल 2,500 के आस-पास थी, वहीं केवल 4 साल के अंदर 1981 में बड□ी तेजी से बढ□कर यह बिक्री 2,10,000 हो गई। स्टीव जॉब्स को इससे संतुष्टि नहीं मिली और वे इसमें और बेहतर करने के लिए जुट गए। स्टीव जॉब्स के दिमाग में यह विचार उभर आया था कि उन्हें अब कंप्यूटर में सुगमता एवं सरलता के लिहाज से थोड□ा- बहुत बदलाव करने की आवश्यकता है। वे जानते थे कि थोड□े समय बाद ही लोग इसकी जटिलता से ऊब जाएंगे।

स्टीव जॉब्स अपनी कंपनी के कंप्यूटर को और भी सरल बनाना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने अपनी जद्दोजहद जारी रखी। उन्होंने कुछ गिने-चुने अच्छे इंजीनियरों का चुनाव किया। उनके मन-मस्तिष्क में टच स्क्रीन तकनीक की बात पैदा हो गई थी। वे चाहते थे कि टच स्क्रीन तकनीक को जल्दी-से-जल्दी बाजार में उतारा जाए और इसके लिए वे प्रयासरत हो गए।

स्टीव जॉब्स, अपनी प्रेमिका ब्रेनन से न तो कोई संबंध रखना चाहते थे और न ही ब्रेनन से पैदा हुई लिजा को अपनी बेटी मानने के लिए तैयार थे। इसके बावजूद भी उन्होंने अपने नवनिर्मित कंप्यूटर का नाम 'लिजा' ही रखा।

1977 में एप्पल कंपनी की पूंजी 5, 309 डॉलर थी, लेकिन केवल तीन साल में (1980 तक) इसकी कुल जमा पूंजी 1.79 अरब डॉलर हो गयी। इस प्रगति में स्टीव जॉब्स की अति

महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। 12 दिसंबर, 1980 को एप्पल कंपनी ने पूंजी बाजार में पब्लिक इश्यू के माध्यम से प्रवेश किया। स्टीव जॉब्स की मेहनत रंग दिखाने लगी थी। 12 दिसंबर की सुबह को निर्गम बैंकरों ने एप्पल के एक स्टॉक की कीमत 22 डॉलर मूल्यांकित की, लेकिन शाम होते-होते इस कीमत में भारी उछाल आया और यह कीमत 22 डॉलर से बढ□कर 29 डॉलर प्रति स्टॉक हो गई। यह ऐसा दूसरा अवसर था जब 1956 में फोर्ड मोटर्स के पब्लिक इश्यू के बाद कोई कंपनी सबसे अधिक मांग वाले हॉट पब्लिक इश्यू के पायदान पर चढ□ी।

एप्पल कंपनी ने कई लोगों को करोड□पति बना दिया और इसका कारण था कि इस कंपनी ने पूंजी बाजार में प्रवेश करने से पहले अपने कर्मचारी को भी स्टॉक को क्रय करने का सुनहरा अवसर दिया था। इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाते हुए कर्मचारियों ने बड□ी मात्रा में शेयर क्रय किए थे, लेकिन स्टीव जॉब्स ने अपने घनिष्ठ मित्र डेनियल कोटक को कर्मचारियों को मिलने वाले शेयर नहीं दिए। जब डेनियल ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि डेनियल को शेयर न मिलने का कारण उनका प्रतिघंटा कर्मचारी के रूप में कार्य करना था। स्टीव जॉब्स ने बताया था कि कंपनी के शेयर प्राप्त करने के लिए कंपनी का वेतनभोगी कर्मचारी होना आवश्यक है।

डेनियल ने फिर भी अपनी उम्मीद नहीं छोड□ी और उन्होंने एक बार फिर ऑफिस के बाहर स्टीव जॉब्स से बात करने के बारे में सोचा। जब डेनियल ने मौका देखकर स्टीव जॉब्स से बात की तो उन्होंने बताया कि वे उनके ऑफिस से इस संबंध में बात करें, लेकिन उन्हें विपरीत जवाब ही मिला। इससे डेनियल क्रोधित हो गए और उन्होंने अपनी दोस्ती को भी दांव पर लगा दिया। यह पूरा वाकया बड□ा दर्दनाक था।

एप्पल कंपनी के एक इंजीनियर रॉड हॉल्ट को यह बात बड□ी नागवार गुजरी। उन्होंने एक दिन इस संबंध में स्टीव जॉब्स से बात की और उनसे कहा कि डेनियल आपके मित्र हैं और काफी लंबे समय से आपके साथ काम भी कर रहे हैं, इसलिए हमें उनकी कुछ-न-कुछ मदद जरूर करनी चाहिए। रॉड ने स्टीव जॉब्स से कहा कि वे अपने हिस्से में से कुछ शेयर डेनियल को देंगे और आप क्या देंगे? इस पर स्टीव जॉब्स ने बड□े रूखे स्वभाव से कहा कि उन्हें मेरी ओर से केवल जीरो ही मिलेगा। इस बात का पता जब डेनियल को चला तो उन्हें बड□ा दुख हुआ।

दूसरी ओर स्टीव जॉब्स ने अपने माता-पिता को लगभग 7,50,000 डॉलर मूल्य के शेयर दिए। इनमें से कुछ शेयरों का उपयोग उन्होंने अपने गिरवी रखे हुए मकान को छुड□वाने में कर लिया। इस मौके पर स्टीव जॉब्स ने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर जश्न भी मनाया। यह बड□ी विडंबना की बात थी कि शुरुआती चरण से अपने परम मित्र डेनियल के साथ स्टीव जॉब्स ने बड□ा रूखा व्यवहार किया था।

जहां स्टीव जॉब्स का व्यवहार बहुत सख्त था, वहीं उनके मित्र वोजनियाक का व्यवहार बहुत नरम था। वोजनियाक कर्मचारियों के बीच अपने सहानुभूति और मित्रतापूर्ण व्यवहार के लिए जाने जाते थे। इसका पता इस बात से चलता है कि उन्होंने अपने शेयरों में से लगभग 2,000 शेयर कंपनी के लगभग 40 कर्मचारियों को बहुत ही सस्ते में बेच दिए थे।

स्टीव का मानना था कि समय के अनुसार परिवर्तन अत्यंत आवश्यक है। यदि समय की मांग के अनुसार परिवर्तन नहीं किया जाता तो आप दौड़ से बाहर हो जाएंगे और इतनी पीछे रह जाएंगे कि फिर कभी शायद ही आगे बढ़ने का मौका हाथ लगे। कंप्यूटर में आते परिवर्तन को देखते हुए स्टीव जॉब्स ने अपने उत्पादों में परिवर्तन लाने की ठानी। एप्पल-I और एप्पल-II के बाद स्टीव जॉब्स ने लिजा को बाजार में उतारा, जिसे अपेक्षानुसार प्रशंसा मिली।

लिजा के बाद स्टीव जॉब्स ने सुगमता और सरलता के लिहाज से अन्य कंप्यूटर को बाजार में उतारने का फैसला किया। उन्हें लगता था कि इस बार जो कंप्यूटर बनाया जाए वह आम जनता के लिए हो, जबकि लिजा कंप्यूटर आम जनता के लिहाज से अधिक महंगा था। उन्होंने इस कार्य के लिए प्रतिभाशाली इंजीनियरों की तलाश शुरू कर दी। उनकी मुलाकात रस्किन नामक इंजीनियर से हुई, जो अपने कार्य में निपुण थे। हालांकि रस्किन और स्टीव जॉब्स का साथ ज्यादा लंबा नहीं चला और कुछ समय बाद ही रस्किन ने स्टीव जॉब्स का साथ छोड़ दिया।

रस्किन का स्टीव जॉब्स के बारे में मानना था कि स्टीव जॉब्स बड़े ही सख्त और खतरनाक दिखने वाले मैनेजर हैं। इसीलिए मेरे लिए उनके साथ कार्य करना बहुत ही मुश्किल है। उनके काम करने का तरीका भी बहुत अलग है। अगर आपने कोई काम प्रशंसा के लायक किया है तो भी वे न तो उसके लिए प्रशंसा करेंगे और न ही कोई श्रेय देंगे।

जब रस्किन ने स्टीव जॉब्स का साथ छोड़ दिया तो फिर स्टीव जॉब्स ने अपनी अगली परियोजना मैकिनतोश के लिए हट्‌र्ज फेड नामक इंजीनियर को नियुक्त कर लिया। हट्‌र्ज ने स्टीव को समझाया कि वे एप्पल-II परियोजना को पूरा कर फिर मैकिनतोश परियोजना पर काम करें, लेकिन स्टीव जिद के पक्के थे। उन्होंने हट्‌र्ज से कहा कि अब एप्पल-II के बारे में सोचना भी फिजूल की बात है, क्योंकि कुछ समय बाद एप्पल-II को लोग भूल जाएंगे। मैं मानता हूं कि एप्पल का भविष्य मैकिनतोश है और अब हमें मैकिनतोश पर ही पूरी ताकत और मेहनत के साथ काम करना चाहिए।

मैकिनतोश परियोजना को लेकर स्टीव जॉब्स का उत्साह देखते ही बनता था। वे इस परियोजना को बहुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनके अंदर एक बेचैनी थी। वे दिन में कई-कई बार कार्यरत इंजीनियरों के कमरों में घुस जाते थे और उनके कार्य का निरीक्षण करते। कभी-कभी वे इंजीनियरों को उनके कार्य के प्रति चुनौती भी देते थे। वे अपने कर्मचारियों से कहते थे कि कम समय में और कम कीमत पर अधिक-से-अधिक काम किया जाए।

कभी-कभी तो स्टीव जॉब्स सीधे ही इंजीनियरों से बहस करने लगते थे। एक दिन वे स्टीव लैरी कोनियान नामक इंजीनियर के कमरे में गए और उनसे कहा कि आपके ऑपरेटिंग सिस्टम में काम करने में कुछ ज्यादा ही समय लग रहा है। कोनियान ने स्टीव जॉब्स को समझाया भी कि जैसा वे सोच रहे हैं, ऐसी बात नहीं है। फिर भी स्टीव जॉब्स नहीं माने और उन्होंने कोनियान से कहा कि जिस तरह किसी मरने वाले के लिए 10 सेकेंड बहुत होते हैं, ठीक उसी तरह 10 सेकेंड का बहुमूल्य समय बचाओ। अंतत: कोनियान को स्टीव जॉब्स की बात स्वीकार करनी पड़ी।

स्टीव जॉब्स चाहते थे कि इस बार जो कंप्यूटर बनाया जाए, वह सस्ता होने के साथ ही डिजाइन में आकर्षक भी हो। पहले उनका ऑफिस अपने ही घर के गैराज में हुआ करता था, लेकिन अब उनका ऑफिस एक ऐसी बिल्डिंग में था, जिसके अधिकांश हिस्से में सोनी कंपनी का ऑफिस था। वे अक्सर सोनी की बनी हुई डिजाइन और उसके रंग को बड़े ध्यान से देखते थे, लेकिन उन्हें उसके रंग में कमी नजर आती थी। सोनी के अधिकांश उत्पाद काले रंग के होते थे और वे इस रंग को बहुत कम पसंद करते थे।

जून, 1981 में ऐस्वेन में एक डिजाइन मेले का आयोजन किया गया। इसमें स्टीव जॉब्स ने भी भाग लिया। इस मेले में इटैलियन डिजाइनों का बोलबाला था। स्टीव जॉब्स जो चाहते थे, वह उन्हें इस मेले में कहीं भी दिखाई नहीं दिया। उनका मानना था कि उत्पाद का डिजाइन बहुत ही सरल हो और ग्राहक को उसे समझने में भी ज्यादा परेशानी न हो। उनकी यही सोच आगे चलकर एप्पल कंपनी का मूल मंत्र बन गई।

डिजाइन के मामले में स्टीव जॉब्स ने बड़ी सतर्कता दिखाई। कंपनी के इंजीनियर आए दिन उनके सामने काफी मेहनत से तैयार किए गए डिजाइन लेकर आते, लेकिन स्टीव जॉब्स जो चाहते थे, वह उनमें दिखाई नहीं देता था। इसी कारण उन्होंने न जाने कितने डिजाइनों को निरस्त किया। काफी जद्दोजहद और कठिन परिश्रम के बाद स्टीव जॉब्स को उनका मनपसंद डिजाइन मिल सका।

अपने मनपसंद डिजाइन मिलने की स्टीव जॉब्स को इतनी खुशी हुई कि उन्होंने इसके उपलक्ष्य में मैकिनतोश टीम के लिए एक पार्टी का आयोजन किया। इस अवसर पर स्टीव जॉब्स ने अपनी टीम के 45 साथियों को शाबाशी दी और उनसे इस कार्य के फलस्वरूप एक कागज पर हस्ताक्षर भी करवाए। यह स्टीव जॉब्स के लिए ही नहीं, बल्कि कंपनी के सभी कर्मचारियों के लिए बड़ी खुशी का दिन था, जिसे स्टीव जॉब्स ने सभी के लिए यादगार बना दिया था।

8

एक अच्छे कला-पारखी

''उत्कृष्टता, इनोवेशन और लोगों को खुश करना–जॉब्स इन मूल्यों को मानने वाले थे। उन्हें बनाने के लिए ईश्वर को धन्यवाद! उनके चले जाने से मैं बहुत उदास हूँ। वे मेरे हीरो थे, मेरे रोल मॉडल थे और मेरी प्रेरणा थे। उनके जितना कूल न कोई था और न कोई होगा।''

– चेतन भगत
बहुचर्चित लेखक

स्टीव जॉब्स एक नहीं, बल्कि अनन्य गुणों के धनी व्यक्ति थे। उनमें कलाकार की कला को पहचानने की अद्भुत क्षमता थी और इसी क्षमता के कारण वे सफलता की ऊंचाइयों को छू रहे थे। उनकी जिंदगी का सफर एक गैराज में केवल 5-7 व्यक्तियों के साथ मिलकर छोटी-सी कंपनी खोलने से शुरू हुआ था और अब उनका ऑफिस एक ऐसी जगह पर था, जहां के अधिकांश हिस्से में विश्व की जानी-पहचानी कंपनी सोनी का ऑफिस था। स्टीव जॉब्स की सबसे बड□ी विशेषता यह थी कि कार्य में सफलता मिलने के बाद वे रुकते नहीं थे, बल्कि और भी तेज चाल के साथ आगे बढ□ने की कवायद में रहते थे। यही वजह थी कि वे उस मुकाम पर जा पहुंचे थे, जिसके अक्सर लोग ख्वाब ही देखते रह जाते हैं।

एप्पल कंपनी के प्रारंभिक दौर से ही माइक मारकूला स्टीव जॉब्स के साथ थे। स्टीव जॉब्स चाहते थे कि मारकूला एप्पल कंपनी के सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) बनें, जबकि मारकूला ऐसा नहीं चाहते थे। सीईओ पद से ज्यादा मारकूला की रुचि नए-नए डिजाइनों के घर बनाने और ऊंचे मूल्यों वाले शेयरों में थी। मारकूला के पास काबिलयत थी, प्रतिभा थी और सबसे बड□ी बात उनके पास काफी धन-दौलत था, लेकिन इसके बावजूद घमंड उन्हें जरा भी नहीं छू गया था। 1982 में मारकूला की पत्नी ने उनसे कहा था कि वे अपने उचित प्रतिस्थापन की खोज करें, अन्यथा वे कभी भी सीईओ पद को नहीं छोड□ पाएंगे।

स्टीव जॉब्स भी नहीं चाहते थे कि वे अपनी कंपनी को नियंत्रित करें। हालांकि वे चाहते तो कंपनी के सीईओ बड□ी आसानी से बन सकते थे, लेकिन मारकूला ने उन्हें समझाया था कि अभी वे एप्पल कंपनी के सीईओ पद के लिए परिपक्व नहीं हैं। शायद यही कारण था कि स्टीव जॉब्स ने खुद को इस पद की दौड□ से दूर कर लिया था। उन्होंने अपनी कंपनी के सीईओ पद के लिए योग्य व्यक्ति की तलाश शुरू कर दी।

इस खोजबीन के दौरान स्टीव जॉब्स की मुलाकात आईबीएम कंपनी का पी.सी. बनाने वाले डॉन एस्टरिज से हुई। स्टीव जॉब्स ने एस्टरिज के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वे उन्हें अपनी

कंपनी में सीईओ पद के लिए एक मिलियन डॉलर वेतन और इतनी ही धनराशि हस्ताक्षर के समय बोनस के रूप में देंगे, लेकिन एस्टरिज ने इतने आकर्षक पैकेज को ठुकरा दिया। एस्टरिज ने स्टीव जॉब्स से कहा कि वे उन लोगों में से नहीं हैं, जो अपने लोगों का साथ छोड़कर दुश्मनों के साथ दोस्ती कर लें। आईबीएम कंपनी में एस्टरिज एक सम्मानित सदस्य थे और वे नहीं चाहते थे कि वे इस सम्मान के बदले अपनी कंपनी के साथ कोई धोखाधड़ी करें।

जब एस्टरिज ने स्टीव जॉब्स का ऑफर ठुकरा दिया तो फिर भी स्टीव जॉब्स निराश नहीं हुए और उन्होंने अपनी खोजबीन जारी रखी। उन्होंने बड़ी गहराई से सोचा कि उनकी कंपनी के लिए एक उच्च तकनीक वाले इंजीनियर की तुलना में मार्केटिंग और विज्ञापन की महारत रखने वाला व्यक्ति अधिक उपयुक्त रहेगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्टीव जॉब्स ने पेप्सी कंपनी के प्रेसीडेंट जॉन स्कूली से मुलाकात करने का निश्चय किया। इससे पहले कि स्टीव जॉब्स जॉन स्कूली से मुलाकात करते, जॉन स्कूली अचानक ही एक दिन एप्पल कंपनी के मुख्यालय पर आ गए। स्टीव जॉब्स जॉन स्कूली को अपने ऑफिस में देखकर आश्चर्यचकित रह गए। यहां उनका बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

स्टीव जॉब्स और जॉन स्कूली ने साथ-साथ भोजन किया। इस दौरान स्कूली को स्टीव जॉब्स ने बताया कि वे एक ऐसा कंप्यूटर बना रहे हैं, जो सभी के लिए उपलब्ध हो। उनका कहना था कि वे लोगों के कंप्यूटर के उपयोग का तरीका बदलना चाहते हैं। इतनी-सी संक्षिप्त बातचीत के बाद स्कूली वापस लौट गए।

एक दिन स्कूली ने स्टीव जॉब्स को 8 पृष्ठ का एक विज्ञापन मेमो भेजा, जिसमें स्कूली ने कंप्यूटर मार्केटिंग की रणनीति का ब्यौरा दिया था। स्कूली ने बताया था कि उत्पाद की मार्केटिंग पर नहीं, बल्कि उत्पाद से जीवन में क्या परिवर्तन आ सकता है, इस पर विज्ञापन किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि पेप्सी के लिए उन्होंने ऐसा ही किया था। उनकी इस बात से स्टीव जॉब्स प्रभावित ही नहीं हुए, बल्कि सहमत भी हुए।

स्टीव जॉब्स को महसूस होने लगा था कि उनकी कंपनी के सीईओ पद के लिए जॉन स्कूली एक उपयुक्त व्यक्ति हैं। स्टीव जॉब्स ने जब यह प्रस्ताव स्कूली के सामने रखा तो स्कूली ने एक मिलियन डॉलर वेतन और इतनी ही धनराशि हस्ताक्षर के समय बोनस के रूप में मांगी। स्टीव जॉब्स ने कहा कि यह तो बहुत अधिक है। हालांकि इसकी अदायगी मुझे अपनी कमाई में से करनी होगी, लेकिन इस तरह की समस्याएं हम आपस में बैठकर सुलझा लेंगे। मुझे लगता है कि मुझे जिस व्यक्ति की तलाश थी, वह तुम पर आकर समाप्त हो गई। मैं उम्मीद करता हूं कि एप्पल कंपनी के लिए तुम एक अच्छे नेतृत्वकर्ता साबित होगे।

इस तरह जॉन स्कूली ने सीईओ के रूप में एप्पल कंपनी ज्वॉइन कर ली। स्टीव जॉब्स एक अच्छे, योग्य और प्रतिभाशाली नेतृत्वकर्ता के रूप में स्कूली को पाकर बहुत खुश थे। उनकी यह सोच सही भी थी। स्कूली वास्तव में एक कुशल नेतृत्वकर्ता के रूप में पेप्सी कंपनी में नाम और शोहरत कमा चुके थे।

एक दिन स्कूली ने स्टीव जॉब्स के सामने अपना प्रस्ताव रखा कि हमें किस प्रकार अपने उत्पादों एप्पल-I, एप्पल-II, लिजा और मैकिनतोश में अंतर करना चाहिए और किस प्रकार हमें अपने उत्पादों के संबंध में बाजार के लिहाज से रणनीति अमल में लानी चाहिए, लेकिन स्टीव जॉब्स ने स्कूली की बातों को अनसुना कर दिया। उनके दिल में जैसे ही लिजा का नाम आया तो वे आक्रामक हो उठे। उन्होंने तभी गुस्से से तमतमाते हुए कहा कि लिजा उनके द्वारा बनाया गया एक असफल उत्पाद है, जिस पर उन्हें बेहद अफसोस है। उसी समय एक अन्य इंजीनियर ने स्कूली से कहा कि जब एक बढि□या उत्पाद बाजार में आने के लिए तैयार है तो फिर आपको उसका इंतजार करने में क्या परेशानी है? यूं आलोचनात्मक रवैया अपनाने से कोई फायदा नहीं। इस तरह की बातों को सुनकर स्कूली को यह समझते देर नहीं लगी कि इस कंपनी में सभी एक-दूसरे से चार कदम आगे हैं। उन्हें इस दौरान अपनी पूर्व कंपनी पेप्सी की याद आई, जहां किसी में भी अपने प्रेसीडेंट की बात का विरोध करने की हिम्मत नहीं थी।

कुछ समय बाद स्कूली ने महसूस किया कि उनके और स्टीव जॉब्स के विचारों में बहुत भारी अंतर है। उनके बीच वैचारिक मतभेद भी पैदा हो गए थे। इसका पहला मामला तब सामने आया, जब मैकिनतोश का मूल्य निर्धारण हुआ। शुरुआत में मैकिनतोश का मूल्य 1,000 डॉलर निर्धारित किया गया, लेकिन स्टीव जॉब्स ने मैकिनतोश के डिजाइन में भारी परिवर्तन किया था जिसमें काफी लागत आई थी। अत: इस बात को देखते हुए मैकिनतोश का मूल्य 1,995 डॉलर निर्धारित किया गया, लेकिन जब इसके लांच करने की बात सामने आई तो पता चला कि इस अवसर पर काफी खर्चा आएगा और फिर साथ ही मार्केटिंग में भी अधिक धनराशि खर्च होगी। अत: एक बार फिर से मूल्य निर्धारण का फैसला बदला गया। अंतत: मैकिनतोश का मूल्य 2,495 डॉलर निर्धारित किया गया। स्टीव जॉब्स को यह मूल्य कुछ अधिक लगा, इसलिए उन्होंने इसमें कमी लाने की बात कही। उनका मानना था कि मैकिनतोश साधारण लोगों के लिए है।

जनवरी, 1984 में मैकिनतोश को लांच किया गया। मैकिनतोश की लांचिंग के मौके पर स्टीव जॉब्स ने बहुत मेहनत की थी। उन्होंने शेयर धारकों की एक मीटिंग बुलाई, जिसमें सीईओ स्कूली ने कंपनी के परिणाम प्रस्तुत किए। लांचिंग प्रोग्राम अपेक्षानुसार सफल रहा। इससे स्टीव जॉब्स इतने खुश और उत्साहित हुए कि उन्होंने मैकिनतोश टीम के प्रत्येक सदस्य को एक-एक कंप्यूटर उपहारस्वरूप दिया। स्टीव जॉब्स के इस व्यवहार ने सभी को खुश होने का अवसर प्रदान किया, जिसका वे लंबे समय से इंतजार कर रहे थे।

जैसा स्टीव जॉब्स चाहते थे, वैसा ही हुआ। मैकिनतोश को सफलतापूर्वक लांच किया गया। मैकिनतोश की लोगों ने जमकर सराहना की। यह देखकर स्टीव जॉब्स को संतुष्टि मिली। इसी बीच स्कूली ने लिजा एवं मैकिनतोश निर्माण डिवीजन को संयुक्त रूप से मिलाकर उसका चार्ज स्टीव जॉब्स के हाथों में सौंप दिया। स्टीव जॉब्स को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने लिजा पर मैकिनतोश को अधिक तरजीह दी। उनका मानना था कि लिजा का स्टाफ मैकिनतोश के स्टाफ की बराबरी नहीं कर सकता। यही नहीं, वे लिजा के स्टाफ के प्रति रूखा व्यवहार करने लगे थे। उन्होंने इस स्टाफ के कुछ कर्मचारियों को कपंनी से बाहर का रास्ता भी दिखा दिया था। कंपनी

के एक इंजीनियर बिल एरकिंसन को स्टीव जॉब्स का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा था। उन्होंने स्टीव जॉब्स के इस व्यवहार को गलत कहा था। बिल लिजा और मैकिनतोश दोनों ही स्टाफ में कार्य करते थे और उनका मानना था कि लिजा स्टाफ के कर्मचारी भी बहुत मेहनती हैं और उन्हें किसी से भी कमतर नहीं आंका जाना चाहिए। स्कूली को भी स्टीव जॉब्स का इस तरह का व्यवहार अच्छा नहीं लगता था। इसी कारण उनके बीच भी कुछ बातों को लेकर वैचारिक मतभेद पैदा हो गए थे। उन्होंने अपनी ओर से पूरी कोशिश की कि उनके बीच पैदा हुए मतभेद बाहर न आए, लेकिन किसी-न-किसी रूप में वे दृष्टिगोचर होने लगे थे।

मई, 1984 में स्कूली को एप्पल कंपनी में सीईओ का पद संभाले हुए एक साल हो गया था। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए स्टीव जॉब्स ने एक पार्टी का आयोजन किया। पार्टी में स्टीव जॉब्स ने कंपनी के उच्च पदों पर विराजमान लोगों को आमंत्रित किया। स्कूली के लिए यह सब बहुत हैरानी भरा था। इस अवसर पर स्टीव जॉब्स ने स्कूली से कहा कि मेरी जिंदगी में दो दिन बहुत ही अधिक महत्त्वपूर्ण है। एक जब मैकिनतोश बाजार में आया और दूसरा जब तुमने एप्पल कंपनी को ज्वॉइन किया। उन्होंने यह भी बताया कि यह वर्ष उनके लिए बहुत ही भाग्यशाली रहा, जिसमें उन्होंने स्कूली से बहुत कुछ सीखा। पार्टी में स्टीव जॉब्स ने स्कूली को उस वर्ष का पुरस्कार भी प्रदान किया। प्रत्युत्तर में स्कूली ने भी कहा कि इस पूरे वर्ष में कई क्षण ऐसे रहे, जो उनके लिए हमेशा यादगार रहेंगे।

एप्पल कंपनी में स्कूली को लाने के पीछे भी ऑर्थर रॉक भी एक वजह थे, जिसके लिए ऑर्थर ने स्टीव जॉब्स को राजी कर लिया था। ऑर्थर ने स्टीव जॉब्स को बताया था कि पेप्सी कंपनी के प्रेसीडेंट स्कूली हमारी कंपनी के सीईओ पद के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। इसके पीछे वजह यह थी कि ऑर्थर चाहते थे कि स्कूली स्टीव जॉब्स का व्यवहार नियंत्रित करने में सफल रहेंगे, लेकिन व्यवहार नियंत्रित करने की बात तो दूर स्कूली स्टीव जॉब्स के सामने टिक भी नहीं पा रहे थे।

दिन-प्रतिदिन स्टीव जॉब्स का व्यवहार बदलता जा रहा था। उन्हें न तो किसी का विचार अच्छा लगता था और न ही किसी की बात। उनके व्यवहार में चिड□चिड□ापन आ गया था। जब कोई मीटिंग होती थी तो उसमें भी वे अपने सामने किसी को ज्यादा बोलने को मौका नहीं देते थे। जब एक मीटिंग के दौरान निर्णय लिया गया कि एप्पल के केंद्रीय बिक्री विभाग के कर्मचारी सभी डिविजनों के लिए कार्य करेंगे तो स्टीव जॉब्स नाराज हो उठे। उन्होंने कड□े शब्दों में प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि किसी को भी मैकिनतोश के स्टाफ में हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है।

स्टीव जॉब्स का व्यवहार लगभग सभी के लिए रूखा होता जा रहा था। कभी-कभी तो ऐसा होता था कि वे बेवजह भी भड□कने लगते थे। सेल्स एजेंटों के प्रति भी उनका व्यवहार असामान्य होता जा रहा था। कंपनी का लगभग सारा स्टाफ उनसे नाखुश रहने लगा था। अगले कुछ महीनों में मैकिनतोश के उत्पादों की बिक्री में कुछ गिरावट दर्ज की गई। शायद इसकी वजह सेल्स एजेंटों के प्रति स्टीव जॉब्स का व्यवहार रूखा भी हो सकता है।

फरवरी, 1985 में स्टीव जॉब्स ने अपने जीवन के 30 वर्ष पूरे किए। इस खुशी में एक पार्टी का आयोजन किया गया। इस पार्टी में सभी पुराने मित्रों और कुछ जाने-माने लोगों को भी आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर उनके परिचितों ने स्टीव जॉब्स को उपहारों से लाद दिया। यह एक प्रकार से विडंबना की बात ही कही जा सकती है कि खुशी के अवसर पर भी स्टीव जॉब्स का व्यवहार रूखा था उन्होंने अपने मित्रों की भी कोई परवाह नहीं की।

एंडी हर्ट्जफेंड स्टीव जॉब्स के पुराने मित्रों में से एक थे। एक बार वे मैकिनतोश की लांचिंग के बाद छुट्टी पर चले गए। एक दिन उन्हें पता चला कि स्टीव जॉब्स ने मैकिनतोश के कर्मचारियों को 50,000 डॉलर का बोनस दिया है। अत: वे भी अपना बोनस लेने के लिए ऑफिस चले गए। इस पर स्टीव जॉब्स ने उन्हें बताया कि आपके सुपरवाइजर ने ही तय किया है कि जो लोग छुट्टी पर हैं, उन्हें बोनस नहीं दिया जाएगा। बाद में उन्हें पता चला कि यह फैसला सुपरवाइजर का नहीं, बल्कि स्वयं स्टीव जॉब्स का ही था। इससे उन्हें बहुत दुख हुआ। इससे नाराज होकर उन्होंने एप्पल कंपनी को छोड□ दिया।

इससे भी ज्यादा हैरान कर देने वाली घटना तो तब घटी, जब एप्पल कंपनी के सहसंस्थापक वोजनियाक ने भी कंपनी छोड□ने का फैसला किया। उनके अंतर्गत एप्पल-II की जिम्मेदारी थी। उनका यह आरोप था कि कंपनी की कुल बिक्री राशि में एप्पल-II का एक तिहाई हिस्सा है, जबकि मैकिनतोश को ही अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। इस बात को लेकर स्टीव जॉब्स और वोजनियाक में काफी दिनों तक विवाद चलता रहा। यह विवाद उस समय और बढ□ गया, जब वोजनियाक ने खुद के बनाए गए रिमोट को अपनी संपत्ति घोषित किया। स्टीव जॉब्स का इस बारे में कहना था कि वोजनियाक ने यह रिमोट एप्पल-II में रहते हुए बनाया था, इसीलिए यह वोजनियाक की नहीं, बल्कि एप्पल कंपनी की संपत्ति है। स्टीव जॉब्स के रूखे व्यवहार के कारण इस तरह धीरे-धीरे मित्रों व कर्मचारियों के साथ उनके सम्बन्ध बिगड□ते गए।

9

विवादों के बाद नई शुरुआत

''स्टीव जॉब्स जैसे लोग अकस्मात् ही हमारी दुनिया बदल देते हैं। मैं उनकी योग्यता और प्रतिभा का कायल हूं।''

– दिमित्री मेदवेदेव
राष्ट्रपति, रूस

ऐसा प्रतीत होता था कि स्टीव जॉब्स के साथ विवादों का गहरा नाता बन गया था। एक के बाद दूसरे कर्मचारी के साथ उनका झगड़ा होता रहा और वह कंपनी छोड़कर जाता। 1985 के अंत तक स्टीव जॉब्स और कंपनी के सीईओ स्कूली के बीच संबंध बहुत खराब हो गए। वे एक-दूसरे की बातों से बिल्कुल भी सहमत नहीं होते थे। स्कूली की आकांक्षा अधिक-से-अधिक लाभ कमाने की थी और इसके लिए वे मैकिनतोश की कीमत को ऊंचा रखने की फिराक में रहते थे, जबकि स्टीव जॉब्स चाहते थे कि मैकिनतोश की कीमत कम-से-कम हो जिससे यह साधारण लोगों को आसानी से उपलब्ध हो सके।

स्टीव जॉब्स का स्कूली के बारे में यह मानना था कि वे मैनुफैक्चरिंग लाइन के व्यक्ति नहीं हैं और न ही उन्हें इंजीनियरिंग की कोई ठीक समझ है। इसके विपरीत स्कूली की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि स्टीव जॉब्स का व्यवहार बड़ा बेरूखा और असहज था। स्टीव जॉब्स स्कूली के बारे में कहते थे कि स्कूली अपनी जिंदगी में केवल सोड़ा पानी बेचते रहे हैं, उन्हें तकनीकी ज्ञान के बारे में कोई ज्यादा जानकारी नहीं है। जबकि स्कूली कहते थे कि स्टीव जॉब्स को यह नहीं पता कि कंपनी को कैसे चलाया जाता है और लोगों के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है।

स्टीव जॉब्स और स्कूली के मतभेदों का सीधा असर कंपनी पर पड़ रहा था। अत: मामले की गंभीरता को समझते हुए कंपनी प्रबंधन ने दोनों को समझाने की कोशिश की। एक ओर स्कूली को समझाया गया कि वे कंपनी के संचालन में सभी को साथ-साथ लेकर चलें तो दूसरी स्टीव जॉब्स को समझाया गया कि वे अपने व्यवहार पर नियंत्रण रखें और कंपनी को बिखरने से बचाएं।

एक समय ऐसा था कि मैकिनतोश की बिक्री लगातार बढ़ती जा रही थी, लेकिन अचानक ही उसकी बिक्री घटने लगी थी। यही नहीं, मैकिनतोश की टीम में असंतोष की भावना भी कर गई थी। इस स्थिति का स्कूली ने लाभ उठाया। उन्होंने स्टीव जॉब्स से कहा कि मैकिनटोश की बेहतरी के लिए यही फायदेमंद होगा कि वे अपने व्यवहार में नरमी लाएं? स्कूली के मुंह से यह सुनकर

स्टीव जॉब्स हैरान रह गए कि अब उनकी ही कंपनी का कोई व्यक्ति उन्हें चुनौती दे रहा है और उन्हें उनके व्यवहार के लिए नसीहत दे रहा है। स्कूली की बातों ने स्टीव जॉब्स को आगबबूला कर दिया था। इससे तिलमिलाकर उन्होंने स्कूली को बहुत कुछ उल्टा-सीधा कहा। आखिर में स्कूली ने अपने विचारों को स्पष्ट कर दिया कि वे इस मामले को बोर्ड के सामने लेकर आएंगे। स्कूली के इस निर्णय से स्टीव जॉब्स स्तब्ध रह गए। उन्हें यह जानकर बहुत गहरा धक्का लगा। उन्होंने स्कूली से कहा भी कि वे इस मामले को बोर्ड के सामने न लेकर जाएं, अन्यथा कंपनी बहुत गहरे नुकसान में चली जाएगी और यही वह मोड□ था जब स्कूली ने स्टीव जॉब्स का विश्वास पूरी तरह खो दिया।

स्कूली और स्टीव जॉब्स के बीच विवाद इतना गहरा हो गया था कि एक दिन बोर्ड की मीटिंग के दौरान स्कूली ने अपना प्रस्ताव रखा कि स्टीव जॉब्स को मैकिनतोश डिवीजन से हटा दिया जाए और उनसे कहा जाए कि वे किसी दूसरे उत्पाद को बनाने की ओर कदम बढ□ाएं। स्कूली की बातों से कंपनी प्रबंधन ने ताड□ लिया कि स्टीव जॉब्स और स्कूली के बीच भारी मतभेद पैदा हो गए हैं और इसीलिए स्कूली इस तरह की बातें कर रहे हैं। कंपनी प्रबंधन ने महसूस किया कि उनके आपसी मतभेदों के कारण कंपनी को लगातार नुकसान का सामना करना पड□ रहा है। अत: बोर्ड ने निर्णय लिया कि दोनों व्यक्तियों से अलग-अलग कंपनी के लाभ व हित के लिए उनसे विचार-विमर्श किया जाए।

बोर्ड के अधिकारियों ने काफी सोच-विचार के बाद रॉक ऑर्थर को स्टीव जॉब्स से बातचीत के लिए चुना। ऑर्थर ने स्टीव जॉब्स से कहा कि बीते वर्ष आपका रवैया बहुत ही रूखा रहा, जिससे कंपनी में विपरीत माहौल बना रहा। यहीं नहीं, कंपनी को काफी नुकसान का भी सामना करना पड□ा। अत: सभी को लगता है कि आपको कंपनी की एक भी डिवीजन को मैनेज (व्यवस्थित) करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप कंपनी के लिए रिसर्च लैब स्थापित करें और किसी नए उत्पाद को बनाने की तरफ अपना ध्यान लगाएं। स्टीव जॉब्स को इस तरह किसी की बातें सुनना अच्छा नहीं लगता था। आर्थर की बातों ने उन्हें अंदर तक झकझोरकर रख दिया।

इसके बाद बोर्ड ने स्कूली से बात की। बातचीत के दौरान स्कूली ने बोर्ड से कहा कि अगर आप मुझे यह अधिकार देते हैं कि मैं अपने तरीके से कंपनी को चलाऊं तो ठीक है, अन्यथा मैं कुछ नहीं कर सकता। अगर आप मुझे इस तरह का कोई अधिकार देने में असमर्थ हैं तो फिर आप अपनी कंपनी के लिए नए अध्यक्ष की तलाश कर सकते हैं।

स्कूली की बातों ने बोर्ड को असमंजस की स्थिति में ला खड□ा किया था। कंपनी के लिए स्टीव जॉब्स और स्कूली दोनों का ही साथ जरूरी था। बोर्ड अधिकारियों ने काफी लंबे समय तक इस विषय में चिंतन-मनन किया और अपने फैसले में स्कूली का पक्ष लिया। स्कूली को यह अधिकार भी दिया गया कि यदि आवश्यकता पड□ी तो वे स्टीव जॉब्स को कंपनी से अलग कर सकते हैं। जब स्कूली बोर्ड रूम से बाहर आए तो उनके चेहरे पर प्रसन्नता के चिह्न साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। स्टीव जॉब्स उनके हाव-भाव से ताड□ गए थे कि फैसला उनके विपरीत ही

गया है और वे लड़ाई हार गए हैं।

स्टीव जॉब्स को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं था कि कोई भी उनकी बात का विरोध करे या उन्हें उनके किसी काम के लिए नसीहत दे। समय-दर-समय स्टीव जॉब्स और स्कूली के बीच मतभेद गहरे होते चले गए। अब तो बात यहां तक पहुंच गई थी कि वे दोनों एक-दूसरे को नीचा दिखाने की भी कोशिश करने लगे थे। स्टीव जॉब्स के दिमाग में यह बात घर कर गई थी कि उनके साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है। वे बुरी तरह से स्वयं को छला हुआ महसूस कर रहे थे। उनका मन-मस्तिष्क अशांत हो गया था। अपने मन की शांति के लिए वे यूरोप के दौरे पर चले गए।

कुछ समय यूरोप में बिताने के बाद स्टीव जॉब्स अगस्त, 1985 में वापस लौट आए। उन्होंने स्थिति का बड़ी बारीकी से विश्लेषण किया। उनका मन एप्पल कंपनी से हट चुका था। वहां वे स्वयं को अपमानित-सा महसूस करने लगे थे। अत: उन्होंने कुछ नया करने के बारे में सोचा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने स्टेनफोर्ड के बायोकेमिस्ट पॉल वर्ग से बातचीत की। उन्होंने पॉल से कहा कि यदि आपके द्वारा डीएनए के क्षेत्र में किए जा रहे शोधकार्य को तकनीक से जोड़कर और आगे बढ़ाया जाए तो इससे विज्ञान के क्षेत्र में एक नवीन दिशा और क्रांति का सूत्रपात हो सकता है। इस पर पॉल ने बताया कि जैविक विज्ञान में शोधकार्य की राह बहुत मुश्किल है। पॉल का कहना था कि इस क्षेत्र में शोधकार्य के परिणामों की प्राप्ति के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है। उनकी बात के जवाब में स्टीव जॉब्स ने कहा कि यदि ऐसी ही बात है तो फिर यह काम कंप्यूटर की मदद से किया जा सकता है। शुरुआत में पॉल ने असहमति-सी जताई, लेकिन बाद में फिर वे स्टीव जॉब्स के समझाने पर राजी हो गए।

पॉल वर्ग भी कुछ नया करने की फिराक में थे। उनके पास न तो पैसे की कोई कमी थी और न ही प्रतिभा की। दूसरी ओर स्टीव जॉब्स इस जुगत में लगे हुए थे कि विश्वविद्यालयों के लिए उच्च क्षमता वाले और व्यक्तिगत उपयोग के लिए कंप्यूटर का निर्माण किया जाए। इस तरह का विचार दो वर्ष पहले 1883 में उनके दिमाग में तब आया था, जब मैकिनतोश की प्रदर्शनी के लिए उन्होंने ब्रोन का कंप्यूटर साइंस विभाग देखा था। उस अवसर पर किसी ने उनसे कहा था कि यदि विज्ञान के लिए मैकिनतोश से भी अधिक उच्च क्षमता वाला व्यक्तिगत कंप्यूटर उपलब्ध हो जाए तो इससे काम की गति को और भी तेज किया जा सकता है। जब स्टीव जॉब्स मैकिनतोश डिवीजन के प्रमुख थे तो उस समय उन्होंने इस परियोजना पर काम भी शुरू किया था, लेकिन जैसे ही उन्होंने मैकिनतोश विभाग छोड़ा तो फिर यह परियोजना भी बंद कर दी गई।

एक बार फिर से स्टीव जॉब्स ने विचार किया कि क्यों न बंद पड़ी अपनी पूर्व परियोजना पर पूरे जोश व उत्साह के साथ कार्य शुरू किया जाए। उनके इस कार्य में उनका साथ देने के लिए एप्पल कंपनी के तीन कर्मचारी साथ आ खड़े हुए, जो कि स्टीव जॉब्स की भांति ही एप्पल कंपनी से असंतुष्ट थे।

स्टीव जॉब्स ने अपनी नई पारी की शुरुआत के लिए नई कंपनी शुरू करने की योजना तैयार कर ली थी, लेकिन उनके सामने मार्केटिंग की समस्या थी। उन्होंने एक ऐसे अच्छे व योग्य व्यक्ति

की खोजबीन शुरू कर दी, जिसे मार्केटिंग का अच्छा ज्ञान तो हो ही और साथ ही उसे विश्वविद्यालयों कंप्यूटर की मांग की भी अच्छी जानकारी हो। काफी प्रयत्न के बाद भी उन्हें ऐसा व्यक्ति न मिल सका। अचानक ही एक दिन उनके दिमाग में डॉन लेबिन का नाम आया, जो एप्पल कंपनी में कार्यरत थे। स्टीव जॉब्स ने लेबिन से मुलाकात की और उन्हें अपनी योजना के बारे में बताया। अंतत: स्टीव जॉब्स ने लेबिन को अपनी कंपनी में शामिल करने के लिए राजी कर लिया।

हालांकि स्टीव जॉब्स अभी भी एप्पल कंपनी के चेयरमैन थे, लेकिन फिर भी जब से उनका बोर्ड के साथ विवाद हुआ था तो उन्होंने बोर्ड की किसी भी बैठक में भाग लेना उचित नहीं समझा था। बाद में स्टीव जॉब्स ने बोर्ड को अपनी नई कंपनी शुरू करने के बारे में सूचित किया तो उनके इस फैसले से सभी अवाक् रह गए। उन्होंने बोर्ड अधिकारियों को बताया कि उनकी आयु अभी केवल 30 वर्ष ही है, इसलिए वे कुछ नया कर आगे बढ□ना चाहते हैं। उन्होंने उच्च शिक्षा के लिहाज से कंप्यूटर बनाने का फैसला किया है। उन्होंने बताया कि उनकी कंपनी की एप्पल कंपनी के साथ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होगी। इस कार्य के लिए उन्होंने एप्पल कंपनी से सहयोग की अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि यदि एप्पल कंपनी उनकी नई कंपनी के साथ सहयोगपूर्वक कार्य करेगी तो और भी बेहतर होगा।

स्टीव जॉब्स ने बोर्ड अधिकारियों से यह भी कहा कि उन्हें एप्पल कंपनी के कुछ कर्मचारियों की आवश्यकता है, जो उसके लिए महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। उनके इस सवाल पर माइक मारकूला ने उनसे पूछा कि उन्हें एप्पल कंपनी के कर्मचारी क्यों चाहिए तो स्टीव जॉब्स ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए बताया कि वे उन कर्मचारियों को अपनी कंपनी में शामिल करना चाहते हैं, जो एप्पल कंपनी को छोड□ना चाहते हैं, बल्कि उन्हें नहीं जो एप्पल कंपनी में मुख्य पदों पर कार्यरत हैं।

स्टीव जॉब्स की बातों को सुनने के बाद बोर्ड अधिकारियों ने फैसला किया कि स्टीव जॉब्स की नई कंपनी में एप्पल कंपनी 10 प्रतिशत हिस्से की खरीदारी करेगी। बोर्ड अधिकारियों ने यह भी कहा कि इस दौरान स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी के चेयरमैन पद पर ही बने रहेंगे।

इसके बाद स्टीव जॉब्स ने एप्पल कंपनी से अलग हो चुके पांच कर्मचारियों से मिलकर भविष्य की योजना तैयार की। मीटिंग के दौरान इन कर्मचारियों ने स्टीव जॉब्स को सलाह दी कि वे एप्पल कंपनी को अपनी नई कंपनी में किसी भी प्रकार की साझेदारी देने के बजाय एप्पल कंपनी के चेयरमैन पद से त्यागपत्र देकर नए सिरे से अलग रहकर अपना काम शुरू करें। उनकी बातें सुनकर स्टीव जॉब्स ने उन्हें इस बारे में और गहराई से सोचने-विचारने की बात कही।

इसके कुछ दिन बाद स्टीव जॉब्स ने स्कूली को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने एप्पल कंपनी से बाहर आए पांच कर्मचारियों के बारे में लिखा था। उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि ये सभी कर्मचारी उनकी नई कंपनी के लिए कार्य करेंगे। यह सब जानकर स्कूली नाराज हो उठे। उन्होंने गुस्से में कहा कि ये पांचों कर्मचारी एप्पल कंपनी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। स्कूली ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की कि ये पांचों कर्मचारी वापस एप्पल कंपनी में आ जाएं, लेकिन उन्होंने स्पष्ट

शब्दों में इंकार कर दिया, जिससे स्कूली बहुत नाराज हो उठे।

एक दिन स्टीव जॉब्स को पता चला कि उन्हें एप्पल कंपनी के चेयरमैन पद से हटाया जाने वाला है। इतना पता चलते ही उन्होंने तुरंत त्यागपत्र देने का फैसला किया। इस बारे में उनके एक सहयोगी ने सुझाव दिया कि आप अपना त्यागपत्र सीधे कंपनी को भेजने के बजाय माइक मारकूला के घर जाकर दें और उनसे अपने लिए सहयोग की बात करें। बाद में स्टीव जॉब्स ने अपना त्यागपत्र मारकूला को दे दिया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। कुछ दिन बाद उनका सामान उनके ऑफिस से हटा दिया गया।

स्कूली मन-ही-मन स्टीव जॉब्स से कुढ़ते थे। वे स्टीव जॉब्स को बिल्कुल भी पसंद नहीं करते थे। उनके बहकावे में आकर एप्पल कंपनी ने स्टीव जॉब्स पर तीन आरोपों के तहत अदालती मुकदमा चलाने का फैसला किया। पहला आरोप जो उन पर लगाया गया था, वह था– एप्पल कंपनी की प्रतिस्पर्धा में चोरी-छिपे नई कंपनी की शुरुआत करना। दूसरा-गलत तरीके से एप्पल कंपनी के डिजाइन वगैरह को अपने उपयोग में लाना। तीसरा व अंतिम– चोरी-छिपे एप्पल कंपनी के कर्मचारियों को तोड़ना।

एप्पल कंपनी छोड़ते समय स्टीव जॉब्स के पास 6.5 मिलियन शेयर थे। ये शेयर एप्पल कंपनी की कुल पूंजी का लगभग 11 प्रतिशत थे। इन सभी शेयरों की कुल कीमत लगभग 100 मिलियन डॉलर थी, जो एक बहुत ही भारी रकम थी। स्टीव जॉब्स ने बड़ी चालाकी से काम किया। उन्होंने कुछ ही महीनों में अपने पास केवल एक शेयर रखकर बाकी सभी शेयर बेच दिए। अपने पास एक शेयर रखने का उनका कारण यह था कि यदि कभी भविष्य में आवश्यकता पड़ी तो वे कभी भी शेयर होल्डर होने के नाते एप्पल कंपनी की बैठक में भाग ले सकेंगे।

कुछ समय के बाद स्टीव जॉब्स ने अपने मित्र वोजनियाक से संपर्क किया और उनसे अपनी नई कंपनी में शामिल होने की बात कही, लेकिन वोजनियाक ने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया।

स्टीव जॉब्स ने नई कंपनी शुरू करने का फैसला तो कर लिया था, लेकिन उनके सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि कंपनी का नाम और उसका लोगो (Logo) क्या तय किया जाए। उनकी आकांक्षा यह थी कि उनकी कंपनी का नाम और लोगो ऐसा हो, जो लोगों को आकर्षित करता हो। उन्हें ऐसे डिजाइनर की आवश्यकता थी, जो उनकी कंपनी के लिए अच्छे-से-अच्छा डिजाइन उपलब्ध करा सके। इसके लिए उन्होंने कोशिश शुरू कर दी थी।

बहुत प्रयत्न करने के बाद उनकी मुलाकात आईबीएम कंपनी में काम करने वाले पॉल रैंड से हुई। वे पॉल रैंड को अपनी कंपनी के लिए रखना चाहते थे, लेकिन उस समय वे आईबीएम के साथ अनुबंधित थे। इस बारे में स्टीव जॉब्स ने आईबीएम कंपनी के प्रेसीडेंट से बातचीत की। शुरुआत में तो उन्होंने आनाकानी की, लेकिन बाद में पॉल रैंड को आईबीएम कंपनी से स्टीव जॉब्स की कंपनी के लिए काम करने की अनुमति मिल गई।

स्टीव जॉब्स और पॉल रैंड के बीच 1,00,000 डॉलर के मेहनताने पर सहमति बनी। कुछ

दिनों के बाद पॉल रैंड ने अथक परिश्रम से तैयार की गई बुकलेट और लोगो स्टीव जॉब्स के सामने रखी। स्टीव जॉब्स को उसमें कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता महसूस हुई, लेकिन पॉल रैंड उसमें किसी भी प्रकार के परिवर्तन के लिए तैयार नहीं थे। इस बारे में पॉल रैंड का मानना था कि इस डिजाइन को तैयार करने में उन्होंने अपने 50 वर्षों की मेहनत लगा दी है। अत: इसमें अब किसी भी प्रकार का परिवर्तन उनके लिए संभव नहीं है, लेकिन स्टीव जॉब्स के काफी समझाने के बाद पॉल रैंड परिवर्तन करने के लिए तैयार हो गए। इस तरह कंपनी व लोगो का नाम नेक्स्ट (Next) तय किया गया।

'नेक्स्ट' के रूप में कंपनी का नाम व लोगों तो तय हो गया था, लेकिन अब स्टीव जॉब्स के सामने कंप्यूटर की डिजाइनिंग का सवाल आ खड□ा हुआ था। चूंकि एप्पल कंपनी के साथ स्टीव जॉब्स का बहुत गहरा विवाद रहा था, इसलिए उनके साथ कोई भी डिजाइनर काम करने के लिए तैयार नहीं था। दूसरी ओर एप्पल कंपनी के सीईओ स्कूली को महसूस होने लगा था कि अब स्टीव जॉब्स के साथ मुकदमा लड□ने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि इससे उन्हें सिवा हानि उठाने के कोई लाभ नहीं हो रहा था। अंतत: स्टीव जॉब्स और स्कूली के बीच एक समझौता हुआ, जिसके तहत यह बात सामने आई कि स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी के डिजाइन वगैरह को अपने उपयोग में नहीं लाएंगे। इस तरह के एक लिखित समझौते के अनुसार स्टीव जॉब्स के ऊपर चल रहे सभी मुकदमे वापस ले लिए गए।

स्टीव जॉब्स के मन-मस्तिष्क पर सफलता का सुरूर छाया हुआ था। जिस मेहनत और लगन के साथ उन्होंने एप्पल कंपनी को सफलता को शिखर पर पहुंचाया था, उसी तरह वे अपनी नवनियुक्त कंपनी को सफलता के पथ पर अग्रसर होते हुए देखना चाहते थे। उन्होंने अपनी इस नई कंपनी की पूंजी 30 मिलियन डॉलर रखी। हालात ऐसे बने कि कंपनी की सारी पूंजी बाजार में बिक गई। बिल गेट्स और आईबीएम कंपनी के साथ उनका गहरा विवाद बना रहा, लेकिन काफी जद्दोजहद के बाद बिल गेट्स और आईबीएम स्टीव की नेक्स्ट कंपनी के लिए सहयोग करने हेतु राजी हो गए।

12 अक्टॅबर, 1988 को सैन फ्रांसिस्को में नेक्स्ट कंपनी ने नेक्स्ट नाम से ही अपना कंप्यूटर लांच किया। कंप्यूटर को लांच तो कर दिया गया था, लेकिन अभी वह बिक्री के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं था। मई-जून 1989 में वह बिक्री के लिए तैयार हो सका।

जैसी कि स्टीव जॉब्स को उम्मीद थी कि नेक्स्ट को लोगों द्वारा हाथोहाथ पसंद किया जाएगा, अपेक्षानुसार वैसा ही हुआ। शुरुआती दौर में ही नेक्स्ट की बिक्री 10,000 के आस-पास प्रतिमाह पहुंच गई। इस सफलता की खुशी उनके चेहरे पर अलग ही दिखाई देने लगी थी।

स्टीव जॉब्स परिश्रमी और लगनशील व्यक्ति थे। यही कारण था कि वे लगातार सफलता की सीढि□यां चढ□ते जा रहे थे। वे अपने काम के प्रति प्रतिबद्ध रहते थे। वे जिद्दी स्वभाव के थे और जिस काम को अंजाम देने की ठान लेते थे, उसे पूरा करके ही सांस लेते थे।

स्टीव जॉब्स ने पिक्सर नामक कंपनी को खरीद लिया था। पिक्सर कंपनी कंप्यूटर के लिए

हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और एनीमेशन आदि का कार्य करती थी, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह थी कि यह कंपनी लगातार नुकसान का सामना कर रही थी। यही कारण था कि कंपनी स्टीव जॉब्स के हाथों बिक गई थी। स्टीव जॉब्स ने इस कंपनी में जो कमियां देखी थीं, उन्हें दूर करने का प्रयास कर कुछ आमूल-चूल परिवर्तन किए। देखिए, यही स्टीव की बुद्धि का ही कमाल था कि इस असफल कंपनी ने भी सफलता का स्वाद चखना शुरू कर दिया था। इस कंपनी के एनीमेशन विभाग ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता अर्जित की।

पिक्सर को जैसे ही सफलता का नशा चढ़ा तो उसने डिज्नी के लिए काम करना बंद कर दिया। इससे डिज्नी के व्यवसाय में मंदी आ गई। स्टीव जॉब्स ने स्थिति का लाभ उठाया। डिज्नी ने स्टीव जॉब्स से पिक्सर कंपनी को उसे बेचने की बात कही। स्टीव जॉब्स ने इसके लिए मनचाहे मूल्य की मांग की, जिसे शुरू में तो डिज्नी ने स्वीकार नहीं किया, लेकिन बाद में उसने पिक्सर कंपनी को स्टीव जॉब्स के मनचाहे मूल्य पर खरीद लिया।

स्टीव जॉब्स ने पिक्सर कंपनी को अपने हाथों में उस समय लिया था, जब वह बिखर रही थी। उन्होंने उस कंपनी के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत की और उसे सफल कंपनी बनाकर ही दम लिया। अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्धता उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी और इसी विशेषता के कारण वे वैश्विक पहचान बना चुके थे।

10

जैविक माता से मिलन

''स्टीव! मेरे गुरु और मेरे मित्र होने के लिए आपको धन्यवाद!! दुनिया को बदलने के लिए और कैसे बहुत कुछ बनाया जा सकता है—यह दिखाने के लिए भी धन्यवाद!!!

– मार्क जुकरबर्ग
संस्थापक फेसबुक

स्टीव जॉब्स ने छोटी-सी आयु में ही अपनी वैश्विक पहचान कायम कर ली थी। उनकी गिनती अब जाने-माने उद्यमियों में होने लगी थी। उनके पास दुनिया-भर का एशो-आराम था। फिर भी उनका मन विचलित रहता था। जब से उन्हें अपनी जैविक माता के बारे में पता चला, उनकी मनोदशा कुछ विचित्र हो गई थी। उनकी तीव्र इच्छा हो रही थी कि वे जल्दी-से-जल्दी अपनी जैविक माता का पता लगाकर उनसे मुलाकात करें।

स्टीव जॉब्स ने व्यावसायिक कार्यों को आगे बढ□ाने के साथ-साथ अपनी जैविक माता की खोज आरंभ कर दी। इस कार्य के लिए उन्होंने एक जासूस भी नियुक्त किया था, लेकिन उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिली थी। अंतत: उन्होंने स्वयं ही इस कार्य को अपने जिम्मे ले लिया। सबसे पहले उन्होंने उस डॉक्टर की खोज की, जिसने उनका जन्म प्रमाण पत्र बनाया था। उन्होंने डॉक्टर से बातचीत की और अपनी जैविक माता के बारे में जानकारी देने की मांग की, लेकिन डॉक्टर ने इस बारे में कुछ भी बताने से साफ इंकार कर दिया। डॉक्टर ने उन्हें बताया कि सारा रिकॉर्ड किसी कारण से खत्म हो चुका है। शायद इसके पीछे कोई और वजह थी जिस कारण डॉक्टर ने उन्हें कुछ नहीं बताया। कुछ समय बाद डॉक्टर की मृत्यु हो गई, लेकिन मरने से पहले उन्होंने एक लिफाफे में स्टीव जॉब्स के बारे में बहुत सारी जानकारी लिख छोड□ी थी और अपनी पत्नी से कहा था कि वे इस लिफाफे को उनकी मृत्यु के बाद स्टीव जॉब्स को दे दें। डॉक्टर की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ने वह लिफाफा स्टीव जॉब्स को दे दिया। उस लिफाफे में डॉक्टर ने बताया था कि जब वे पैदा हुए थे, उस समय उनकी माता एक गैर-शादीशुदा कॉलेज गर्ल थी। उनका नाम युआन शीबल था और वे विस्कोंसिन विश्वविद्यालय से स्नातक थीं।

स्टीव जॉब्स को यह तो पता ही चल चुका था कि उनकी माता का नाम युआन शीबल है और बस, अब उन्हें यह पता और लगाना था कि वे फिलहाल कहां रह रही हैं। इसके लिए उन्होंने एक जासूस नियुक्त किया। कुछ समय के बाद उन्हें उस जासूस के माध्यम से पता चला कि उनके जन्म के बाद युआन शीबल ने अब्दुल फतेह जांडाली नामक व्यक्ति से शादी की, जिससे उन्होंने एक लड□की को जन्म दिया। इसका नामकरण मोना किया गया, लेकिन कुछ वर्षों के बाद

अब्दुल फतेह ने उन्हें छोड□ दिया। इसके बाद युआन ने एक खूबसूरत बर्फ स्केटिंग प्रशिक्षक जॉर्ज सिंपसन से शादी कर ली, लेकिन कुछ समय के बाद जॉर्ज ने भी उन्हें छोड□ दिया। फिलहाल युआन अपनी बेटी के साथ लॉस एंजिल्स में रह रही हैं।

स्टीव जॉब्स को अपने पोषक माता-पिता से बहुत प्रेम था और वे उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहते थे। उस समय उनकी माता क्लारा का स्वास्थ्य बहुत खराब था और उनकी हालत देखकर ऐसा लगता था जैसे न जाने कब वे इस दुनिया को अलविदा कह दें। यही कारण था कि वे अपने पोषक माता-पिता को अपनी जैविक माता के बारे में कुछ भी नहीं बताना चाहते थे।

1986 में उनकी पोषक माता क्लारा की मृत्यु हो गई। क्लारा की मृत्यु के बाद स्टीव जॉब्स ने अपने पोषक पिता पॉल जॉब्स से अपनी जैविक माता युआन शीबल की खोज के बारे में सब कुछ विस्तार से बता दिया। स्टीव जॉब्स ने यह सब अपने पिता को डरते-डरते बताया। उन्हें डर था कि कहीं उनके पिता को यह सब जानकर बुरा न लगे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ और उनके पिता ने उन्हें उनकी जैविक माता से संपर्क करने की इजाजत दे दी।

स्टीव जॉब्स का मन अपनी जैविक माता यूआन शीबल से मिलने के लिए आतुर था। वे जल्दी-से-जल्दी युआन से मिलना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने उनके बारे में पर्याप्त जानकारी जुटा ली थी। एक दिन स्टीव जॉब्स ने उन्हें फोन किया और अपने बारे में बताया। उन्होंने फोन पर बताया कि वे उनसे मिलने के लिए जल्दी ही लॉस एंजिल्स आ रहे हैं।

आखिरकार स्टीव जॉब्स को अपनी जैविक माता युआन शीबल से मिलने में कामयाबी मिल ही गई। जब वे अपनी माता के लॉस एंजिल्स स्थित घर पहुंचे तो वे उन्हें अपने सामने देखकर भावुक हो गईं। उनकी आंखों से लगातार अविरल आंसुओं की धारा बह रही थी। उन्होंने अपनी गलती के लिए पश्चाताप प्रकट किया। बातचीत के दौरान उन्होंने स्टीव जॉब्स को बताया कि उनकी एक बहन भी है, जिसका नाम मोना सिंपसन है। उन्होंने जॉर्ज सिंपसन के साथ शादी करने के बाद से ही अपने और अपनी बेटी के नाम के साथ सिंपसन शब्द का प्रयोग करना शुरू कर दिया था, लेकिन बाद में जॉर्ज सिंपसन ने उन्हें छोड□ दिया था।

यूआन शीबल ने बताया कि अब मोना एक जानी-पहचानी उपन्यासकार हैं। यूआन ने कभी भी मोना को यह नहीं बताया था कि उनका कोई भाई है, लेकिन बाद में स्टीव जॉब्स के बारे में उन्होंने मोना को फोन पर सूचना दी और यह भी कहा कि वे उनके साथ तुमसे मुलाकात करने के लिए न्यूयॉर्क आ रही हैं।

कुछ समय बाद मौका देखकर स्टीव ने सेंट रेजिस होटल में मोना से मुलाकात की। बहुत देर तक दोनों के बीच बहुत सारी बातें हुईं। स्टीव को इस बात की बहुत खुशी थी कि मोना और उनमें कई बातों को लेकर समानताएं थीं। मोना ने अपनी माता के जीवन पर आधारित एक बेहद चर्चित उपन्यास 'एनीव्हेयर बट हीयर' लिखा था, जिसके कारण उन्होंने कामयाबी की बुलंदी को छू लिया था।

स्टीव जॉब्स को अपनी बहन से मिलकर बहुत खुशी हुई। स्टीव जॉब्स ने मोना द्वारा लिखे गए उपन्यास की लांचिंग के अवसर पर प्रकाशक द्वारा दी गई पार्टी में भाग लिया। स्टीव जॉब्स ने अपनी बहन को उपहारस्वरूप कुछ आकर्षक कपड□ भेंट किए।

अपने भाई स्टीव जॉब्स से मिलने के बाद मोना के मन में भी अपने पिता को ढूंढ□ने की इच्छा हुई, जो उन्हें छोटी-सी आयु में ही छोड□कर चले गए थे। अपने पिता की खोजबीन के लिए उन्होंने एक निजी जासूस कंपनी को नियुक्त किया, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिली। इसके बाद उन्होंने एक अन्य जासूस को यह काम सौंपा, जिसके माध्यम से यह पता चला कि उनके पिता अब्दुल फतेह जांडाली सैकरा मेंटो में रहते हैं।

मोना ने स्टीव जॉब्स से इस संबंध में बातचीत की और उनसे अब्दुल फतेह से चलकर मिलने के लिए कहा, लेकिन स्टीव जॉब्स ने इसमें कोई रुचि नहीं दिखाई। स्टीव जॉब्स ने मोना को बताया कि वे इस बात से बेहद नाराज हैं कि उन्हें उनके जैविक पिता ने छोटी-सी आयु में ही छोड□ दिया था। मोना समझ गई थीं कि स्टीव जॉब्स नाराज हैं और वे उनके साथ अब्दुल फतेह से मिलने के लिए बिल्कुल भी नहीं जाएंगे, इसलिए उन्होंने अकेले ही अब्दुल फतेह से मिलने का निश्चय किया।

एक दिन मोना अपने पिता अब्दुल फतेह से मिलने के लिए निकल पड□ीं। उन्होंने अपने पिता को एक छोटे-से रेस्टोरेंट में काम करते हुए पाया। पिता को देखकर उनकी आंखों में आंसू छलक उठे। उन्होंने पिता से बहुत देर तक बातचीत की। उनके पिता ने उन्हें सारी घटना विस्तारपूर्वक बताई। जब मोना अपने पिता से मिलने के लिए घर से चली थीं तो उन्हें स्टीव ने कहा था कि वे उनके बारे में पिता अब्दुल फतेह से कोई भी बातचीत न करें। उन्होंने स्टीव जॉब्स की बात का अनुकरण किया और पिता अब्दुल फतेह से उनके बारे में कोई बातचीत नहीं की। यह सब भाग्य की ही बात रही कि स्टीव जॉब्स ने अंत तक अब्दुल फतेह से न तो कोई बातचीत की और न ही उनकी उनसे मुलाकात करने की कोई इच्छा हुई।

दूसरी ओर मोना लगातार अपने पिता के संपर्क में रहीं। अब्दुल फतेह ने अपने जीवन में चार शादियां की थीं और अब वे अपनी अंतिम पत्नी रोजसिले के साथ रह रहे थे। मोना भावुक स्वभाव की थीं। उन्होंने अपने परिवार से संबंधित तीन उपन्यासों की रचना की थी, जिनके नाम क्रमश: 'एनीव्हेयर बट हीयर', 'द लॉस्ट फादर', और 'ए रेगुलर गाई' हैं। इनमें पहला उपन्यास उनकी माता के जीवन से जुड□ा हुआ था तो दूसरा उपन्यास उनके पिता से संबधित था और तीसरा व अंतिम उपन्यास उनके भाई स्टीव जॉब्स के जीवन पर आधारित था। इन सभी तीनों उपन्यासों को अपेक्षानुसार विशेष ख्याति मिली थी।

स्टीव के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण बात थी कि वे अपनी प्रेमिका ब्रेनन से पैदा हुई अपनी बेटी लिजा को वह प्रेम न दे सके, जिसकी हकदार थी।

11

गृहस्थ जीवन में प्रवेश

''हम हर दिन बहुत-सी ऐसी चीजें छूते हैं, जिन्हें स्टीव ने लॉन्च किया था। स्टीव जॉब्स वास्तव में एक असाधारण आविष्कारक थे।''

–जूलिया गिलार्ड
प्रधानमंत्री, ऑस्ट्रेलिया

स्टीव जॉब्स की आयु 31 वर्ष की हो चुकी थी, लेकिन वे अभी तक अविवाहित थे। अब वे अपने व्यवसाय के साथ-साथ अपनी शादी के विषय को भी गंभीरता से लेने लगे थे। उन्हें एक ऐसे जीवनसाथी की तलाश थी, जो सुंदर होने के साथ-साथ सहयोगी हो।

एक दिन वे स्टेनफोर्ड बिजनेस स्कूल में भाषण देने के लिए गए हुए थे। वहां उन्होंने लॉरेन पावेल को देखा। लॉरेन पावेल ने इसी बिजनेस स्कूल की स्नातक छात्रा थी और भाषण सुनने के लिए आई हुई थीं। वे सबसे आगे वाली सीट पर स्टीव जॉब्स की बगल में आरक्षित सीट पर जाकर बैठ गईं। थोड़ी देर बाद स्टीव जॉब्स ने लॉरेन पावेल से बातचीत शुरू कर दी। लॉरेन पावेल बहुत सुंदर और आकर्षक युवती थीं और पहली दृष्टि में ही उन्हें स्टीव जॉब्स ने पसंद कर लिया था। जब स्टीव जॉब्स भाषण देने के लिए मंच पर गए तो तब भी उनकी दृष्टि लॉरेन पावेल पर ही टिकी हुई थी।

भाषण की समाप्ति के बाद स्टीव जॉब्स फिर से लॉरेन पावेल से मिले और उनसे अपने साथ डिनर करने की इच्छा जताई। लॉरेन पावेल उनके प्रस्ताव को ठुकरा न सकीं। इस तरह आने वाले शनिवार के दिन दोनों की साथ-साथ डिनर करने की सहमति बन गई।

स्टीव जॉब्स को तुरंत याद आया कि उन्हें भाषण की समाप्ति के बाद अपनी कंपनी नेक्स्ट के सेल्स ग्रुप के साथ डिनर पर भी जाना था। अत: वे जल्दी-जल्दी में कार में बैठने लगे, लेकिन तभी उन्होंने सोचा कि सेल्स ग्रुप के साथ डिनर करने के बजाय क्यों न लॉरेन पावेल के साथ आज ही डिनर कर लिया जाए। उन्होंने बस इतना ही सोचा था कि वे तुरंत अपनी कार से उतर गए। वे दौड़ते हुए लॉरेन पावेल के पास गए और उनसे शाम को ही डिनर करने की बात कही। लॉरेन पावेल स्टीव जॉब्स की उत्सुकता समझ गई थीं वे भी उनके साथ कुछ समय बिताने की इच्छुक थीं, जिसका प्रस्ताव उन्हें अपनी ओर से बिना कोई पहल किए ही मिल गया था।

इस तरह लॉरेन पावेल और स्टीव जॉब्स उसी रात को डिनर के लिए पॉल अल्टो में एक शाकाहारी रेस्टोरेंट में पहुंचे। इस रेस्टोरेंट में वे लगभग चार घंटों तक रहे। दूसरी ओर उनकी

नेक्स्ट कंपनी का सेल्स ग्रुप डिनर के लिए स्टीव जॉब्स का इंतजार करता रहा, लेकिन स्टीव जॉब्स आधी रात तक भी उनके पास नहीं पहुंचे। इसके बाद सेल्स ग्रुप के सुपरवाइजर ने स्टीव जॉब्स से बात की तो उसे स्थिति का पता चला।

दूसरी ओर डिनर के बाद लॉरेन पावेल अपने घर पहुंचीं और अपनी मित्र कैथरीन स्मिथ को पूरे दिन की घटना के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। लॉरेल पावेल ने स्मिथ को बताया कि वे स्टीव जॉब्स को पसंद करती हैं। आगे चलकर स्टीव जॉब्स ने बताया था कि उनके जीवन में दो महिलाएं ही ऐसी हैं, जिन्हें वे बहुत प्यार करते हैं। एक टीना और दूसरी लॉरेन पावेल। उन्होंने बताया था कि ये दोनों ही उनके जीवन में बहुत महत्त्व रखती हैं।

लॉरेन पावेल का जन्म 1963 में न्यूजर्सी में हुआ था। उनके पिता एक पायलट थे, जिनकी एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। इसके बाद उनकी माता ने दूसरी शादी कर ली थी, लेकिन फिर भी लॉरेन पावेल ने अपने परिवार को नहीं छोड□ा। उस समय उनकी आयु 10 वर्ष थी। उनके अन्य तीन छोटे भाई भी थे। लॉरेन पावेल ने स्नातक की शिक्षा पूरी कर नौकरी कर ली थी।

स्टीव जॉब्स और लॉरेन पावेल के बीच पहली ही मुलाकात रुचिकर रही थी। अपनी पहली ही मुलाकात में दोनों ने एक-दूसरे को पसंद कर लिया था। डिनर की मुलाकात के बाद लॉरेन पावेल ने स्टीव जॉब्स को अपने घर पर आने के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर पर लॉरेन पावेल ने अपनी मित्र कैथरीन को भी बुला लिया। स्टीव जॉब्स वहां आए और उनके बीच बहुत देर तक बातें हुईं। इसके बाद स्टीव जॉब्स लौट गए।

1989 में नए वर्ष के अवसर पर एक आयोजित की गई पार्टी में लॉरेन पावेल, स्टीव जॉब्स, कैथरीन और लिजा ने भाग लिया। सभी ने पार्टी में खूब आनंद लिया। इसी दौरान स्टीव जॉब्स और लॉरेन पावेल के बीच हल्की-सी नोक-झोंक हुई। लॉरेन पावेल थोड□ी दुखी थी, इसीलिए उसने अपने घर जाने के बजाय अपनी मित्र कैथरीन के घर पर ही रुकना उचित समझा।

स्टीव जॉब्स बीती रात हुई नोक-झोंक से दुखी थे। वे लॉरेन पावेल को पसंद करने लगे थे और इसीलिए वे अगले दिन सुबह कैथरीन के दरवाजे पर पहुंच गए। उन्होंने दरवाजा खटखटाया। कैथरीन को हैरानी हो रही थी कि इतनी अलसुबह उनके दरवाजे पर कौन हो सकता है। उन्होंने दरवाजा खोला तो सामने स्टीव जॉब्स को गुलदस्ते के साथ खड□े देखकर हैरान रह गईं। कैथरीन ने उन्हें अंदर बुलाया और बताया कि लॉरेन पावेल अभी सो रही हैं। उन्होंने कैथरीन से बात की कि वे लॉरेन पावेल को पसंद करते हैं और उनसे शादी करना चाहते हैं। चूंकि लॉरेन पावेल के पिता की मृत्यु हो चुकी थी और उनकी माता भी उस समय वहां नहीं थीं तो उन्होंने कैथरीन से इस मामले में उनकी मदद करने की इच्छा व्यक्त की। इस बारे में कैथरीन ने लॉरेन पावेल से पूछा तो उन्होंने अपनी ओर से सहमति दे दी।

सिंतबर, 1990 में स्टीव जॉब्स ने लॉरेन पावेल को एक हीरे की अंगूठी पहनाई। इसके बाद अगले महीने वे उनके साथ छुट्टियां बिताने के लिए हवाई द्वीप चले गए। लगभग पूरा महीना दोनों ने हवाई द्वीप पर बिताया। स्टीव जॉब्स के अनुसार हवाई द्वीप का यह दौरा बहुत ही खूबसूरत

और महत्त्वपूर्ण रहा।

18 मार्च, 1991 को स्टीव जॉब्स और लॉरेन पावेल ने शादी कर ली। उस समय स्टीव जॉब्स की आयु 36 वर्ष और लॉरेन पावेल की आयु 27 वर्ष थी। शादी में उन्होंने अपने कुछ गिने-चुने व खास लोगों को ही बुलाया था। स्टीव जॉब्स सादा जीवन व्यतीत करते थे ओर उन्होंने अपनी शादी भी बड□ सीधे-सादे ढंग से की थी।

1991 में ही शादी के कुछ महीनों के बाद लॉरेन ने एक बच्चे को जन्म दिया, जिसका नाम रीड पॉल जॉब्स रखा गया। स्टीव जॉब्स और लॉरेन दोनों अपने वैवाहिक जीवन से खुश थे। इसके चार साल बाद 1995 में लॉरेन ने एक बेटी को जन्म दिया, जिसका नामकरण इरिन सियेना जॉब्स किया गया। 1998 में लॉरेन ने अपनी दूसरी बेटी को जन्म दिया, जिसका नाम ईव रखा गया। इस तरह कुल मिलाकर लॉरेन ने एक पुत्र और दो पुत्रियों को जन्म दिया।

12

एप्पल में पुनर्वापसी

''गूगल के शुरुआती दिनों से ही जब भी मुझे प्रेरणा की जरूरत होती तो स्टीव जॉब्स ही नजर आते। स्टीव! एक्सीलेंस के लिए तुम्हारे पैशन को हर वह शख्स महसूस कर सकता है, जिसने कभी भी एप्पल के किसी प्रोडक्ट को छुआ या इस्तेमाल किया हो।''

–सार्जेई ब्रिन
सहसंस्थापक, गूगल

स्टीव जॉब्स जीवन में कभी हार न मानने वाले व्यक्ति का नाम था। जब से उन्होंने एप्पल कंपनी का गठन किया था, उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा था। हालांकि उन्हें जिस तरह से एप्पल कंपनी छोड़नी पड़ी थी, उससे वे बहुत आहत व दुखी हुए। इसके बाद उन्होंने नेक्स्ट कंपनी का गठन किया और उसे भी एप्पल कंपनी की तरह सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचाकर सांस ली। स्टीव जॉब्स के जीवन में दो शब्दों के लिए कोई जगह नहीं थी– 'असंभव' और 'नहीं'। वे जिस काम को करने की ठान लेते थे, उसे फिर पूरा करके ही छोड़ते थे। यह उनकी विशेषताओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी।

स्टीव जॉब्स के नेतृत्व में नेक्स्ट कंपनी का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा था। बाजार में उसने वह ख्याति अर्जित कर ली थी, जिसकी स्टीव जॉब्स अपेक्षा कर रहे थे। दूसरी ओर देखिए! यह भी विंडबना की ही बात थी कि एप्पल कंपनी का स्तर दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा था। इसका एक मुख्य कारण यह था कि यह कंपनी बस अधिक-से-अधिक लाभ कमाने की ओर ध्यान देने लगी थी। इससे पहले जब स्टीव जॉब्स इस कंपनी में थे तो वे अपने उत्पादों के मूल्य को कम दामों के बल पर बाजार में सबसे अधिक लोकप्रिय बनाने में विश्वास रखते थे। वे हमेशा चाहते थे कि उनकी कंपनी के उत्पाद सर्व साधारण के लिए भी उपलब्ध हों, न कि केवल समाज के उच्च वर्ग के लोगों के लिए।

स्टीव जॉब्स की एक अन्य विशेषता यह थी कि समय की मांग के अनुसार अपनी सोच में और काम करने के तरीके में बदलाव लाना चाहिए, तभी जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है। तभी सफलता का स्वाद चखा जा सकता है। एप्पल कंपनी ने स्टीव जॉब्स के एप्पल छोड़कर जाने के बाद से कोई नवीन दिशा इख्तियार नहीं की। इसका परिणाम यह रहा कि 1996 में बाजार में एप्पल की हिस्सेदारी केवल 4 प्रतिशत ही रह गई थी, जबकि 1980 में यह हिस्सेदारी 16 प्रतिशत थी।

इसी दौरान स्कूली की जगह एप्पल कंपनी के सीईओ पद पर गिल अमेलियों को नियुक्त कर दिया गया। गिल ने गहन विश्लेषण के बाद पता लगाया कि एप्पल कंपनी को फिर से उभरने के लिए एक नए ऑपरेटिंग सिस्टम की आवश्यकता थी और उन्हें लगता था कि इस काम में उनकी मदद नेक्स्ट कंपनी ही कर सकती है।

गिल इस बात से भली-भांति परिचित थे कि एप्पल कंपनी और स्टीव जॉब्स के बीच संबंध बीते वक्त में ज्यादा मधुर नहीं रहे हैं, बल्कि यूं कहें कि कड□वाहट भरे रहे हैं। अत: उन्होंने सीधे स्टीव जॉब्स से बात करने के बजाय अपने सहयोगी स्टॉफ के माध्यम से बात करना अधिक उचित समझा। उन्होंने अपने स्टॉफ के माध्यम से स्टीव जॉब्स के पास एप्पल कंपनी की बिगड□ती हुई स्थिति को सुधारने हेतु एक संदेश भेजा। संदेश मिलते ही स्टीव जॉब्स भावुक हो उठे। उन्होंने बिना किसी झिझक के सीधे गिल से फोन पर बात की। उन्होंने गिल को बताया कि वे अभी बाहर हैं और जब वापस लौटेंगे तो समय निकालकर उनसे बात करेंगे। उनके इस तरह का जवाब व सांत्वना देने पर गिल को बहुत खुशी हुई। अब वे बड□ी बेसब्री से स्टीव जॉब्स से मिलकर बातचीत करने के अवसर का इंतजार करने लगे।

1996 में एक दिन स्टीव जॉब्स ने एप्पल कंपनी में जाने का निश्चय किया। इस तरह लगभग 11 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी में गए और उसके सीईओ गिल से मुलाकात की। गिल ने उन्हें बताया कि एप्पल कंपनी लगातार डूबती जा रही है और यदि उसे बचाने के लिए कोई उचित उपाय नहीं किया गया तो एक दिन वह खत्म हो जाएगी। इस पर स्टीव जॉब्स ने उन्हें सांत्वना दी कि वे चिंता न करें। जल्दी ही इसका समाधान भी ढूंढ□ लिया जाएगा। स्टीव जॉब्स ने गिल को बताया कि यदि वे चाहे तो उनकी कंपनी नेक्स्ट को भी खरीद सकते हैं।

स्टीव जॉब्स से मुलाकात के बाद गिल को संतुष्टि मिली। 10 दिसंबर, 1996 को नेक्स्ट और बी (Be) कंपनी ने एप्पल कंपनी के सामने अपने-अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया। अंतत: एप्पल कंपनी ने नेक्स्ट कंपनी को खरीदने का फैसला कर लिया। इसके लिए गिल ने स्टीव जॉब्स को अपने निवास पर वार्ता करने के लिए बुलाया। इस तरह एक दोस्ताना माहौल में दोनों की वार्ता शुरू हुई। वार्ता के दौरान स्टीव जॉब्स ने अपनी कंपनी नेक्स्ट के एक शेयर की कीमत 12 डालर बताई। इस कीमत के अनुसार नेक्स्ट कंपनी की कुल कीमत लगभग 500 मिलियन डॉलर थी। गिल ने इस कीमत को कुछ अधिक बताया और उन्होंने स्टीव जॉब्स के सामने प्रत्येक शेयर की कीमत 10 डॉलर रखने का प्रस्ताव रखा। इस कीमत के अनुसार कंपनी की कीमत 400 मिलियन डॉलर के आस-पास थी। काफी देर तक विचार-विमर्श करने के बाद स्टीव जॉब्स ने गिल का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस तरह स्टीव जॉब्स को नेक्स्ट कंपनी की कीमत कुछ नकदी के रूप में और कुछ एप्पल कंपनी के शेयरों के रूप में अदा की गई।

एप्पल कंपनी के प्रति स्टीव जॉब्स के मन में मोह का होना स्वाभाविक था, क्योंकि इस कंपनी की स्थापना उन्होंने बड□ी जद्दोजहद के बाद की थी। वे इस कंपनी में वापसी करना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने अपनी नेक्स्ट कंपनी एप्पल कंपनी को बेच दी।

जनवरी, 1997 में स्टीव जॉब्स ने एप्पल कंपनी के लिए अंशकालिक सलाहकार के रूप में कार्य करना शुरू किया। वे फिर से इस कंपनी में अपनी स्थिति को मजबूत करना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने अपनी योजनाओं को अंजाम देना शुरू कर दिया था। इसके अलावा वे नेक्स्ट कंपनी के कर्मचारियों को एप्पल कंपनी में उच्च पदों पर देखना चाहते थे।

स्टीव जॉब्स ने खुलकर अपनी योजनाओं को अंजाम देना उचित नहीं समझा। अंतत: उन्होंने इसके लिए गुप्त तरीका अपनाया। एप्पल कंपनी के अधिकांश कर्मचारी, शेयर होल्डर्स और बोर्ड अधिकारी एप्पल कंपनी में अभी तक सुधार न आने की वजह से गिल से नाराज थे।

एक दिन कंपनी के वित्त अधिकारी फ्रेड एंडरसन ने मुख्य एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर वूलार्ड को कंपनी की बिगड□ती हुई वित्तीय स्थिति के बारे में बताया। वूलार्ड समझ गए कि यदि जल्दी ही कोई आवश्यक व उचित कदम नहीं उठाया गया तो इससे भारी नुकसान का सामना करना पड□ सकता है।

जून, 1997 में एक्जीक्यूटिव की मीटिंग हुई। इस मीटिंग के दौरान वूलार्ड ने बताया कि अगर हम गिल को अभी भी कंपनी का सीईओ बनाए रखते हैं तो केवल 10 प्रतिशत ही अवसर हैं कि कंपनी दिवालिएपन की स्थिति से बच जाए और अगर किसी और को कंपनी का सीईओ बनाते हैं तो 40 प्रतिशत अवसर हैं कि जब कंपनी अपने अस्तित्व को बचाए रख सके। इसके अलावा अगर हम स्टीव जॉब्स को कंपनी का सीईओ नियुक्त करें तो फिर यह स्थिति 60 प्रतिशत हो सकती है। बोर्ड ने काफी सोच-विचार के बाद वूलार्ड को बताया कि वे स्टीव जॉब्स से इस बारे में बात करें। इस तरह एप्पल कंपनी में फिर स्टीव जॉब्स के वापसी करने का रास्ता खुल गया।

वूलार्ड ने स्टीव जॉब्स से मुलाकात की और उन्हें बताया कि बोर्ड की इच्छा है कि वे एप्पल कंपनी के सीईओ पद पर सुशोभित हों। यहां स्टीव जॉब्स ने कोई उतावलापन नहीं दिखाया और उन्होंने वूलार्ड से कहा कि वे हमेशा एप्पल कंपनी के कल्याण के बारे में सोचते हैं। उन्होंने कहा कि वे एप्पल कंपनी की हर प्रकार से मदद करने के लिए तैयार हैं, लेकिन सीईओ बनकर नहीं, बल्कि अवैतनिक सलाहकार के तौर पर।

दूसरी ओर बाजार में यह खबर आग की तरह बड□ी तेजी से फैल गई कि स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी में जा रहे हैं। जब इस बात का पता पिक्सर कंपनी को चला तो उन्होंने स्टीव जॉब्स से संपर्क किया। स्टीव जॉब्स ने पिक्सर कंपनी को आश्वस्त किया वे पिक्सर कंपनी को छोड□कर एप्पल कंपनी में नहीं जा रहे हैं।

कुछ समय बाद जब गिल अपने परिवार के साथ छुट्टियां बिताने के लिए गए हुए थे तो उस समय उन्हें सीईओ के पद से हटा दिया गया। इसके बारे में उन्हें सूचित कर दिया गया। गिल यह सूचना पाकर हैरान रह गए, तभी उनके पास स्टीव जॉब्स का फोन आया उन्होंने बताया कि जो कुछ भी हुआ, वह गलत हुआ तथा इससे उनका कोई लेना-देना नहीं है। स्टीव जॉब्स पहले ही एप्पल कंपनी का सीईओ बनने से इंकार कर चुके थे, इसलिए एप्पल कंपनी के ही वित्त अधिकारी फ्रेड एंडरसन को सीईओ बना दिया गया। इसके अगले दिन से स्टीव जॉब्स ने एप्पल

कंपनी में आना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे वे कंपनी के हर मामले में अपनी पकड□ बनाने लगे। एक दिन उन्होंने बोर्ड के सामने प्रस्ताव रखा कि यदि उन्हें उनकी मर्जी के मुताबिक एप्पल कंपनी को चलाने की अनुमति दी जाती है तो वे ऑफिस आएंगे, अन्यथा नहीं। अंततः बोर्ड को उनकी बात स्वीकार करनी पड□ी।

स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी में फिर से अपना खोया हुआ प्रभुत्व हासिल करना चाहते थे और इसके लिए वे लगातार प्रयासरत थे। चूंकि कंपनी के बोर्ड के पुराने अधिकारियों के साथ संबंध उनकी अच्छे नहीं रहे थे और वे जानते थे कि इन अधिकारियों के साथ कार्य करना मुश्किल होगा। अतः उन्होंने पुराने बोर्ड को भंग कर नए बोर्ड को गठित करने का निश्चय किया।

जुलाई, 1997 में बोर्ड की बैठक आयोजित की गई, जिसमें स्टीव जॉब्स बोर्ड का सदस्य नामित किया गया। चूंकि बोर्ड के अधिकांश सदस्य जानते थे कि स्टीव जॉब्स को अपने मनमाने तरीके से काम करना पसंद है, इसलिए अब वे अपनी मनमानी जरूर करेंगे। अतः उन्होंने विचार किया कि अपमानित होने से बेहतर है वे अपना त्यागपत्र दे दें। इस तरह वूलार्ड को छोड□कर सभी ने अपना त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद स्टीव जॉब्स और वूलार्ड को यह अधिकार दिया गया कि वे नए बोर्ड का गठन करें। अंततः जैसा स्टीव जॉब्स चाहते थे, उनकी मर्जी के मुताबिक होने लगा। उन्होंने अपनी मर्जी के मुताबिक वफादार लोगों को नवनियुक्त बोर्ड में शामिल किया। इसके बाद उन्होंने अपना सारा ध्यान एप्पल कंपनी की ओर लगाना शुरू कर दिया। इस बात ने सभी को हैरान कर दिया था कि एक महीने के अंदर ही बाजार में एप्पल कंपनी के एक शेयर की कीमत 13 डॉलर से बढ□कर 20 डॉलर तक पहुंच गई थी और यह सब स्टीव जॉब्स की जादुई प्रतिभा के कारण ही संभव हो सका था।

स्टीव जॉब्स प्रबल इच्छाशक्ति के स्वामी थे। भविष्य के गर्भ में झांकने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। प्रबल इच्छाशक्ति और विलक्षण क्षमता के बल पर ही उन्होंने कॉलेज शिक्षा को तिलांजलि देकर उद्यमशीलता के क्षेत्र में कदम रखा था। इस बारे में एक पत्र में जॉब्स के क्रियाकलापों का आकलन कुछ इस प्रकार किया गया है–

'कॉलेज की पढ□ाई बीच में छोड□ने से लेकर कंपनी एप्पल की बुनियाद रखने से लेकर इसे 350 अरब डॉलर का साम्राज्य बनने में कर्णधार की भूमिका निभाने वाले अमेरिकी उद्यमी और आविष्कारक स्टीव जॉब्स ने पर्सनल कंप्यूटर, संगीत और मोबाइल फोन की दुनिया का कायाकल्प कर दिया।'

जॉब्स 50 साल की ही उम्र में इस दुनिया से विदा हो गए, पर उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी और उससे बढ□कर व्यवसाय के दर्शन के क्षेत्र में जो विरासत छोड□ी है, वह लंबे समय तक याद की जाती रहेगी। जॉब्स पिछले सात साल से अग्नाश्य कैंसर से जूझ रहे थे। कंप्यूटर एनिमेशन कंपनी पिक्सर की बेशुमार सफलता के पीछे भी उनका हाथ रहा। इस कंपनी ने टॉय स्टोरी और फाइंडिंग नीमो जैसे लोकप्रिय उत्पाद प्रस्तुत किए। हालांकि उन्होंने अपने जीवनकाल में कभी एक भी कंप्यूटर डिजाइन नहीं किया, लेकिन उन्हीं के कारण एप्पल के उत्पादों को बाजार में विशिष्ट ख्याति मिली। 24 फरवरी, 1955 को जन्मे स्टीवन पॉल जाब्स को पॉल और क्लारा जॉब्स ने

गोद लिया था तथा उन्होंने उनका पालन-पोषण किया। उनके असली माता-पिता का नाम युआन शीबल और अब्दुल फतेह जांडाली था। जांडाली सीरिया से आए छात्र थे, जो बाद में राजनीतिशास्त्र के प्रोफेसर बने। वे 1974 में सिलिकान वैली वापस लौटे और उन्होंने वीडियो गेम विनिर्माता कंपनी अटारी में तकनीशियन की नौकरी कर ली, लेकिन कुछ महीनों बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वे अपने कॉलेज के दोस्त डैनियल कोटक के साथ भारत की आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़े। यह मित्र भी बाद में एप्पल के प्रारंभिक कर्मचारियों में शामिल हुआ। जॉब्स लौटकर फिर अटारी कंपनी में काम करने लगे। उन्होंने वोजनियाक के साथ होमब्रिड कंप्यूटर क्लब की बैठकों में हिस्सा लेना शुरू किया। वोजनियाक उस समय एच. पी. में बतौर इंजीनियर काम कर रहे थे। वह क्लब शौकिया लोगों का समूह था। क्लब के सदस्य 1975 में कैलिफोर्निया के मेल्लो पार्क में स्टेनफोर्ड लिनियर एक्सेलरेटर सेंटर में मिलते थे।

स्टेनफोर्ड के इर्द-गिर्द की इकाइयों में उस समय पर्सलन (छोटे) कंप्यूटरों का विकास हो रहा था और यह काम तेजी से फैल रहा था।

13

सफलता की ओर बढ़ते कदम

''एडिसन के बाद स्टीव जॉब्स सबसे महान इन्वेंटर हैं। उन्होंने अपने नूतन आविष्कारों से दुनिया को उंगलियों पर ला दिया।''

–स्टीवन स्पीलबर्ग
संस्थापक, ड्रीमवर्क्स
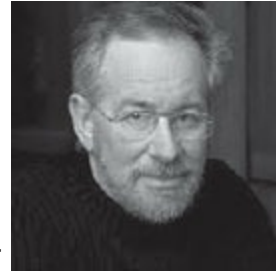
एप्पल कंपनी स्टीव जॉब्स के लिए अपने एक घर की तरह थी और जिस तरह कोई भी व्यक्ति अपने घर जल्दी-से-जल्दी लौटना चाहता है, ठीक उसी तरह स्टीव जॉब्स भी एप्पल कंपनी में लौटना चाहते थे। अंतत: उन्हें सफलता मिली और लगभग 11 साल के लंबे अंतराल के बाद वे एप्पल कंपनी में लौट आए।

जब जॉन स्कूली और गिल अमेलियो एप्पल कंपनी के सीईओ थे, उस समय कंपनी आए दिन किसी-न-किसी विवाद में फंसी ही रहती थी। इस कारण मैकिनतोश पर भी विपरीत प्रभाव पड़ा, लेकिन जैसे ही स्टीव जॉब्स लौटे तो उन्होंने विभिन्न लोगों के साथ मधुर संबंध बनाने की ओर ध्यान दिया। बिल गेट्स इनमें से एक थे। दोनों के बीच एक दोस्ताना माहौल में बात हुई और फिर दोनों के बीच इस बात पर सहमति बनी कि बिल गेट्स की कंपनी माइक्रोसॉफ्ट मैकिनटोश कंप्यूटर के लिए उच्च क्वालिटी का सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराएगी। इसके अलावा उनके बीच इस बात के लिए भी सहमति बनी कि माइक्रोसॉफ्ट कंपनी एप्पल कंपनी में 150 मिलियन डॉलर का निवेश करेगी और इसके बदले में नॉन वोटिंग शेयर लेगी।

स्टीव जॉब्स एप्पल कंपनी को फिर से सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचते हुए देखना चाहते थे। लोग एप्पल कंपनी को धीरे-धीरे भूल रहे थे। स्टीव जॉब्स के अभाव में उसकी मार्केट वैल्यू भी कम हो गई थी, लेकिन उन्होंने सबसे पहला काम यही किया कि एप्पल कंपनी की इमेज को बदला जाए। वे आम जनता और अपने स्टाफ के कर्मचारियों को यह बताने के लिए आगे आए कि एप्पल कंपनी अभी भी विश्व की शीर्ष कंपनियों में से एक है। लोगों में इस तरह की भावनाओं को जागरूक करने के लिए स्टीव जॉब्स ने अपने पुराने विश्वासपत्र क्रिएटिव डायरेक्टर मिस्टर ली क्लाऊ का साथ मांगा। क्लाऊ ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

स्टीव जॉब्स चाहते थे कि लोगों के दिलों में एप्पल कंपनी के प्रति विश्वास एवं उत्साह जगाने के लिए उच्च दर्जे का संगीत व ब्रांड बनाया जाए। इसके लिए उन्होंने क्लाऊ के साथ बहुत मेहनत की। दिन-रात की कठिन मेहनत के बाद कंपनी के विज्ञापन के लिए 'थिंक डिफरेंट' और 'हीयर टू द क्रेजी वन' का चुनाव किया गया, जिन्हें खूब प्रशंसा मिली।

जब से गिल अमेलियो एप्पल कंपनी से गए थे, तब से ही पूरी तरह से कंपनी का देख-रेख स्टीव जॉब्स कर रहे थे। हालांकि फ्रेड एंडरसन कंपनी के सीईओ थे, लेकिन फिर भी स्टीव जॉब्स के कंपनी के हर क्षेत्र में पूरी दखलंदाजी थी। अब उनकी इच्छा होने लगी थी कि वे कंपनी का चार्ज अपने हाथों में ले लें। इस तरह सितंबर, 1997 में इन्होंने स्पष्ट किया कि इसके लिए वे न तो कोई वेतन लेंगे और न किसी भी प्रकार का कंपनी के साथ कोई अनुबंध करेंगे। इसके अलावा उन्होंने यह भी बताया कि उनका यह पद अंतरिम होगा और उस पद को आईसीईओ के नाम से जाना जाएगा। यद्यपि इसी दौरान कंपनी के लिए पूर्णकालिक सीईओ की खोजबीन होती रही, लेकिन ऐसा कोई भी व्यक्ति न मिल सका, जो स्टीव जॉब्स के व्यक्तित्व के समकक्ष होता।

एप्पल कंपनी का लगभग हर क्षेत्र स्टीव जॉब्स के हाथों में आ गया था। उन्होंने कंपनी के उत्पादों की ओर ध्यान दिया और उनमें कुछ बदलाव करने का विचार किया। उन्होंने अपना यह प्रस्ताव बोर्ड के सामने रखा, लेकिन बोर्ड को यह काम कुछ जोखिमपूर्ण लगा, इसलिए उसने उनके प्रस्ताव पर अपनी ओर से कोई सहमति नहीं दी। काफी उठा-पटक के बाद उन्होंने कंपनी के 4 उत्पादों को चालू रखकर बाकी उत्पादों को किनारे लगाने के लिए बोर्ड को राजी कर लिया। ये 4 उत्पाद थे–प्रोफेशनल डेस्कटॉप के लिए पावर मैकिनतोश जी-3, प्रोफेशनल पोर्टेबिल के लिए पावर बुक जी-3, कंज्यूमर डेस्कटॉप के लिए आईमैक और कंज्यूमर पोर्टेबिल के लिए आईबुक। स्टीव जॉब्स ने इन सभी उत्पादों पर कड़ी मेहनत की। यह उनकी मेहनत का ही परिणाम था कि लगभग दो वर्षों से गंभीर नुकसान का सामना कर रही कंपनी ने 1998 में 309 मिलियन डॉलर का भारी मुनाफा कमाया।

स्टीव जॉब्स ने अपने कर्मचारियों में कार्य के प्रति जुनून पैदा कर दिया था। वे कर्मचारियों को समय की अहमियत समझाते रहते थे और उनसे पूरी मेहनत व लगन के साथ काम करने की भी अपील करते रहते थे। वे कर्मचारियों को प्रोत्साहित भी करते रहते थे, जिससे कर्मचारियों में उत्साह का संचार होता रहता था।

स्टीव जॉब्स अपने उत्पादों को लेकर बहुत सक्रिय रहते थे। उन्हें जो उत्पाद आधारहीन लगे, उन्हें उन्होंने हटा दिया और जिनमें उन्हें भविष्य में उभरने-चमकने की झलक दिखाई दी, उन पर उन्होंने दिन-रात मेहनत करना शुरू कर दिया। उन्होंने उत्पादन पर भी विशेष ध्यान दिया और इसमें सुधार लाने के लिए कुछ आवश्यक कदम भी उठाए। उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण फैसला लिया कि वे सर्किट बोर्ड से लेकर फिनिश्ड कंप्यूटर तक सब कुछ अपनी कंपनी में ही बनाएंगे। अब वे किसी और कंपनी पर निर्भर नहीं रहना चाहते थे।

अनुशासन का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यदि जीवन में अनुशासन नहीं है तो समझो कि व्यक्ति अपने कार्य के प्रति गंभीर नहीं है। अनुशासन सफलता के मूल मंत्रों में से एक है। स्टीव जॉब्स भी एक अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। वे कंपनी के कर्मचारियों को समय-समय पर अनुशासन की सीख देते रहते थे। उनकी बातों को सभी बड़े गौर से सुनते थे। उनमें सामने वाले व्यक्ति को आकर्षित करने की अद्भुत शक्ति थी। उनके विचार इतने प्रभावपूर्ण व ओजस्वी होते थे कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रहते थे।

स्टीव जॉब्स की हमेशा ही यह कोशिश रहती थी कि उनकी कंपनी को किसी भी तरह के नुकसान का सामना न करना पड□। यही कारण था कि उन्होंने कंपनी के स्टोर में दो महीने के बजाय एक महीने का ही माल रखना शुरू कर दिया, जिससे उनकी कंपनी की पूंजी अनावश्यक रूप से फंसी न रहे। वे चाहते थे कि उनकी कंपनी के स्टोर का प्रबंधन उच्च दर्जे का हो। इस बारे में उनका मानना था कि स्टोर के कारण भी उत्पादन और उसकी गुणवत्ता लागत प्रभावित होती है। स्टीव जॉब्स तो शुरुआत से ही कठिन परिश्रमी व्यक्ति थे। यही कारण था कि कुछ लोगों को उनके इस स्वभाव के कारण कंपनी छोड□नी पड□ी तो कुछ उनके साथ कदम-से-कदम मिलाकर आगे बढ□ते गए।

जब एप्पल कंपनी के स्टोर प्रबंधन की देख-रेख करने वाला कोई नहीं रहा तो इसकी जिम्मेदारी भी स्टीव जॉब्स ने अपने हाथों में ले ली। एक दिन उनकी मुलाकात कॉम्पैक कंप्यूटर के 37 वर्षीय इन्वेंट्री मैनेजर टिम कुक से हुई। उनकी इच्छा थी कि टिम कुक एप्पल कंपनी जॉइन कर लें। उन्होंने इस बारे में टिम कुक से बातकर कंपनी के स्टोर प्रबंधक का कार्यभार संभालने के लिए राजी कर लिया।

टिम कुक भी स्टीव जॉब्स की तरह ही मेहनती और लगनशील व्यक्ति थे। उन्होंने कंपनी के स्टोर की दशा सुधारने के लिए दिन-रात मेहनत की और कुछ कड□ फैसले लिये। उनके द्वारा लिये गए कड□ फैसलों का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने कंपनी के सप्लायरों की संख्या 100 से घटाकर 21 कर दी। यही नहीं, उन्होंने स्टॉक गोदामों की संख्या भी 19 से घटाकर 10 तक कर दी। इसके अलावा उन्होंने कंप्यूटर उत्पादन की अवधि भी 4 महीने से घटाकर 2 महीने कर दी। इस तरह सब कुछ उसी तरह होने लगा, जैसे स्टीव जॉब्स चाहते थे। कंपनी दिन-प्रतिदिन मुनाफा कमाने की ओर कदम बढ□ाने लगी।

स्टीव जॉब्स अभी तक एप्पल कंपनी के अंतरिम सीईओ, जबकि कंपनी के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर वूलार्ड चाहते थे कि वे अपने पद सीईओ के साथ लगने वाले शब्द अंतरिम को हटा दें और केवल सीईओ शब्द का ही प्रयोग करें। स्टीव ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वे कंपनी के लिए बहुत कड□ी मेहनत करते थे, लेकिन बदले में केवल प्रतिवर्ष 1 डॉलर ही लेते रहते थे। इसके साथ ही सबसे बड□ी बात यह थी कि कंपनी का कोई भी स्टॉक ऑप्शन उनके पास में नहीं था। इससे कंपनी के सभी कर्मचारी हैरान थे।

जब से दोबारा 1997 में स्टीव जॉब्स के एप्पल कंपनी ज्वॉइन की थी, कंपनी लगातार सफलता की सीढि□यां चढ□ती जा रही थी। 1997 में कंपनी के एक शेयर की कीमत केवल 14 डॉलर के आस-पास थी, लेकिन स्टीव जॉब्स की देख-रेख में 2,000 तक आते-आते यह कीमत भारी उछाल के साथ इसकी कीमत 102 डॉलर हो गई।

एप्पल कंपनी का प्रत्येक कर्मचारी स्टीव जॉब्स के करिश्माई व्यक्तित्व से प्रभावित था। वूलार्ड भी उनमें से एक थे। वे उनके विश्वसनीय व्यक्ति होने के साथ-साथ शुभचिंतक भी थे। उन्होंने उनसे बात की कि उन्हें 1997 से ही एक अच्छा स्टॉक ऑप्शन स्वीकार कर लेना चाहिए, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से साफ मना कर दिया। उन्होंने बताया कि इससे कंपनी के कर्मचारी

यह समझेंगे कि वे कंपनी में दोबारा पैसा कमाने के लिए आए हैं, जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है।

एक दिन स्टीव जॉब्स अपनी पत्नी लॉरेन के साथ टहल रहे थे। इसी बीच उनकी पत्नी ने उनसे सीईओ के साथ अंतरिम शब्द लगाने की बात पर विचार-विमर्श किया। लॉरेन ने उन्हें सलाह दी कि यदि वे अंतरिम शब्द आई का प्रयोग करना बंद कर दें तो यह उनके और उनकी कंपनी के लिए बहुत फायदेमंद रहेगा। इस तरह उन्होंने सीईओ के साथ लगने वाले अंतरिम शब्द आई का प्रयोग न करने का मन बना लिया।

कुछ दिनों के बाद वूलार्ड ने स्टीव जॉब्स को सूचित किया कि एप्पल कंपनी का प्रबंधन उन्हें एक ठीक-ठाक स्टॉक अनुदान देने के लिए सोच रहा है। इस काम के लिए वूलार्ड को अधिकृत किया गया था। स्टीव जॉब्स ने वूलार्ड को बताया कि उनकी इच्छा है कि उनके पास एक हवाई जहाज हो और जब वे अपने परिवार के साथ छुट्टियां बिताने के लिए बाहर जाएं तो अपने ही हवाई जहाज से जाएं। यह बात वूलार्ड ने बोर्ड के सामने रखी तो बोर्ड ने तुरंत इसके लिए अपनी स्वीकृति दे दी। इस तरह वूलार्ड ने स्टीव जॉब्स को एक गल्फ स्ट्रीम-5 के साथ-साथ 14 मिलियन स्टॉक ऑप्शन देने का निर्णय किया। स्टॉक आप्शन की बात पर स्टीव जॉब्स ने विपरीत प्रतिक्रिया दी। उन्होंने वूलार्ड से कहा कि वे तो 14 मिलियन के बजाय 20 मिलियन स्टॉक आप्शन के मिलने के बारे में सोच रहे थे। इस पर वूलार्ड बोले कि आप तो स्टॉक ऑप्शन की बात को नकार रहे थे, लेकिन फिर भी बोर्ड ने आपके लिए 14 मिलयिन डॉलर देने की व्यवस्था की। बोर्ड और उनके बीच स्टॉक ऑप्शन के मामले को लेकर हल्की-फुल्की नोक-झोंक हुई, लेकिन बाद में मामले को सुलझा लिया गया।

जनवरी, 2000 में स्टीव जॉब्स ने एप्पल के ऑडिटोरियम में मैकिनतोश के नए ऑपरेटिंग सिस्टम की घोषणा की। इसके साथ ही उन्होंने यह घोषणा भी की कि उन्होंने आज से ही अपने पद सीईओ के साथ लगने वाला अंतरिम शब्द आई हटा दिया है। उनकी इस घोषणा का सभी ने बड□े जोरदार ढंग से स्वागत किया।

स्टीव जॉब्स का शुरुआत से ही यह मानना रहा था कि व्यक्ति को समय के साथ-साथ अपने आपमें बदलाव लाना चाहिए और इस बदलाव के तहत वे चाहते थे कि एक 'नेटवर्क कंप्यूटर' का निर्माण किया जाए, जबकि कंपनी के बोर्ड के एक सदस्य लैरी इलीसन कंप्यूटर के माध्यम से इंटरनेट या अन्य प्रकार के नेटवर्क को जोड□ने की बात पर जोर दे रहे थे। दूसरी ओर वित्त विभाग के प्रमुख एंडरसन का मनना था कि कंप्यूटर के साथ-साथ डिस्क ड्राइव भी होना चाहिए, जिससे लोग इसका उपयोग घरेलू डेस्कटॉप के रूप में कर सकें। इस तरह विख्यात डिजाइनर और स्टीव जॉब्स ने कुशलतापूर्वक एक आकर्षक डिजाइन वाला डेस्कटॉप कंप्यूटर तैयार किया और इसका नाम उन्होंने आईमैक (iMAC) रखा।

मई, 1998 में आईमैक डेस्कटॉप कंप्यूटर को लांच किया गया। इसमें स्टीव जॉब्स ने वे सब चीजें उपलब्ध कराई थीं, जिनकी वे आवश्यकता महसूस करते थे यानी यह एक ऑल-इन-वन कंप्यूटर था। इस कंप्यूटर की कीमत उन्होंने केवल 1,200 डॉलर रखी, जबकि उस समय एप्पल कंपनी के कंप्यूटर 2,000 डॉलर में बेचे जा रहे थे।

स्टीव जॉब्स के नेतृत्व में एप्पल कंपनी ने बड़ी तेजी से सुधार किया और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा फिर से हासिल कर ली। मई, 2001 में उनकी सलाह के अनुसार वर्जीनिया में एप्पल स्टोर खोलने का फैसला किया गया। शुरुआत में एप्पल स्टोर में आने वाले लोगों की संख्या केवल 250 प्रति सप्ताह थी, जो धीरे-धीरे बढ़ती चली गई। 2004 में यह संख्या भारी वृद्धि के साथ 5,400 प्रति सप्ताह हो गई। यही नहीं, 2004 में स्टोर से प्राप्त होने वाली बिक्री 102 मिलियन डॉलर थी, जो कि रिटेल बिजनेस के क्षेत्र में सबसे अधिक थी और यह सब स्टीव जॉब्स के जादुई व्यक्तित्व का कमाल था।

स्टीव जॉब्स की सफलता की कहानी भी बड़ी निराली है। उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई ड्रॉप करके जिस प्रकार तकनीकी दुनिया में अहम् मुकाम बनाया, वह बड़ी प्रेरणास्पद है। दैनिक हिंदी 'अमर उजाला' ने इस तथ्य को इस प्रकार प्रकट किया है–

''कॉलेज ड्रॉपआउट से 350 अरब डॉलर के एप्पल एंपायर के प्रमुख बनने वाले स्टीव जॉब्स ने पर्सनल कंप्यूटिंग, म्यूजिक और मोबाइल फोन की दुनिया ही बदल डाली। कुछ अलग करने के जुनून से उन्होंने नई ऊंचाइयां हासिल कीं। तकनीक के इस क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत की।

स्टीव ने केवल एप्पल को ही कामयाब नहीं बनाया, बल्कि कंप्यूटर एनिमेशन फर्म पिक्सर, टॉप स्टोरी के निर्माता और फाइंडिंग नीमो की जबरदस्त सफलता के पीछे भी वही रहे। हालांकि स्टीव ने खुद कभी कोई कंप्यूटर डिजाइन नहीं किया, लेकिन उनकी वजह से ही एप्पल के उत्पादों को सबसे अलग माना जाता रहा है। खास बात यह थी कि उन्होंने इस प्रकार की कोई पढ़ाई नहीं की थी, लेकिन 300 से ज्यादा अमेरिकी पेटेंट उनके नाम पर अकेले या किसी के साथ हैं। स्टीव ने 1976 में स्टीफन वोजनियाक के साथ मिलकर अपने पैसों से एप्पल कंपनी की नींव रखी। लांस आल्टोस में 1,300 डॉलर की रकम से स्टीव के गैराज से इस कंपनी की शुरुआत हुई। वोजनियाक ने एप्पल-I कंप्यूटर डिजाइन किया।"

14

अनंत की ओर

''विश्व ने एक महान और अत्यंत प्रभावशाली विचारक खो दिया। स्टीव जॉब्स अपनी पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ सीईओ थे। मुझे उनके निधन से गहरा आघात लगा है।''

– रुपर्ट मर्डोक
चेयरमैन, न्यूजकॉर्प

लगातार कठिन परिश्रम करने के कारण स्टीव जॉब्स का शरीर थक गया था और इसी कारण वे अस्वस्थ रहने लगे थे। यदि वे थोड़ी देर तक बातें कर लेते थे तो उन्हें थकान-सी महसूस होने लगती थी। उन्हें महसूस होने लगा था, जैसे उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती जा रही है। उन्हें अपनी किडनी में पथरी की बीमारी का भी अहसास हुआ। अत: अक्टूबर, 2003 में उन्होंने यूरोलॉजिस्ट से मुलाकात की। यूरोलॉजिस्ट ने उनकी जांच की, लेकिन जांच में कुछ भी असामान्य बात नजर नहीं आई। इसके बाद डॉक्टर ने उन्हें गुर्दे और मूत्रवाहिनी का कैट स्कैन कराने की सलाह दी। डॉक्टर की सलाह के अनुसार जब उन्होंने अपना कैट स्कैन कराया तो पता चला कि गुर्दे में कोई समस्या नहीं है, लेकिन अग्नाश्य में काला धब्बा दिखाई दे रहा है। अत: डॉक्टर ने उन्हें अग्नाश्य की जांच कराने की सलाह दी, लेकिन वे इसके लिए तैयार नहीं हुए। डॉक्टर के काफी समझाने के बाद वे अग्नाश्य की जांच कराने के लिए तैयार हो गए।

स्टीव को जिस बात की आशंका थी, वही बात अंतत: सामने आ गई। अग्नाश्य की जांच के बाद डॉक्टरों ने उन्हें बताया कि वे ट्यूमर से पीड़ित हैं। डॉक्टरों ने उन्हें सलाह दी कि अब उन्हें अधिक सोचने-विचारने और भागने-दौड़ने के बजाय अधिक-से-अधिक आराम करना चाहिए, क्योंकि यही उनकी सेहत के लिए बेहतर है।

इसके अगले दिन डॉक्टरों ने फिर स्टीव जॉब्स की बायोप्सी की जांच की, जिसमें पता चला कि अभी कैंसर शुरुआती चरण में है। अत: सर्जरी के माध्यम से उसका इलाज किया जा सकता है।

कैंसर से पीड़ित होने की बात सबसे पहले स्टीव जॉब्स ने अपने मित्र लैरी ब्रिलियेंट को फोन पर बताई। इसके बाद कैंसर के बारे में एप्पल कंपनी के बोर्ड के सदस्य आर्ट लेविनसन को बताया।

स्टीव जॉब्स के मित्र लैरी ने उन्हें सलाह दी कि उन्हें सर्जरी के माध्यम से अपना इलाज कराना चाहिए, लेकिन स्टीव जॉब्स इसके लिए तैयार नहीं हुए। उन्हें लगता था कि शायद कोई

और विकल्प सामने आ जाए। उनकी पत्नी लॉरेन ने भी उन्हें बहुत समझाया कि सर्जरी के माध्यम से कैंसर का बेहतर इलाज संभव है तो फिर उन्हें इसमें कोई देरी नहीं करनी चाहिए, लेकिन स्टीव न माने। इसी ना-नुकुर में लगभग 8 महीने से भी ज्यादा लंबा समय बीत गया, लेकिन स्टीव जॉब्स सर्जरी के माध्यम से इलाज कराने के लिए तैयार नहीं हुए।

जुलाई, 2004 में डॉक्टरों की सलाह पर स्टीव जॉब्स ने एक बार फिर अपना कैट स्कैन कराया, जिसमें जांच के दौरान पता चला कि कैंसर का खतरा पहले की अपेक्षा तेजी से बढ□ रहा है। उनकी बहन मोना सिंपसन ने भी उन्हें सलाह दी कि अभी भी समय रहते उन्हें सर्जरी के माध्यम से अपना इलाज करा लेना चाहिए। मित्रों, सहयोगियों और पारिवारिक सदस्यों के भारी दबाव के बाद स्टीव जॉब्स सर्जरी के माध्यम से कैंसर का इलाज कराने के लिए तैयार हो गए। डॉक्टरों ने बड□ी सावधानी से उनकी सर्जरी की, जो कि सफल रही।

स्टीव जॉब्स अपने काम के प्रति बहुत गंभीर रहते थे। इसका पता इस बात से चलता है कि सर्जरी के अगले दिन उन्होंने हॉस्पिटल से ही एप्पल कंपनी के कर्मचारियों को सर्जरी के बारे में बताने के साथ-साथ ई-मेल के माध्यम से दिशा-निर्देश जारी किए।

इस सर्जरी से पहले कैंसर ने स्टीव जॉब्स के शरीर को बुरी तरह से अपने जाल में जकड□ लिया था। यदि 8 महीने पहले ही वे डॉक्टरों के कहने के अनुसार सर्जरी करा लेते तो शायद उनके शरीर में तेजी से कैंसर न फैलता।

स्टीव जॉब्स कैंसर की बात को गुप्त ही रखना चाहते थे, इसलिए जो भी उनसे पूछता तो वे बस इतना ही कहते कि वे पहले से अधिक अच्छा महसूस कर रहे हैं। हालांकि वे अपना जन्मदिन बड□ी साज-सज्जा व धूमधाम से मनाते थे, लेकिन इस बार सर्जरी के बाद उन्होंने अपना जन्मदिन बड□ी सादगी से मनाया। जन्मदिन पर आयोजित पार्टी में भी उन्होंने केवल कुछ खास व करीबी लोगों को ही बुलाया था। सभी ने पार्टी का लुत्फ उठाया। स्टीव जॉब्स इस बात से आश्चर्यचकित थे कि पार्टी में अधिकांश व्यंजन शाकाहारी थे। चूंकि उन्हें शाकाहारी भोजन पसंद था, इसीलिए अधिकाधिक रूप में शाकाहारी व्यंजनों का इंतजाम किया गया था।

टिम कुक को स्टीव जॉब्स के सहयोगियों व विश्वासपात्रों में गिना जाता था। स्टीव जॉब्स की अनुपस्थिति में टिमकुक ने एप्पल कंपनी का संचालन बड□ी सूझ-बूझ के साथ किया था। उन्होंने कंपनी को स्टीव जॉब्स की कमी भी महसूस नहीं होने दी। जब स्टीव जॉब्स वापस कंपनी में लौटकर आए तो उन्होंने फिर से कार्यभार स्टीव जॉब्स को सौंप दिया।

स्टीव जॉब्स टिमकुक के कार्य करने के तरीके से बहुत प्रभावित थे। यही कारण था कि स्टीव जॉब्स ने 2005 में टिमकुक के साथ जापान जाते समय बताया कि वे उन्हें एप्पल कंपनी का मुख्य संचालन अधिकारी नियुक्त करने जा रहे हैं। उनके इस फैसले से टिम कुक अवाक् रह गए, क्योंकि उन्हें इस बारे में किसी भी प्रकार की कोई पूर्वसूचना नहीं थी। इस तरह टिम कुक एप्पल कंपनी के मुख्य संचालन अधिकारी बन गए।

जब यह बात कंपनी के अन्य कर्मचारियों को पता चली तो वे नाराज हो उठे। इन कर्मचारियों

में कुछ टिमकुक से वरिष्ठ भी थे और उन्हें लगता था कि उन्हें इस पद पर होना चाहिए। अत: कुछ कर्मचारियों ने इसी नाराजगी में कंपनी छोड□ दी, लेकिन स्टीव जॉब्स ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपने फैसले पर अटल रहे।

स्टीव जॉब्स ने भयंकर बीमारी से पीडि□त होने के बाद भी कार्य के प्रति अपने मोह को नहीं त्यागा। वे एप्पल कंपनी के भविष्य को लेकर कई-कई घंटों की बैठक करने लगे थे इन बैठकों में केवल यही चर्चा की जाती कि एप्पल कंपनी के मिशन में सभी कर्मचारी एकजुट होकर अपना योगदान दें। उनके विचारों का सभी कर्मचारियों पर व्यापक प्रभाव पड□ता था और सभी उन्हें आश्वस्त भी करते थे कि वे उनकी बात का अनुसरण अवश्य करेंगे।

कैंसर से पूरी तरह निजात (राहत) दिलाने के लिए अभी भी डॉक्टर स्टीव जॉब्स का इलाज कर रहे थे। 2008 में की गई डॉक्टरी जांच में सामने आया कि कैंसर फैल रहा है। हालांकि डॉक्टरों ने सर्जरी के बाद अच्छी थैरेपी की व्यवस्था की थी, लेकिन फिर भी कैंसर बढ□ता रहा। इस कारण उन्हें दर्द की शिकायत लगातार बढ□ती रही। यह दर्द इतना बढ□ गया कि अब उन्हें खाने-पीने में भी तकलीफ महसूस होने लगी।

डॉक्टरों के सामने एक अन्य समस्या यह आ गई कि स्टीव को जो दर्द होता है, वह कैंसर के कारण होता है या फिर इसकी कोई और वजह है। इसका पता लगाने की भी कोशिश की गई, लेकिन कोई विशेष सफलता हाथ न लगी। शरीर को पर्याप्त मात्रा में विटामिन और प्रोटीन न मिलने के कारण उनका वजन भी घटता जा रहा था। यह चिंता करने वाली एक अन्य बात थी।

मार्च, 2008 में स्टीव जॉब्स के स्वास्थ्य से संबंधित खबरें प्रकाशित हुईं। जून में जब वे आईफोन 3-जी को लांच करने के लिए स्टेज पर आए तो वे बहुत ही ज्यादा कमजोर दिखाई दे रहे थे। यह भी सब भाग्य की ही बात थी कि जैसे-जैसे स्टीव जॉब्स के स्वास्थ्य स्तर गिरता जा रहा था, वैसे-वैसे एप्पल कंपनी के शेयरों की कीमत भी गिरती जा रही थी। जून, 2008 में जहां एप्पल कंपनी के एक शेयर की कीमत 188 डॉलर थी, वहीं अक्टूबर, 2008 तक यह केवल 97 डॉलर ही रह गई थी।

चारों ओर स्टीव जॉब्स के स्वास्थ्य संबंधी खबरें छाई हुई थीं। उस समय उनकी स्वास्थ्य संबंधी खबरें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की सुर्खियां बनी हुई थीं। इन सबसे स्टीव जॉब्स स्वयं को असहज महसूस करते थे। अत: 5 जनवरी, 2009 को उन्होंने एक प्रेस नोट जारी किया, जिसमें उन्होंने बताया कि वे गंभीर रूप से बीमार नहीं हैं और जल्द ही वापसी करेंगे। उन्होंने बताया कि हालांकि 2008 में मेरा वजन कम हुआ है और डॉक्टरों ने कहा भी है कि यह शरीर के हार्मोंस में असंतुलन के कारण है, लेकिन उपचार के बाद जल्दी ही सब कुछ ठीक हो जाएगा।

स्टीव जॉब्स के कैंसर के इलाज का पहला चरण तो पूरा हो चुका था और अब दूसरा चरण शुरू हो गया था, लेकिन इस दौरान दवाओं ने अपना उल्टा असर दिखाना शुरू कर दिया। उनके शरीर की खाल जगह-जगह से सूखने और फटने लगी थी। इस समस्या के इलाज के लिए वे स्विट्जरलैंड भी गए, लेकिन वहां भी उनको आराम न मिला। अपने स्वास्थ्य की गंभीरता को

समझते हुए स्टीव जॉब्स ने कुछ समय के लिए अवकाश पर जाने का फैसला किया। इस संबंध में उन्होंने 14 जनवरी, 2009 को एप्पल कंपनी के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें लिखा था कि मेरी स्वास्थ्य संबंधी खबरें मेरे परिवार के साथ-साथ एप्पल कंपनी को भी प्रभावित कर रही हैं। कुछ समय पहले मैंने बताया था कि मेरी हार्मोंस असंतुलन की बीमारी का इलाज संभव है, लेकिन ऐसा न हो सका। पिछले हफ्ते से मैं महसूस कर रहा हूं कि मेरी बीमारी अब जटिल होती जा रही है। मैं एक बात और बताना चाहता हूं कि जैसे कुछ समय पहले टिम बुक ने एप्पल कंपनी की जिम्मेदारी संभाली थी, वैसे ही वे फिर संभालेंगे, जब तक कि मैं स्वस्थ होकर वापस नहीं लौट आता।

एप्पल कंपनी के बोर्ड के सदस्यों कैंपवेल और लेविंसन से मिलकर स्टीव जॉब्स ने अपने स्वास्थ्य के साथ-साथ एप्पल कंपनी की भविष्य की दशा और दिशा दोनों के बारे में बातचीत की। इन दोनों व्यक्तियों को छोड□कर स्टीव जॉब्स ने कंपनी के किसी अन्य सदस्यों को अपने स्वास्थ्य संबंधी खबर से अवगत नहीं कराया। शायद इसका कारण यह रहा हो कि ये दोनों व्यक्ति उनके मित्र थे।

जॉर्ज फिशर नामक डॉक्टर ने स्टीव जॉब्स को सलाह दी कि एक महीने के अंदर उनके लीवर का ट्रांसप्लांट किया जाना जरूरी है और यदि ऐसा नहीं किया जाता तो भारी समस्या का सामना करना पड□ सकता है। स्टीव जॉब्स ने डॉक्टर की इस सलाह को गंभीरता से नहीं लिया। उनकी पत्नी लॉरेन ने उन्हें बहुत समझाया और उनके समझाने के बाद ही वे लीवर के ट्रांसप्लांट के लिए तैयार हुए। अब उनके सामने समस्या यह आ खड□ी हुई थी कि उनके ब्लड ग्रुप के लीवर के दानदाताओं की संख्या बहुत ही कम थी यानी उन्हें जल्दी ही किडनी मिलने की संभावना बहुत ही कम थी। इसका कारण यह था कि किडनी लेने वालों में उनका स्थान बहुत पीछे था, जबकि उनसे पहले ऐसे अनेक व्यक्ति थे जिन्हें भी किडनी की आवश्यकता थी। अत: डॉक्टरों ने संभावना जताई कि उनका नंबर अप्रैल तक आ सकता है।

इसके बाद स्टीव जॉब्स का संपर्क एक वकील जॉर्ज रिले से हुआ, जो एप्पल कंपनी के सलाहकार थे। रिले के एक मित्र जेम्स इयासन मैथेडिस्ट यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल मेमफिस में एक ट्रांसप्लांट इंस्टीट्यूट चलाते थे। इस इंस्टीट्यूट की गिनती जाने-माने व अच्छे इंस्टीट्यूट्स में होती थी। जेम्स ने बताया कि यदि मेमफिस की प्रतीक्षा सूची में अन्य राज्य का कोई मरीज आता है तो उन्हें कोई परेशानी नहीं है, क्योंकि यह तो मरीज की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह अपना इलाज कहां कराता है। अमेरिका में यह नियम है कि मरीज को किडनी मिलने के 8 घंटे के भीतर ही हॉस्पिटल पहुंच जाना चाहिए। 8 घंटे के भीतर स्टीव जॉब्स को हॉस्पिटल पहुंचने में कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि उनके पास अपना निजी विमान था। इस तरह काफी जद्दोजहद के बाद उनकी ट्रांसप्लांट प्रक्रिया सफल रही, लेकिन अभी समस्या से पूरी तरह निजात नहीं मिल सकी थी, क्योंकि उनके गुर्दे के चारों ओर कैंसर फैल गया था। अत: डॉक्टरों ने उनके इलाज की प्रक्रिया को लगातार जारी रखा।

स्टीव जॉब्स के सभी पारिवारिक सदस्य उनकी देखभाल में जुट गए थे। उनको सभी से

अपेक्षित सहयोग मिल रहा था। सभी उनको ढांढस बंधाते रहते थे कि वे जल्दी ही स्वस्थ हो जाएंगे। इस तरह की बातों से उन्हें हौसला मिलता था। उचित देखभाल के कारण उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा था।

मई, 2009 में स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार के कारण स्टीव जॉब्स अपने निजी विमान से वापस घर लौट आए। उन्हें रिसीव करने के लिए टिम कुक और डिजाइनर जॉनी पहले से ही एयरपोर्ट पर मौजूद थे। वे दोनों उन्हें देखकर भावुक हो उठे, क्योंकि वे उनसे एक लंबे समय के बाद मिल रहे थे। वे उन्हें छोड□ने उनके घर तक आए। इसी बीच उन्होंने बताया कि उनकी गैर-मौजूदगी में कंपनी में काम करना बहुत मुश्किल रहा है। जॉनी ने उन्हें एक खुशखबरी यह भी दी कि जब वे इलाज के लिए हॉस्पिटल में भर्ती हुए थे तो उस समय एप्पल के एक शेयर की कीमत 82 डॉलर थी, लेकिन जैसे ही वे वापस घर लौट आए तो यह कीमत बड□ी तेजी से बढ□कर 140 डॉलर तक पहुंच गई।

स्टीव जॉब्स के वापस घर लौटने के बाद एप्पल कंपनी के प्रबंधन बोर्ड की मीटिंग हुई। चूंकि उन्हें डॉक्टरों ने अधिक-से-अधिक आराम करने की सलाह दी थी, लेकिन प्रबंधन बोर्ड की मीटिंग में शिरकत कर उन्होंने सभी को हैरत में डाल दिया। बोर्ड के सभी सदस्य उन्हें देखकर उत्साहित हो उठे। उन्हें भी काफी समय बाद ऑफिस में आना अच्छा लग रहा था।

2010 की शुरुआत में स्टीव जॉब्स ने स्वयं को पूरी तरह से स्वस्थ महसूस किया। अत: उन्होंने फिर से अपने काम को लेकर भाग-दौड□ शुरू कर दी। वे फिर से एप्पल कंपनी के उत्पादों को लेकर व्यस्त रहने लगे थे। उनका जुझारूपन एवं समर्पण क्षमता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके नेतृत्व में कंपनी ने आईफोन और आईपॉड जैसे दो बहुमूल्य उत्पाद इस साल बाजार में उतारे और इन्हें अपेक्षानुसार सफलता भी मिली।

ऐसा नहीं था कि एप्पल कंपनी के कार्यों में व्यस्त रहते हुए स्टीव जॉब्स अपने परिवार के लिए समय नहीं निकालते थे। उन्हें परिवार से गहरा लगाव था। वे अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानते थे कि उन्हें लॉरेन जैसी अच्छी देखभाल करने वाली पत्नी मिली, जो हर क्षण-प्रतिक्षण उनके सुख-दुख में उनके साथ रहीं। उनका एक ही पुत्र था, जिसे वे बेहद प्यार करते थे। रीड को लेकर उनके बहुत सारे ख्वाब थे। रीड की आयु 18 वर्ष की हो चुकी थी और वे अपने पिता की तरह दिखते थे। चेहरा और आंखें सभी कुछ पिता की मुखाकृति से मिलता-जुलता था। एक बार स्टीव जॉब्स ने बताया कि जब उन्हें अपने कैंसर से पीडि□त होने की बात पता चली तो उन्होंने ईश्वर से कहा कि मैं अपने प्रिय पुत्र रीड को 2010 तक स्नातक होते हुए देखना चाहता हूं, पर मेरी यह तीव्र इच्छा 2010 से पहले ही 2009 में पूरी हो गई। रीड को भी अपने पिता से बहुत लगाव था। रीड को पता था कि उनके पिता कैंसर से पीडि□त हैं, इसलिए वे अपना ज्यादा-से-ज्यादा समय पिता की देखभाल करते हुए बिताना पसंद करते थे।

फरवरी, 2010 में स्टीव जॉब्स ने अपना 55 वां जन्मदिन बड□े सीधे-सादे ढंग से मनाया। इस अवसर पर उन्होंने अपने करीबी लोगों को ही बुलाया। सभी लोग बहुत खुश थे। वे सभी लोगों से बड□े प्यार से मिल-जुल रहे थे और सभी से बातचीत भी कर रहे थे। सभी को उनके

व्यवहार से लग रहा था कि वे स्वस्थ हो रहे हैं, जबकि स्थिति कुछ और ही थी जिसका उनके मिलने-जुलने वाले आकलन नहीं कर पा रहे थे।

कैंसर ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया था। स्टीव जॉब्स की सहनशक्ति उनका साथ छोड़ने लगी थी। उन्हें फिर से अपने शरीर में दर्द की शिकायत महसूस होने लगी थी। डॉक्टरों ने उनकी बीमारी को हमेशा ही गंभीरता से लिया था। उन्होंने उनकी फिर से जांच-पड़ताल करना शुरू कर दिया था, लेकिन स्थिति स्पष्ट नहीं हो पा रही थी। दिन-प्रतिदिन उनकी सहनशक्ति कमजोर होती जा रही थी।

नवंबर, 2010 में ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी कि स्टीव जॉब्स ने खाना छोड़ दिया था। वे मुश्किल से तरल भोजन का सेवन करने लगे थे। वे मायूस-से रहने लगे थे। उनका वजन बड़ी तेजी से कम हो रहा था। कम होते-होते उनका वजन 115 पौंड से भी कम रह गया। उन्हें महसूस होने लगा था कि अब उनका अंतिम समय नजदीक है।

2011 की शुरुआत में डॉक्टरों ने जांच के दौरान पाया कि स्टीव जॉब्स के गुर्दे में एक और नया ट्यूमर बन रहा है। स्टीव जॉब्स ने बताया भी कि उन्हें शरीर में बहुत तेज दर्द होता है, जो उनके लिए असहनीय होता है। जब वे खाना खाने के लिए मना करते थे तो लॉरेन उनसे कहती थीं कि जीवित रहने के लिए इंसान को खाना, खाना ही पड़ता है। लॉरेन उन्हें जबरदस्ती खाना खिलाती थीं।

स्टीव जॉब्स का मन विचलित रहने लगा था। उन्हें अब कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। उनका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था। चूंकि उन्हें एप्पल कंपनी से बहुत प्यार था और एप्पल कंपनी को वे अपने घर की तरह मानते थे, इसलिए कंपनी से छुट्टी पर जाना उन्हें ऐसा लगता था जैसे वे अपना घर छोड़कर कहीं दूर जा रहे हो।

जनवरी, 2011 में स्टीव जॉब्स ने कंपनी बोर्ड को टेलीफोन के माध्यम से सूचित किया कि उन्हें तीन मिनट का अवकाश चाहिए। उन्होंने भविष्य के बारे में कंपनी को लेकर बातचीत की। उन्होंने इस बारे में भी बातचीत की कि यदि उन्हें कुछ हो जाता है तो फिर ऐसी स्थिति में लंबी या थोड़ी अवधि के लिए कौन स्थिति को संभालेगा। इस बारे में उन्होंने बोर्ड को टिम कुक का नाम सुझाया। उनकी सलाह पर आखिरकार टिम कुक को कंपनी के दैनिक कार्यों की जिम्मेदारी सौंप दी गई।

कुछ दिनों के बाद स्टीव जॉब्स ने चलने-फिरने में परेशानी महसूस की। उन्हें दिखाई देने लगा था कि अब शायद ही वे कभी एप्पल कंपनी में जा सकेंगे। उनका इलाज अभी भी जारी था। डॉक्टर ने उनकी चिकित्सा के तीसरे चरण की की घोषणा कर दी थी। इसी बीच उनकी पुत्री लिजा उनसे मिलने के लिए आई। पिता-पुत्री के बीच काफी देर तक बातें होती रहीं। हालांकि दोनों के बीच कुछ बातों को लेकर पहले से मतभेद थे, लेकिन इस मुलाकात के दौरान दोनों के मतभेद दूर हो गए। इसी दौरान गूगल के सहसंस्थापक मिस्टर लैरीवेज ने भी उनसे मुलाकात की। उनके अलावा बिल गेट्स भी उनसे मिलने के लिए आए। उनके बीच काफी देर तक बातें हुईं।

जब से उनकी चिकित्सा के तीसरे चरण की घोषणा हुई थी, तभी से विश्व की लगभग कई जानी-मानी हस्तियों ने उनसे मुलाकात की।

स्टीव जॉब्स हमेशा कुछ-न-कुछ नया करने के बारे में सोचते रहते थे और अपनी गंभीर बीमारी की हालत में भी वे पुस्तक प्रकाशन उद्योग के लिए कुछ नया करने का विचार कर रहे थे। इससे पहले वे कुछ करते कि जुलाई, 2011 तक कैंसर ने लगभग उनके पूरी शरीर को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। अब वे दर्द के कारण सो भी नहीं पा रहे थे। डॉक्टरों की दवाई ने भी अपना असर दिखाना बंद कर दिया था।

स्टीव जॉब्स ने अच्छी तरह समझ लिया था कि अब वे एप्पल के लिए सक्रिय रूप से कार्य नहीं कर सकेंगे। ऐसे में उन्होंने सोचा कि उन्हें अभी भी समय रहते अपने सीईओ के पद से त्यागपत्र दे देना चाहिए। इस संबंध में उन्होंने अपनी पत्नी और अपने कुछ करीबियों से बातचीत की। उन्होंने अपना इस्तीफा देने का उचित अवसर बोर्ड की होने वाली मीटिंग को समझा। उनमें चलने-फिरने की क्षमता नहीं थी, इसलिए वे बोर्ड की मीटिंग में व्हील चेयर पर चलकर आए।

स्टीव जॉब्स ने बोर्ड की कार्यवाही को बड□ी गौर से देखा व सुना। सबकी बातें सुनने के बाद उन्होंने धीमे स्वर में कहा कि उन्हें कुछ कहना है। इस दौरान टिम कुक कंपनी के प्रबंधकों सहित बाहर चले गए और जब कमरे में केवल बाहरी निदेशक रह गए, तब उन्होंने अपने एक पत्र का नमूना प्रस्तुत करते हुए कहा कि मेरा हमेशा से यही कहना रहा है कि जब मैं अपेक्षानुसार काम करने में असफल रहूं और अपनी सीईओ की जिम्मेदारी अच्छी तरह न निभा सकूं तो इस बारे में सबसे पहले मैं आप लोगों को सूचित करूं। अत: मुझे लगता है कि वह दिन आ गया है।

स्टीव जॉब्स ने बोर्ड अधिकारियों के सामने जो पत्र प्रस्तुत किया था, उसे एक अधिकारी ने पढ□ा। इसमें लिखा था मेरे (स्टीव जॉब्स के) बाद सीईओ के पद पर टिम कुक को नियुक्त किया जाए। मैं बोर्ड के चेयरमैन के रूप में कार्य करता रहूंगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि एप्पल कंपनी आगे भी नए-नए उत्पादों को बनाने की ओर अपना ध्यान लगाएगी और अपेक्षित सफलता अर्जित करेगी। उनकी बातें सुनकर कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया। किसी से कुछ भी बोलते नहीं बन रहा था। अंतत: अलगोरे, ड्रिक्सलेर, लेविंसन और कैंपवेल ने उनकी सराहना की। सभी की आखों में आंसू छलक आए थे। किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि वे इस तरह से अपना त्यागपत्र देंगे। अंतत: वास्तविकता उनके सामने थी।

एप्पल के उत्पादों की समीक्षा करने की स्टीव जॉब्स की प्रबल इच्छा हुई। कुछ साथियों के सहयोग से उन्होंने उसी दिन यानी 24 अगस्त, 2011 को एप्पल के उत्पादों की समीक्षा की। इसके बाद वे अपने मित्र जॉर्ज रिले के साथ वापस घर लौट आए। घर लौटने के बाद कुछ देर तक उन्होंने रिले से बातचीत की, फिर रिले भी अपने घर की ओर चले गए। स्टीव जॉब्स को कुछ थकावट-सी महसूस हो रही थी, इसलिए उन्होंने थोड□ी देर आराम करना उचित समझा।

स्टीव जॉब्स ने काफी समय पहले ही महसूस कर लिया था कि उनका अंतिम समय निकट

है। उनका वजन भी सामान्य से कम रह गया था और चलने-फिरने तथा बोलने में भी उन्हें परेशानी होने लगी थी। अब वे कमरे में बैठे रहते और टेलीविजन देखते रहते।

आखिरकार वह दिन आ ही गया, जहां एक-न-एक दिन प्रत्येक मनुष्य को जाना है। 5 अक्टूबर, 2011 को विश्व में तकनीक के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति लाने वाले तथा एप्पल कंपनी के जनक स्टीव जॉब्स अनंत में खो गए। यह दिन संपूर्ण विश्व के लिए बड□ शोक का दिन था। आज भले ही स्टीव जॉब्स हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा बनाए गए उत्पाद हमेशा हमें उनकी याद दिलाते रहेंगे।

15

विश्व ने खो दिया एक महान स्वप्नदर्शी

''कोई भी मरना नहीं चाहता है। यहां तक कि जो लोग स्वर्ग भी जाते हैं, वे भी वहां जाने के लिए मरना नहीं चाहते हैं, लेकिन मृत्यु ही वह गंतव्य है, जहां हम सबको जाना है। कोई भी इससे बच नहीं सकता।''

–स्टीव जॉब्स
सहसंस्थापक, एप्पल

उद्योग जगत ने एक महान स्वप्नदर्शी की विश्व विदाई पर गहन संवेदनाएं व्यक्त कीं। उद्योग जगत की तमाम हस्तियों ने अपने-अपने ढंग से स्टीव जॉब्स के परलोक गमन पर श्रद्धांजलियां दीं। प्रमुख हिंदी दैनिक 'नई दुनिया' ने भारतीय उद्योगपतियों की शोक-संवेदनाओं को प्रकट करते हुए लिखा–

"भारतीय उद्योग जगत ने गुरुवार 6 अक्टूबर को टेक्नोलॉजी क्षेत्र के आइकॉन स्टीव जॉब्स की मृत्यु पर शोक प्रकट किया और कहा कि उन्होंने दुनिया को रूढि□वाद और विचारों से परे असंख्य उत्पाद दिए हैं। उद्योगपति रतन टाटा ने अपने बयान में जॉब्स को आधुनिक युग का सबसे महान आइकॉन होने का दर्जा देते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में एप्पल के उत्पाद का प्रभाव आईटी क्षेत्र पर जैसा रहा, वैसा किसी अन्य कंपनी का नहीं रहा। अमेरिका स्थिति ग्लोबल टेक्नोलॉजी की दिग्गज कंपनी एप्पल के सहसंस्थापक जॉब्स 56 वर्ष की आयु में दुनिया से विदा हो गए। जॉब्स पिछले सात साल से अग्नाश्य के कैंसर से जूझ रहे थे।'

टाटा ने कहा, 'एप्पल उत्पाद ने लोगों के जीवन में बदलाव किया, जिससे लोग वॉयरलेस म्यूजिक, विजुअल इमेज डाटा के आदान-प्रदान की सुविधा से रू-ब-रू हो सके।'

एक अन्य शीर्ष भारतीय उद्योगपति आनंद महिंद्रा ने सोशल नेटवर्किंग साइट पर लिखा, 'दुनिया का बिना स्टीव जॉब्स के जगना बहुत मुश्किल है।

महिंद्रा ने आगे लिखा, 'स्टीव, एक ही तरीका है जिससे मैं आपको श्रद्धांजलि दे सकता हूं कि आपकी वजह से मेरे जीवन में बकवास वक्त की कमी हुई और मैं अपनी आंतरिक आवाज की धुन पर नाच उठा।'

यूबी समूह के प्रमुख विजय माल्या ने कहा, 'दुनिया ने सदी के सबसे बड□े प्रवर्तक को खो दिया है।'

आईटी क्षेत्र की बड□ी कंपनी कॉग्निजेंट के वाइस चेयरमैन लक्ष्मी नारायण ने जॉब्स के लिए

कहा, 'विशुद्ध तकनीकी दूरदर्शिता और एक ऐसा उद्योगपति जो समय से आगे की सोच रखता था, विचारों को चुनौती और रूढि□वाद को दूर करते हुए कुछ ही लोगों में से एक थे जॉब्स।'

नारायण ने कहा, 'एक ऐसा व्यक्ति जिसने अकेले ही कंप्यूटर की दुनिया को बदल दिया और पॉकेट उपकरणों के विचार की फिर से पुष्टि की, जॉब्स आने वाली पीढ□ी के लिए प्रेरणा के स्रोत रहेंगे।'

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के सीईओ एन. चंद्रशेखरन ने कहा, 'स्टीव जॉब्स की तरह कोई भी टेक्नोलॉजी को नया आयाम नहीं दे सकता। उन्होंने आइकेनिक मैक्स और पिक्स एनिमेशन से लेकर, आईपॉड का इस्तेमाल करने वाली विभिन्न कंपनियों के बीच हंगामा खड□ा किया।'

आईमैन पटनी के सीईओ गणेश मूर्ति ने कहा, 'वह (स्टीव) एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने तीन कंपनियों को शुरू किया और सभी कंपनियों का बाजार मल्टी डॉलर रहा तथा सभी ने अपने तरीके से दुनिया को बदला है।' मूर्ति ने यह भी कहा, 'यह सिलिकॉन वैली और विश्व के लिए एक दुखद दिन है।'

दुनिया का सबसे सस्ता टैबलेट बनाने वाले डाटाविंड के सीईओ सुनीत सिंह तुली ने कहा, 'यहां एक महान दूरदर्शी ने विदाई ली है, जिसने अपने उपकरणों से सबको आश्चर्यचकित कर दिया।'

स्टीव जॉब्स की असामयिक मृत्यु पर दैनिक जागरण ने उनकी विशिष्ट उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए लिखा–

'उम्दा तकनीक के दम पर लाखों लोगों की दिनचर्या बदल देने वाले स्टीव जॉब्स नहीं रहे। आईपॉड, आईफोन और आईपैड जैसे बेजोड□ उत्पाद दुनिया को इस करिश्माई अमेरिकी उद्यमी की ही देन है। 56 वर्षीय स्टीव विश्व की अग्रणी सॉफ्टवेयर कंपनी एप्पल के सहसंस्थापक थे। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा व भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह समेत दुनिया-भर के राजनेताओं और नामचीन उद्यमियों ने स्टीव को श्रद्धांजलि दी है।

स्टीव लंबे समय से पैंक्रियाज (अग्नाश्य) कैंसर से पीडि□त थे। उन्होंने बुधवार देर रात कैलिफोर्निया के पॉल आल्टो में पत्नी और करीबी परिजनों के बीच अंतिम सांस ली। प्रौद्योगिकी की दुनिया के बेताज बादशाह को 2004 में इस बीमारी का पता चला था। 2009 में उनका एक लिवर (यकृत) भी बदला गया था। उनकी मौत से एक दिन पहले ही एप्पल ने अपना नया आईफोन बाजार में उतारा था। एप्पल ने अपने पूर्व सीईओ को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है, 'स्टीव की प्रतिभा, जुनून और ऊर्जा कंपनी के सैकडों आविष्कारों का आधार बनी, जिनसे हमारा जीवन समृद्ध और बेहतर बना। स्टीव की वजह से दुनिया बेहतर हुई।'

आईपॉड, आईफोन और आईपैड एप्पल जैसे एप्पल के सबसे प्रचलित और प्रतिष्ठित उत्पाद स्टीव की ही दूरदर्शिता और कौशल का परिणाम थे। उनके नेतृत्व में एप्पल ने आईपॉड के जरिये संगीत जगत की नई परिभाषा गढ□ी। आईफोन ने मोबाइल की दुनिया का अंदाज बदला और आईपॉड में मनोरंजन और मीडिया जगत को नए मायने दिए। स्टीव के ही नेतृत्व में अगस्त,

2011 में एप्पल ने कुछ समय के लिए दुनिया की सबसे मूल्यवान कंपनी बनने का तमगा हासिल किया था। तब उसकी बाजार पूंजी 346 अरब डॉलर (करीब 17 लाख 30 हजार करोड□ रुपये) तक जा पहुंची थी।

इस साल जनवरी के बाद से उन्होंने कंपनी के काम-काज से छुट्टी ले रखी थी, लेकिन मार्च में उन्होंने आईपैड का दूसरा संस्करण लांच किया था। जून में वे सैन फ्रांसिस्को में एप्पल डे आई क्लाउड की जानकारी देने दुनिया के सामने आए थे। गत अगस्त में अचानक उन्होंने एप्पल के सीईओ पद से इस्तीफा देकर दुनिया को हैरान कर दिया। उन्होंने टिम कुक को एप्पल की कमान सौंप दी थी।'

यह सच है कि स्टीव जॉब्स को मृत्यु का अहसास बहुत पहले हो गया था, लेकिन वे अपनी मृत्यु की बात जानकर भी भयभीत नहीं हुए। उन्होंने जैसे मृत्यु-भय को जीत लिया था और अपने कम होते जा रहे समय को भरपूर ढंग से जीने का प्रयास कर रहे थे। लगता था, वैसे उन्होंने आने वाली मृत्यु से कई सबक सीख लिये थे। इसी बारे में विचार व्यक्त करते हुए बिमटेक के डायरेक्टर हरिवंश चतुर्वेदी 'हिंदुस्तान' कॉलम में लिखते हैं–

'एप्पल कंपनी के संस्थापक स्टीव जॉब्स के निधन पर जिस तरह की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं, वे बताती हैं कि दुनिया ने उनके जाने से क्या खो दिया है। स्टीव के नेतृत्व में एप्पल ने लगातार नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया। आज एप्पल ने मार्केट कैपिटलाइजेशन के आधार पर अमेरिका की एक्सॉन मोबिल को भी पीछे छोड□कर दुनिया की कंपनियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया है, लेकिन यह सब उनका सही परिचय नहीं है।

असल बात यह है कि ये तमाम सफलताएं एक ऐसे व्यक्ति की हैं, जिसके पास इंजीनियरिंग या किसी भी दूसरे विषय की कोई डिग्री नहीं थी। इसके बावजूद उनका नाम अमेरिका में 300 से अधिक पेटेंट के आविष्कारक या सहआविष्कारक के रूप में दर्ज है। यह एक ऐसे शख्स की कहानी है, जिसके बचपन से जवानी तक का समय काफी उथल-पुथल से भरा था। एक बिनब्याही मां के घर में जन्म, फिर दत्तक पुत्र के रूप में पालन-पोषण, कॉलेज की पढ□ाई को बीच में ही छोड□ देना और हर रोज भोजन जुटाने के लिए उन्हें खासा संघर्ष करना पड□ा। इसी शख्स ने 1997 से 2010 के बीच 13 वर्ष में ही हमारे संगीत सुनने, बात करने, फिल्में देखने और कंप्यूटर पर काम करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया। तकनीक के उत्पाद पहली बार जीवन शैली का हिस्सा बन गए।

स्टीव के पास कोई डिग्री नहीं थी, वह हार्डवेयर इंजीनियरिंग और सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग भी नहीं समझते थे। फिर ऐसा क्या था कि उन्हें डिजिटल युग में इतनी प्रसिद्धि मिली? दरअसल स्टीव ने अपने-आपको टेक्नो नेतृत्व की एक ऐसी शैली में ढाला था, जो अपने इनोवेटिव विचारों को मूर्त रूप देने के लिए सर्वश्रेष्ठ कर्मचारियों की टीम बनाना जानता था। वे अपनी टीम को लगातार प्रेरित, उत्साहित और उत्तेजित करके एक आदर्श उत्पाद विकसित करना जानते थे, जिसमें उत्पाद की डिजाइन पर उनका फैसला ही आखिरी माना जाता था। बीच में काफी समय तक जब वे एप्पल से अलग हुए, तो उन्होंने एक एनीमेशन कंपनी को खरीदकर कलाकारों और

एनीमेटरों की बड़ी टीम तैयार की। इस काम में भी उन्हें खासी सफलता मिली। एनीमेशन फिल्मों में गिनी जाने वाली टॉय स्टोरी के पीछे स्टीव जॉब्स ही सबसे बड़ी प्रेरणा थे। वे इस फिल्म के कार्यकारी निर्माता भी थे।

स्टीव की अद्भुत प्रतिभा की एक खासियत थी कि वे हर चीज से सीखना जानते थे। यहां तक कि उन्होंने इसका भी जिक्र किया था कि वे मौत की आशंका से कैसे सीखते रहे। स्टीव जॉब्स का जीवन-संघर्ष हमें यह बताता है कि विषम-से-विषम परिस्थितियों में भी एक मामूली व्यक्ति दुनिया को कैसे प्रभावित कर सकता है, बशर्ते वह जीवन के हर हालात, यहां तक कि मौत को भी अपना गुरु बना सके।'

16

दुनिया को बदलने वाले महानतम् आविष्कारक

> “जॉब्स दूरदर्शी तकनीशियन थे। वे अमेरिका के महानतम आविष्कारकों में से एक थे। उनमें कुछ अलग सोचने का हौसला था और यह विश्वास करने का साहस था कि वे दुनिया को बदल सकते हैं। वास्तव में ऐसा कर दिखाने की उनमें पर्याप्त प्रतिभा थी।”
>
> –बराक ओबामा
> राष्ट्रपति, संयुक्त राज्य अमेरिका

जॉब्स दिखने में एक बेहद सरल और सामान्य व्यक्ति थे, लेकिन उनके अंदर गहन विलक्षण और असामान्य तकनीकी प्रतिभा विद्यमान थी। अपने इन्हीं महानतम् गुणों से उन्होंने दुनिया को नए विचार, नई तकनीक और नए आविष्कार दिए। प्रख्यात टिप्पणीकार बालेंदु शर्मा दाधीच ‘दैनिक जागरण’ में जॉब्स को विश्व का महानतम् आविष्कारक मानते हुए लिखते हैं–

“दुनिया की शीर्ष आईटी कंपनी एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स ने कई साल तक कैंसर से लड़ने के बाद 5 अक्टूबर को इस दुनिया से विदा ले ली। महज 56 साल की उम्र में स्टीव जॉब्स का चला जाना न सिर्फ सूचना प्रौद्योगिकी जगत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए बड़ा आघात है। वे सिर्फ सपने देखने वाले ही नहीं थे, बल्कि सपनों को सच करके भी दिखाते थे। वे अपने तकनीक, उत्पादों और विचारों के जरिए विश्व में क्रांतिकारी बदलाव लाए। आईटी की दुनिया में तकनीक का सृजन करने वाले तो बहुत हैं, लेकिन उसे सामान्य लोगों के अनुरूप ढालने और खूबसूरत रूप देने वाले बहुत कम। स्टीव जॉब्स एक बहुमुखी प्रतिभा, एक पूर्णतावादी, करिश्माई तकनीकवादी और अद्वितीय रचनाकर्मी थे। तकनीक के संदर्भ में उन्हें एक पूर्ण पुरुष कहना गलत नहीं होगा। उनके देखे 56 बसंतों के दौरान अगर यह विश्व क्रांतिकारी ढंग से बदला गया है तो इसमें खुद स्टीव जॉब्स की भूमिका भी कम नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए बिल्कुल सही कहा कि स्टीव की सफलता के प्रति इससे बड़ी श्रद्धांजलि और क्या होगी कि विश्व के एक बड़े हिस्से को उनके निधन की जानकारी उन्हीं के द्वारा आविष्कृत किसी-न-किसी यंत्र के जरिए मिली।

स्टीव जॉब्स का जीवन अनगिनत पहलुओं, किंवदंतियों और प्रेरक कथाओं का अद्भुत संकलन रहा है। हर मामले में वे दूसरों से अलग, किंतु शीर्ष पर दिखाई दिए हैं। चाहे वह एप्पल से निकलने के बाद का संघर्ष हो या फिर लंबी जद्दोजहद के बाद उसी एप्पल में वापसी और फिर उसे आईटी की महानतम् कंपनी बनाने की उनकी सफलता। माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल

गेट्स के साथ उनकी लंबी प्रतिद्वंद्विता के भी दर्जनों किस्से रहे हैं। दोनों किसी समय साथ-साथ थे, किंतु बाद में अलग-अलग रास्तों पर चले गए। सकारात्मक प्रतिद्वंद्विता की इस प्रेरक दंतकथा के उतार-चढ□ाव तकनीकी विश्व के बाकी दिग्गजों के लिए सीखने के नए अध्याय बनते चले गए, किंतु अंतत: स्टीव एक विजेता के रूप में विदा हुए। कोई डेढ□ साल पहले एप्पल ने माइक्रोसॉफ्ट को पछाड□कर दुनिया की सबसे बड□ी तकनीकी कंपनी बनने का गौरव प्राप्त किया और इसके पीछे यदि किसी एक व्यक्ति की प्रेरणा, लगन, प्रतिभा और उद्यमिता थी तो वे थे स्टीव जॉब्स। स्टीव के योगदान को बिल गेट्स से बेहतर कौन आंक सकता है, जिन्होंने उनके निधन पर कहा कि दुनिया पर किसी एक व्यक्ति द्वारा इतना जबरदस्त प्रभाव डालने की मिसाल दुर्लभ ही है। स्टीव के योगदान का प्रभाव आने वाली पीढि□यां भी महसूस करेंगी। विलक्षण थे स्टीव जॉब्स। वे सामान्य वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, विद्वानों, अन्वेषकों, आविष्कारकों, उद्यमियों में नहीं गिने जा सकते। वे तो ये सब थे, बल्कि इनसे भी कहीं अधिक एक भविष्यद्रष्टा। तकनीक में वे शीर्ष पर पहुंचे, डिजाइन में उनका कोई सानी नहीं था, मार्केटिंग तथा ब्रांडिंग के दिग्गज भी उनकी रणनीतियों का विश्लेषण करने में लगे रहे थे। वे आगे चलने वाले व्यक्ति थे, बाकी लोग बस उनका अनुगमन करते थे। स्टीव इस सहस्त्राब्दि की महान प्रतिभा थे।

स्टीव ने हमेशा बड□े सपने देखे, बड□ी कल्पनाएं कीं। जब कंप्यूटिंग की दुनिया काली स्क्रीनों से जद्दोजहद करती थी, वे मैकिंतोश कंप्यूटरों के माध्यम से ग्राफिकल यूजर इंटरफेस; कंप्यूटर की चित्रात्मक मॉनिटर स्क्रीन ले आए। जब इस मशीन के साथ हमारा संवाद की-बोर्ड तक सिमटा हुआ था, तब उन्होंने माउस को लोकप्रिय बनाकर कंप्यूटिंग को काफी आसान और दोस्ताना बना दिया। कंप्यूटर के सीपीयू टावर का झंझट खत्म कर उसे मॉनीटर के भीतर ही समाहित कर दिया तो सिंगल इलेक्ट्रिक वायर कंप्यूटिंग डिवाइस पेश कर हमें बातों के जंजाल में उलझने से बचाया। इसके बाद आईपॉड (2001), आईफोन (2007) तथा आईपैड (2010) की अपरिमित सफलता हमारे सामने आई। जब दुनिया की-बोर्ड और मोबाइल कीपैड में उलझी थी, तो उन्होंने हमें टचस्क्रीन से परिचित कराया। एप्पल से अनुपस्थिति के वर्षों में उन्होंने एक बहुत बड□ी एनीमेशन ग्राफिक्स कंपनी को जन्म दिया, जिसका नाम था पिक्सर एनीमेशन। यह एक अलग ही क्षेत्र था–एनीमेशन फिल्मों का, जिसमें उनकी सफलता ने डिज्नी जैसे महारथी को भी चिंतित कर दिया था।

स्टीव जॉब्स थे ही ऐसे। अनूठे, अलग, मनमौजी, किंतु परिणाम देने के लिए किसी भी हद तक जाने वाले। भारत से उनका गहरा रिश्ता रहा। स्टीव ने भारत में घूम-घूमकर मानसिक शांति की तलाश का उपक्रम किया। इसी आध्यात्मिक गहराई ने स्टीव के व्यक्तित्व और प्रतिभा को वह गहनता दी होगी, जिसके बल पर न उन्होंने सिर्फ तकनीकी विश्व के दिग्गजों के साथ प्रतिद्वंद्विता में कभी हार नहीं मानी, बल्कि कैंसर जैसे अपराजेय प्रतिद्वंद्वी के सामने भी प्रबल आत्मबल का परिचय दिया।

स्टीव जानते थे कि उनके इलाज की अपनी सीमाएं हैं और तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें

जाना होगा। छह साल पहले उन्होंने कहा था, 'इस बात का अहसास कि जल्दी ही मेरा निधन हो जाएगा, मेरे जीवन का सबसे बड□ा साधन, है जो मुझे बड□ निर्णय करने के लिए प्रेरित करता है। इस अहसास ने मुझे किसी भी चीज को खोने की आशंकाओं के जंजाल से मुक्त करा दिया है। तुम्हारा समय सीमित है, इसलिए इसे किसी और का जीवन जीकर व्यर्थ मत करो। सिर्फ अपनी आत्मा की आवाज पर चलो। यही आध्यात्मिक और आत्मिक गहराई स्टीव जॉब्स को वह ऊंचाई देती है, जिसका पर्याय उनका आदर्श जीवन बना। स्टीवन पॉल जॉब्स अपनी कल्पनाओं, हौसलों, प्रेरणाओं और लक्ष्यों में हम आपका अक्स देख सकते हैं। कम लोग ऐसे होते हैं, जो दुनिया पर वैसी अमिट छाप छोड□कर जाते हैं, जैसे आपने छोड□ी।"

प्रमुख हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' स्टीव जॉब्स को नए दौर का नायक मानता है। 'हिंदुस्तान' अपने संपादकीय में लिखता है—

''स्टीव जॉब्स में वह सब कुछ था, जिसकी हम सूचना प्रौद्योगिकी के किसी असाधारण व्यक्तित्व में कल्पना करते हैं। जॉब्स ने पढ□ाई अधूरी छोड□ दी, उसके बाद कई छोटे-मोटे काम किए, आध्यात्मिकता की खोज में भारत आए, नशीली दवाओं के साथ भी प्रयोग किए। दो दोस्तों के साथ एक गैराज में एक छोटी-सी कंपनी बनाई, जो इस वक्त दुनिया के सबसे बड□ और प्रतिष्ठित उद्योगों में से एक है। सूचना प्रौद्योगिकी में उन्होंने कुछ ऐसे आविष्कार किए कि फिल्मकार स्टीवन स्पीलबर्ग ने अपने शोक संदेश में उन्हें थॉमस अल्वा एडिसन के बाद दुनिया का महानतम् शख्स बताया। स्टीव अमेरिका के बुनियादी आदर्श के प्रतीक थे। एक ऐसा व्यक्ति, जिसने शून्य से शुरुआत की और विशाल साम्राज्य अपनी प्रतिभा और मेहनत से खड□ा किया। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इसी बात का जिक्र करते हुए स्टीव जॉब्स को एक ऐसा व्यक्ति बताया है, जिसने कंप्यूटर को पर्सनल बनाया और इंटरनेट को हमारी जेबों में पहुंचा दिया। भारत में बिताए उनके दिनों से दो बातें उनके व्यक्तित्व के साथ स्थायी रूप से जुड□ गईं, एक तो उनके ढीले-ढाले अनौपचारिक वस्त्र और छोटे-छोटे बाल। वे दुनिया के सर्वाधिक सफल सीईओ में से थे, लेकिन वे सीईओ की आम छवि से अलग थे। स्टीव जॉब्स सूट-बूट में कभी नहीं दिखते और मैनेजमेंट के परंपरागत तरीकों में भी खास यकीन नहीं रखते। इसकी बजाय मार्केट सर्वे वगैरह की जरूरत भांपने में यकीन करते थे। यह तो मानना ही पड□गा कि वे बुनियादी तौर पर आविष्कारक और नए रास्ते खोजने वाले रहे और उनके तौर-तरीके भी लीक से हटकर थे। दरअसल सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ परंपरागत व्यापार और उद्योग की शक्ल भी बदल गई। नए जमाने के साथ नई चुनौतियां और नई संभावनाएं भी सामने आईं, जिनमें सोचने के पुराने तरीके ज्यादा कारगर नहीं थे। इस दौर में भारी पूंजी और विशाल संगठन के बजाय नए विचारों और नई कल्पनाओं का महत्त्व ज्यादा था। इसलिए स्टीव जॉब्स और बिल गेट्स जैसे इस दौर के सफल नायक इतने प्रतिभाशाली थे कि परंपरागत शिक्षा व्यवस्था उन्हें थाम नहीं पाई। इन लोगों ने अपने शुरुआती विद्रोही दौर से अपरंपरागत ढंग से सोचना सीखा। वे मध्यमवर्गीय परिवारों से थे और उनका अकादमिक कैरियर बीच में ही छूट गया था, इसलिए उन्हें तरह-तरह के पापड□ भी बेलने पड□। इस संघर्ष ने उन्हें परिस्थितियों से लड□कर सफल होने का हौसला दिया। जाहिर है, सफल होने पर वे उसी व्यवस्था का हिस्सा भी बने, जिससे

छूटने के लिए उन्होंने विद्रोह किया था, लेकिन नया कुछ करने की उनकी इच्छा और हिम्मत बनी रही। स्टीव जॉब्स 'एप्पल' के संस्थापकों में से थे और उस दौर में उन्होंने एप्पल के पर्सनल कंप्यूटर को घर-घर पहुंचाया। एक वक्त के बाद झगड□ की वजह से वे एप्पल से अलग हो गए। इस दौर में उन्होंने कई काम किए और डिज्नी से भी जुड□। डिज्नी के निवेशक मंडल में वे अंत तक रहे, हालांकि कुछ वक्त बाद वे एप्पल के फिर से मुखिया बने। इस दौर में कंप्यूटर व्यापार को सफल बनाने के अलावा उन्होंने आईपॉड, आईफोन और फिर आईपैड को बाजार में कामयाब बनाया। सिर्फ 56 वर्ष की आयु में उनकी मौत से हमारे दौर ने अपना नायक खो दिया, पर आने वाले वक्त में स्टीव जॉब्स ऐसे उदाहरण की तरह बार-बार याद किए जाएंगे कि दुनिया को बदलने वाली कल्पनाशक्ति और विचार हो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है।"

स्टीव जॉब्स ने तकनीक की नई कसौटियां निर्धारित कीं और समय को अपने पक्ष में करने में कामयाबी पाई। इस बारे में हिंदी दैनिक 'अमर उजाला' में तरुण विजय लिखते हैं–

"दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर में कुछ दिन पहले युवाओं के लिए एक व्याख्यान माला हेतु मुझे बुलाया गया था और वहां उपस्थित विशाल सभा में जब मैंने युवा आदर्श के नाते विवेकानंद के साथ स्टीव जॉब्स का उदाहरण रखा और उनके जीवन की अत्यंत रोमांचक कथा बताई तो उपस्थित काषाय वस्त्रधारी संन्यासी मंडल और बहकती भावना वाले युवा चकित रह गए। स्टीव ने नई तकनीक को इतना भविष्योन्मुखी बनाया कि हमारे सोचने और काम करने के तरीकों में बदलाव आ गया। वे इस सदी के सबसे बड□ नवीन पथ रचयिता थे, जिन्होंने माइक्रोसॉफ्ट, सन, आईबीएम जैसी अरबों डॉलर के निवेश वाली कंपनियों के सामने एप्पल और आईपैड के क्रांतिकारी कंप्यूटर बनाकर ऐसी नई लीक स्थापित कर दी, जिसका अनुसरण सबको करना पड□ा। एक बिन ब्याही मां के बेटे, जिसे एक गोद लेने वाले दंपती ने पाला, जो कभी ग्रेजुएशन नहीं कर सका, जो कभी कोका कोला के खाली केन बेचकर बर्गर खाता था। वे प्यार में विफल रहे, बीस साल की उम्र में एक गैराज में अपने दोस्त के साथ एप्पल कंपनी की नींव डालकर दस साल में अरबपति हो गए, सिर्फ आत्मविश्वास, मेहनत और संकल्पशक्ति के बल पर। वे कर्म के बल पर नियति को बदलने में विश्वास रखते थे।

12 जून, 2005 को स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में उनका भाषण विश्व-भर में हर विद्यालय में प्रेरक पाठ के नाते पढ□ाए जाने योग्य है। अपने भाषण में उन्होंने माना कि मृत्यु को उन्होंने जीवन के बड□ कार्य शीघ्र करने का सबसे बड□ा उपकरण बनाया। उन्होंने कहा, 'यही (मृत्यु) वह गंतव्य है, जो हममें से सबका साझा है। समय सीमित है, व्यर्थ में दूसरों का समय कभी खराब मत करो, इसलिए जो करना है, उसमें आलस मत करो।'

बीस साल की उम्र में उन्होंने जिस एप्पल कंपनी की स्थापना की थी, वह अगले दस साल में दो अरब डॉलर वाली कंपनी बन गई। उसमें चार हजार इंजीनियर काम करते थे, लेकिन उनके विचार इतने भविष्योन्मुखी और लीक से हटकर होते थे कि तीस साल की उम्र में उनकी ही कंपनी ने स्टीव जाब्स को निकाल दिया। उन्हें सार्वजनिक अपमान और घोर विफलता का दंश सहना पड□ा, लेकिन स्टीव ने कहा, 'सदा मृत्यु को याद रखो और ध्यान रहे कि तुम्हारे पास

समय कम है। जो तुम्हारा अपमान कर रहे हैं, उनकी ओर ध्यान दिए बिना अपने श्रेष्ठ कर्म को करते रहो, एक दिन दुनिया झुक जाएगी।"

मित्रों की मदद से उन्होंने नेक्स्ट और पिक्सर कंपनियां बनाईं। इस बीच उनका प्रेम विवाह हो गया और कालांतर में जब दुनिया ने स्टीव के नवीन रोमांचक विचारों का लोहा माना तो उनकी पुरानी कंपनी एप्पल को उन्हें वापस बुलाना पड़ा। स्टीव कहते थे, जिंदगी में तब तक काम करते जाओ, जब तक तुम कामयाबी न प्राप्त कर लो; जो तुम्हारा सपना है। जब स्टीव सत्रह साल के थे तो एक स्थान पर उन्होंने लिखा पाया, हर दिन सुबह शीशे के सामने खड़े होकर सोचें, आज तुम्हारा अंतिम दिन है, फिर तय करो, आज जो तुम करने जा रहे हो–क्या वह इस अंतिम दिन के लिए जरूरी है? बस, तुमको सिर्फ वही करने की आदत लग जाएगी, जो तुम्हारी जिंदगी के लिए सबसे जरूरी होगा। तुम्हारे मन से अहंकार, विफलता का डर, दूसरों की अपेक्षाओं का दबाव, सब खत्म हो जाएगा। डॉक्टरों ने 2004 में बताया कि उन्हें कैंसर हो गया है और वे चार या पांच महीने जिएंगे, पर अपने संकल्प के बल पर वे छह साल और जिए। जब उन्होंने आईफोन और आईपैड एक तथा दो बनाए तो दुनिया सब कुछ छोड़कर उधर लपक पड़ी। सिर्फ एक माह में ढाई करोड़ आईपैड बिक गए। आईफोन प्रथम और आईपैड प्रथम के लिए अमेरिका, जापान, ब्रिटेन में बिक्री की पहली रात से लोग कंबल ले-लेकर आईपैड दुकानों के आगे लाइन लगाए रहे, ताकि उन्हें निराशा न झेलनी पड़े। सिर्फ पहले तीन महीनों में पांच करोड़ ग्राहक एप्पल की दुकानों में आए और एप्पल पचास अरब डॉलर वाली महंगी कंपनी बन गई। आईपैड और आई ट्यून ने संगीत को सुनने, सुनाने और संग्रह करने के तरीकों को ही बदल दिया। फरवरी, 2011 में ही आई ट्यून्स पर दस अरबवें गीत को डाउनलोड किया गया तो स्टीव के इस आविष्कार के क्रांतिकारी रूप का तनिक अहसास हुआ। फार्च्यून पत्रिका ने उनको 2009 में दशाब्दी का उद्यमी घोषित करते हुए कहा था कि स्टीव को इतिहास किसी भी बात की परवाह किए बिना नवीन अवसरों का पीछा करने वाले व्यक्ति के नाते याद करेगा। मैकिनतोश कंप्यूटर बनाकर स्टीव ने माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स को भी एप्पल का अनुसरण और नकल करने पर विवश कर दिया था।

स्टीव आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे और हिंदू धर्म के विचारों से भी प्रभावित थे। भारत में वृंदावन के पास नीम करोरी बाबा के आश्रम में भी उन्होंने समय बिताया और कर्म सिद्धांत का अध्ययन भी किया, पर अंतत: वे पुरुषार्थ और आत्मविश्वास का ही सर्वश्रेष्ठ प्रतीक बने।

स्टीव जॉब्स हमारे समय के महत्त्वपूर्ण परिवर्तनकारी होने के नाते याद किए जाएंगे, जिनकी नवीन सोच ने दुनिया की सोच बदली और जिनके उत्पादन का इस्तेमाल करना इस पृथ्वी के कोने-कोने में लोगों को समान रूप से एक गर्व की अनुभूति करवाता है। एक अत्यंत सामान्य स्थिति से उठकर केवल अपनी क्षमता के बल पर व्यक्ति स्वयं शिखर बन सकता है– यह स्टीव का सबसे बड़ा संदेश कहा जाएगा।"

स्टीव जॉब्स के मन में जो विचार उठा, उसने जो धारणा बनाई और परिणामस्वरूप जो तकनीक उभरकर सामने आई, उसे मंजिल तक पहुंचाने के हुनर में उन्हें महारत हासिल थी। वे

एक-एक बेशकीमती क्षण को अंतिम परिणति तक पहुंचाने के लिए जी-जान लड□ा देते थे। यही उनकी सफलता का राज था, जिसे उन्होंने समय-समय पर अनेक बार अपने उद्‌गारों में स्पष्ट किया था। उन्होंने जीतने और कामयाब होने की भूख को कभी मिटने नहीं दिया, बल्कि उसे बढ□ाते ही चले गए। इस बारे में विवेक ध्यानी 'अमर उजाला' में लिखते हैं–

"एप्पल के फाउंडर स्टीव जॉब्स ने खुद अपनी नजरों से यह दुनिया देखी और दुनिया उनकी तरह बन जाने का सपना देखती रही। महज 56 साल की उम्र में इस दुनिया को अलविदा कहने वाले स्टीव ने तकनीक की दुनिया को ही बदलकर रख दिया। उन्होंने इंटरनेट को आईपैड और आईफोन के जरिये दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का फार्मूला दे दिया।

2004 में पैंक्रियाज के कैंसर से जूझ रहे स्टीव ने जब 2009 में लीवर ट्रांसप्लांट के लिए छुट्टी ली तो कंपनी के शेयर में भारी गिरावट आ गई, लेकिन स्टीव ने लीवर ट्रांसप्लांट के बाद जब दोबारा से पारी संभाली तो उन्होंने कंपनी को दुनिया की नंबर एक कंपनी बना दिया। स्टीव जॉब्स की जिंदगी में उतार-चढ□ाव सदा लगे रहे। पिछले चार साल में आईफोन और आईपैड से पूरी दुनिया पर छा जाने वाले एप्पल का दिल, दिमाग और आत्मा स्टीव जॉब्स ही रहे हैं। बचपन से ही जॉब्स का मन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की तरफ आकर्षित होने लगा था। महज 12 साल की उम्र में उन्हें पहला कंप्यूटर देखने का मौका मिला और वे उससे काफी प्रभावित हुए और उन्होंने ठान लिया कि अगर काम करेंगे तो कंप्यूटर की दुनिया में । हाईस्कूल के दौरान स्टीव ह्यूवेट पैकर्ड के प्लांट में लेक्चर में भाग लेने जाया करते थे। इसी दौरान एक बार उन्होंने कंपनी के प्रेसीडेंट विलियम ह्यूवेट से कहा कि उन्हें अपने क्लास प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए कुछ कल-पुर्जे चाहिए। ह्यूवेट स्टीव से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पुर्जे देने के साथ ही उन्हें ह्यूवेट पैकर्ड में समर इंटर्नशिप करने की पेशकश दे डाली। सिर्फ एक सेमेस्टर के बाद कॉलेज छोड□ देने वाले स्टीव ने बचपन गैराज में गुजारा, मुसीबतें देखीं, पढ□ाई छोड□नी पड□ी, लेकिन हमेशा अपने हिस्से के आकाश को ढूंढ□ते रहे और एक बार सफल हुए तो कभी पीछे मुड□कर नहीं देखा। बीमार पड□े तो भी दुनिया उनके लिए झुकती रही। 1975 में वे होमब्रिड कंप्यूटर क्लब से जुड□े गए। 1976 में अपने साथी स्टीव वोजनियाक के साथ मिलकर एप्पल कंप्यूटर की नींव रखी और इसके बाद स्टीव आगे ही बढ□ते चले गए। असली कामयाबी 10 साल बाद मिली, जब एप्पल ने आईफोन बनाकर मोबाइल फोन की दुनिया ही बदल डाली।"

17

तीन प्रश्न–तीन सुझाव

सुप्रसिद्ध लेखक विलियम सी. टेलर ने स्टीव जॉब्स के जीवनवृत्त का गहन विश्लेषण किया। उन्होंने जॉब्स की सफलता के संदर्भ में तीन प्रश्न उठाएं और तीन सुझाव दिए, जो उनके अनुसार इस प्रकार हैं–

स्टीव जॉब्स ने जो हासिल किया, हममें से बहुत कम लोगों को उसका सौवां हासिल भी नहीं मिल पाता है। हम सभी को उनकी उपलब्धियों पर विचार करना चाहिए और खुद से सवाल पूछने चाहिए कि क्या हम अपने उद्योग, ग्राहकों और सहकर्मियों के लिए कुछ सकारात्मक कर पाते हैं या नहीं? मैं आपको इन तीन प्रश्नों का सुझाव दूंगा। इन सवालों के जवाब यह बताएंगे कि आज की दुनिया में असरदार नेतृत्व का क्या मतलब होता है।

- महान शख्सियतें आपके साथ क्यों काम करना चाहेंगी? स्टीव के पास हमेशा अत्यंत प्रभावशाली डिजाइनरों, रिटेलरों और इंजीनियरों की फौज रही, क्योंकि वे समझते थे कि बुद्धिमान व्यक्ति सिर्फ धन या हैसियत से प्रेरित नहीं होते हैं। ऐसे लोग किसी चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी को अंजाम देना चाहते हैं। वे किसी ऐसी परियोजना का हिस्सा बनना चाहते हैं, जो उनसे बड□ी हो। जॉब्स का मुहावरा इस्तेमाल करें तो ऐसे लोग 'पागलपन की हद तक महान' बनना चाहते हैं।
- क्या आप में महान व्यक्ति को पहचानने की क्षमता है? उपयुक्त लोगों की टीम का नेतृत्व करना बहुत आसान होता है। मुझे यह सोचकर हैरानी होती है कि किसी टीम या डिपार्टमेंट का मुखिया सही लोगों को चुनने में कितनी ऊर्जा और कितना समय खर्च करता है। प्रतिभा के आकलन में उपलब्धियों का उतना ही महत्त्व होता है जितना चरित्र का।
- महान लोगों को कैसे खोजें? सबसे प्रतिभाशाली लोग आम तौर पर वही काम करते हैं, जो उन्हें पसंद हैं। ऐसे लोगों के साथ काम करते हैं, जिनके साथ काम करने में आनंद आता है। ऐसी परियोजनाओं पर काम करते हैं, जो चुनौतीपूर्ण होती हैं।

18

जॉब्स की जिंदगी के पांच पंच

पांच उपलब्धियां :

- 1976 में अप्रैल फूल के दिन अपने पिता पॉल जॉब्स के गैराज से एप्पल कंपनी की शुरुआत की।
- 1997 में लगभग 11 साल के लंबे अंतराल के बाद बतौर सलाहकार के रूप में एप्पल कंपनी में वापसी की।
- 2000 में कंपनी के सीईओ बने।
- फरवरी, 2010 में कपनी की कुल संपत्ति 75.18 अरब डॉलर आंकी गई।
- स्टीव जॉब्स की निजी संम्पत्ति 8.3 अरब डॉलर के आस-पास आंकी गई।

पांच भूमिकाएं :

- आधुनिक मैक ऑपरेटिंग सिस्टम और आईपॉड को लांच करने का मुख्य श्रेय स्टीव जॉब्स को ही जाता है।
- 1998 में स्टीव जॉब्स ने आईमैक नामक नीला और सफेद कंप्यूटर लांच किया।
- 2005 में स्टीव जॉब्स ने वीडियो प्रसारित करने वाला एप्पल का आईपॉड लांच किया।
- 2007 में स्टीव जॉब्स ने दुनिया के सामने एप्पल का पहला स्मार्टफोन आईफोन प्रस्तुत किया।
- 2009 में स्टीव जॉब्स ने अपने नवीन प्रयोगों के चलते एप्पल का आईपैड लांच किया।

पांच सुझाव:

- स्टीव जॉब्स हमेशा कहते थे कि उनके लिए बिजनेस का अर्थ 'द बिटल्स' है।
- दुनिया में सबसे अमीर व्यक्ति वह है जो रात में सोने से पहले यह अहसास करे कि आज

उसने दिन-भर में क्या कुछ विशेष किया।

- डिजाइन के बारे में स्टीव जॉब्स का कहना था कि डिजाइन का अर्थ यह नहीं कि वह कैसा दिखाई देता है, बल्कि यह है कि वह काम कैसे करता है।
- किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि वह अपनी अंतरात्मा की आवाज सुने।
- स्टीव जाब्स की हमेशा ही यह ख्वाहिश रहती कि वह इस ब्रह्मांड में एक घंटी लगाएं।

* * *